www.kahaar.in

ISSN (p): 2394-3912
ISSN (e): 2395-9369
त्रैमासिक 4(3), जुलाई–सितम्बर, 2017
मूल्य : 25 रूपये

कहार

जन विज्ञान की बहुभाषाई पत्रिका

KAHAAR

A multilingual magazine for common people

हैरान आँखें, ©सतीश कुमार, रोहतक

प्रकाशक
प्रोफेसर एच्. एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसाइटी, लखनऊ
(www.phssfoundation.org)
सह–प्रकाशक
पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति, लखनऊ
(www.prithvipur.org)
विवेकानन्द युवा कल्याण केन्द्र, पडरौना (कुशीनगर)
सोसायटी फार इन्वायरमेन्ट एण्ड पब्लिक हेल्थ (सेफ), लखनऊ

Prof. H. S.Srivastava Foundation for Science & Society, Lucknow
PHSS Foundation Awards for Year 2016-17

A meeting of the selection Committee was held on 05th July, 2017 at Biotech Park, Jankipuram, Lucknow to decide the Awardees of PHSS Foundation Awards (2016-17). The following nominees were unanimously selected for different PHSS Foundation Awards of 2016-17.

Name of the Award	Name of the Awardees
PHSS Foundation Life Time Achievement Award	**Prof. Alok Dhawan,** Director, CSIR, Indian Institute of Toxicology Research, Lucknow (Uttar Pradesh)
PHSS Foundation Award for Social Contribution	**Prof. Ram Kathin Singh**, Retired Professor & Director, Nand Educational Foundation for Rural Development, Aliganj, Lucknow (Uttar Pradesh)
PHSS Foundation Award For Science Communication **(a) Science writing for common people** **(b) Science Journalism**	(a) **Dr. Om Prabhat Agrawal**, Retired Professor, M. D University, Rohtak (Haryana) (b) **Sri. Q. Ashoka Chakkaravarthy**, Assistant. Professor. St Joseph's College, Tiruchy-2 (Tamil Nadu)
PHSS Foundation Young Scientist Award	**Dr. Packirisamy Gopinath**, Associate Professor, Indian Institute of Technology, Roorkee (Uttarakhand)
PHSS Foundation Young Women Leadership Award	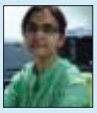 **Dr. Seema Mishra**, DST-SERB Young Scientist (Fast Track), CSIR-National Botanical Research Institute, Lucknow (Uttar Pradesh)

Experts participated for finalization of PHSS Foundation Awards 2016-17

First Row (L to R): Prof. S. R. Singh, Former V.C, R.A. University, Samastipur, **Prof. P.K. Seth**, Former Director, I.I.T.R, Lucknow & President-PHSS Foundation, Lucknow, ***Prof. V.P. Kamboj,** Former Director, CDRI, Lucknow**, Prof. P.V.Sane**, Former Director, NBRI, Lucknow, **Prof. P.K. Tandon,** Former VC, NEHU, Shilong & CEO, Biotech Park, Lucknow, **Prof. U.N.Dwivedi**, Pro-V.C, Lucknow University, Lucknow,
Second Row (L to R): Dr. Renu Tripathi, Sr. Principal Scientist, CDRI, Lucknow, **Prof. R.S.Dwivedi**, Former Director, NRCG (ICAR) Junagadh (Gujarat) & Director, PHSS Foundation, Lucknow, **Prof. Veena Tandon**, Professor (Retd.), NEHU, Shillong, NASI Senior Scientist Platinum Jubilee Fellow & Distinguished Scientist, Biotech Park, Lucknow, **Prof. A.N.Mukhopadhyay**, Former V.C, Assam Agricultural University, Assam, **Dr. Sudhir Mishra** (not in group photo), Editor, Navbharat Times, Lucknow, **Prof. Rana Pratap Singh**, Dean Academic Affairs,, B.B.Ambedkar University, Lucknow & Secretary, PHSS Foundation, Lucknow

*** Special guests for photo session**

प्रधान संपादक
प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, लखनऊ
सम्पादक
डॉ. राम स्नेही द्विवेदी, लखनऊ
सह-सम्पादक
डॉ. सीमा मिश्रा, लखनऊ
डॉ. संजय द्विवेदी, लखनऊ
सम्पादक मण्डल
प्रोफेसर रिपु सूदन सिंह, लखनऊ
डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, बालापार, गोरखपुर
प्रोफेसर श्रीभगवान सिंह, भागलपुर
डॉ. अर्चना (सेंगर) सिंह, न्यूजर्सी
डॉ. रामचेत चौधरी, गोरखपुर
प्रोफेसर चन्द्र भूषण झा, आयुर्वेदाचार्य, वाराणसी
डॉ. चतुर्भुज सिंह सेंगर, पडरौना
प्रोफेसर आरिफ अली, नई दिल्ली
प्रोफेसर गोविन्द पाण्डेय, लखनऊ
डॉ. वेंकटेश दत्ता, लखनऊ
डॉ. सरफराज अहमद, कानपुर
श्री कार्तिक कोटा, हैदराबाद
सलाहकार मण्डल
प्रोफेसर प्रहलाद के. सेठ, लखनऊ
प्रोफेसर प्रफुल्ल वी. साने, जलगाँव
प्रोफसर रणवीर चन्द्र सोबती, लखनऊ
प्रोफेसर राम कठिन सिंह, लखनऊ
श्री राम प्रसाद मणि त्रिपाठी, गोरखपुर
प्रोफेसर शशि भूषण अग्रवाल, वाराणसी
प्रोफेसर देवेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ
प्रोफेसर रामदेव शुक्ल, गोरखपुर
प्रोफेसर ओम प्रभात अग्रवाल, रोहतक
डॉ. एस.सी. शर्मा, लखनऊ
डॉ. रूद्रदेव त्रिपाठी, लखनऊ
प्रोफेसर रणवीर दहिया, रोहतक
प्रोफेसर राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, वाराणसी
प्रोफेसर एन. रघुराम, दिल्ली
डॉ. सुधा वशिष्ठ, लखनऊ
डॉ. सिराज वजीह, गोरखपुर
प्रोफेसर हरीश आर्य, रोहतक
श्री शशि शेखर सिंह, लखनऊ
डॉ. सुमन कुमार सिन्हा, गोरखपुर
प्रोफेसर मालविका श्रीवास्तव, गोरखपुर
डॉ. निहारिका शंकर, नोएडा
श्रीमती शीला सिंह, लखनऊ
सुश्री दीपा कुमारी, रोहतक
किसान श्री हरगोविन्द मिश्र, धर्मपुर पर्वत
श्री उप्रेन्द्र प्रताप राव, दुदही
इं. तरूण सेंगर, गिलबर्ट, अमेरिका
डॉ. पूनम सेंगर, चण्डीगढ़
डॉ. कुलदीप बौद्ध, राँची
डॉ. संजीव कुमार, लखनऊ
श्री सुनीत कुमार यादव, मऊ

आवरण फोटो
श्री सतीश कुमार, रोहतक
प्रबन्ध-सम्पादक
डॉ. प्रदीप तिवारी, लखनऊ
श्री अंचल जैन, लखनऊ
तकनीकी सहयोग
श्री रंजीत शर्मा, लखनऊ
श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ

संपादकीय पता
04, पहली मंजिल, एल्डिको एक्सप्रेस प्लाजा, शहीद पथ उतरेटिया, रायबरेली रोड, लखनऊ-226 025 भारत
ई-मेल : kahaarmagazine@gmail.com/ ccseditor@gmail.com
वेबसाइट : www.kahaar.in
https://www.facebook.com/kahaarmagazine

सहयोग राशि	व्यक्तिगत	संस्थागत
एक प्रति	: 25 रुपये	50 रुपये
वार्षिक	: 100 रुपये	200 रुपये
त्रैवार्षिक	: 300 रुपये	600 रुपये

सहयोग राशि 'प्रोफेसर एच्.एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसायटी, लखनऊ' के नाम भेजें। बैंक खाते विवरण के लिए ईमेल लिखें : phssoffice@gmail.com

घोषणा

लेखकों के विचार से 'कहार' की टीम का सहमत होना जरूरी नहीं। किसी रचना में उल्लेखित तथ्यात्मक भूल के लिए 'कहार' की टीम जिम्मेदार नहीं होगी।

लेखकों के लिए

वैचारिक रचनाओं में आवश्यक संदर्भ भी दें एवं इन संदर्भों का विस्तार रचना के अन्त में प्रस्तुत करें। अंग्रेजी रचनाओं का हिन्दी तथा हिन्दी सहित अन्य भाषाओं की रचनाओं का अंग्रेजी या हिन्दी में सारांश दें। मौलिक रचनाओं के साथ रचना के स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने का प्रमाणपत्र दें। रचनाओं के साथ लेखक अपना पूरा पता, ई-मेल, English Abstract (50-60 words) और पासपोर्ट साइज फोटो भी भेंजे। रचनाऐं English में Times New Roman (12 Point) तथा हिन्दी के लिए कृति देव 10 में MS-Word में टाइप करें। तस्वीरें, चित्र, रेखाचित्र आदि TIF/JPG/PDF Format में भेंजे।

विज्ञापन के लिए

विज्ञापन की विषय वस्तु के साथ ही भुगतान 'प्रोफेसर एच्.एस.श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसायटी, लखनऊ' के नाम मल्टीसिटी चेक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादकीय पते पर भेजें।

रुपये 6,000/- पूरा पृष्ठ रुपये 4,000/- आधा पृष्ठ (सादा)
रुपये 10,000/- पूरा पृष्ठ (रंगीन) रुपये 6,000/- आधा पृष्ठ (रंगीन)

Advertisement Tariff

Please send payment in form of DD or multicity cheques in favour of "Professor H.S. Srivastava Foundation for Science and Society" Payable at Lucknow alongwith subscription forms or Advertisement draft.
Rs. 6000/- Full Page (B/W) Rs. 4000/- Half Page (B/W)
Rs. 10,000/- Full Page (Color) Rs. 6,000/- Half Page (Color)

'कहार' एक पारम्परिक मनुष्य वाहक के लिए प्राचीन देशज सम्बोधन है। 'कहार' की तरह ही यह पत्रिका जानकारियों एवं लोगों के बीच सेतु बनाने की कोशिश कर रही है।

विषय–सूची

आलेख / कविता / रिपोर्ट

कार्यकारी तंत्र की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हादसे	राणा प्रताप सिंह	01
The Accidents questioning Governance Systems	Rana Pratap Singh	02
आपके पत्र		03
मस्तिष्क ज्वार की महामारी	नरेन्द्र मिश्र	04
अवधी लोक गीत	अज्ञात	05
औषधीय फसल केवाँच	सुरेश कुमार शर्मा, एवं श्रीकृष्ण तिवारी	06
सहजन (ड्रमस्टिक): एक बहुउपयोग वृक्ष	विनय साहू	08
शून्य जुताई विधि - गेहूं की खेती एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद	शिव बदन मिश्रा, अशोक श्रीवास्तव एवं आर.सी. चौधरी	09
बाँझ धरती (कहानी)	रामकठिन सिंह	11
चलो मिल जुल के, इक पेड़ लगाया जाये (कविता)	शशांक तिवारी	13
भारत में अंग्रेजी प्रसार की असलियत	ओम प्रभात अग्रवाल	14
उस रोज़ दिवाली होती है (कविता)	माननीय अटल बिहारी वाजपेयी	15
दीपावली का पर्व और प्रदूषण	संजय द्विवेदी एवं सीमा मिश्रा	16
तम्बाकू जनित रोग एवं निदान	सूर्यकान्त त्रिपाठी	21
Anuvrat : The LIfe	Amit Kumar Chauhan	23
विकास की गाँधीवादी विचार धारा	सुनील पाण्डेय	24
एक गाँव की कहानी (व्यंग)	आर.सी. चौधरी	25
बारिश की कविताएँ	राम कठिन सिंह	27
Fish Behaviour : A Vital Indicator of Stress in Aquatic Habitat	Abha Mishra and Abhisweta Singh	28
The Whole Purpose of Education is to Turn Mirrors into Windows	Anurakti Shukla	31
Chemical Analysis of a Teacher	Rose Pratima Minj	32
There is a Sunshine in Smile	Rose Pratima Minj	32
श्री मद्भगवत महापुराण एवं मनुस्मृति के कुछ कथानक और अनुकरणीय उपदेश (विज्ञान एवं इतिहास से परे) (संस्कृत)	राम स्नेही द्विवेदी	33
ग्राम देवता - औतार बाबा के पंचायत (धारावाहिक भोजपुरी उपन्यास)	रामदेव शुक्ल	35
धान (भोजपुरी कविता)	बुद्दू काका	38
क्रांतिकारी आंदोलन में भोजपुरी लोक-गीत	प्रशांत कुमार बौद्ध	39
National Solidarity and Poetry of IQBAL (Urdu)	Zia Tasneem and Mohammad Arshad	40
समावेशी विकास की ग्रामीण पहल–रपट	प्रशांत कुमार बौद्ध	39

सम्पादकीय

कार्यकारी तंत्र की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हादसे

गोरखपुर के मेडिकल कॉलेज में एक साथ बड़ी संख्या में बच्चों की मौत, रेलवे की लगातार हो रही दुर्घटनाएँ, बाढ़ की विनाश लीला, स्वाइन फ्लू, कैंसर और एड्स जैसी बीमारियों का फैलाव आदि ऐसे हादसे हैं, जिन्हें सतर्कता एवं वैज्ञानिक कार्य पद्धति से ही रोका जा सकता है। हादसे होते हैं, जाँच होती है, कुछ परिणाम निकलते हैं और फिर सब ठंढे बस्ते में चला जाता है। अगले हादसे तक सब कुछ वैसे ही चलता रहता है। देश के कार्यकारी तंत्र, उसके प्रावधानों, तरीकों, जिम्मेदारियों और परिणामों की जवाबदेही पर चर्चा नहीं होती।

हर स्तर पर भ्रष्टाचार रोकने की बातें होती हैं, पर भ्रष्टाचार नहीं रुकता, क्योंकि इसकी जड़ें इस कार्यकारी तंत्र की कार्यप्रणाली में पूरी तरह पसरी हुई हैं। किसी भी तंत्र में हर व्यक्ति भ्रष्ट एवं लापरवाह नहीं होता। जो काम और जो निर्णय प्राइवेट संस्थाओं में एक व्यक्ति या 2-3 लोग कर लेते हैं, उसके लिए सरकारी तंत्र में चपरासी तथा बाबू से लेकर छोटे बड़े अधिकारियों की एक बड़ी फौज होती है। विकसित देशों में इसी तरह के कार्यों के लिए सरकारी संस्थाओं में भी एक सहायक पर्याप्त होता है। सरकारी पदों पर स्थायित्व, तनख्वाह, अन्य लाभ तथा असफलता की जिम्मेदारी के बोझ से बचे रहने के कारण हर कोई सरकारी सेवाओं की ओर आकर्षित होता है। इंस्पेक्टर राज, बाबुओं एवं अधिकारियों के ताकतवर होने एवं अपार संपत्ति इकट्ठा करने से लेकर नेटवर्किंग आधारित पारदर्शिता की अनेकों बाते होती हैं। परन्तु तंत्र नहीं बदलता। न परिणाम बदलते हैं। देश स्वतन्त्रता के सात दशकों के बाद भी ठगा सा महसूस कर रहा है।

ब्रिटिश नौकरशाही तथा शिक्षा व्यवस्था, शासन की भाषा तथा प्रशासन की प्रणाली राजशाही राजतंत्री व्यवस्था के लिए गढ़ी गयी थी। उस व्यवस्था ने धीरे–धीरे धन और ताकत के गठजोड़ के साथ सामंती मानसिकता भी विकसित कर लिया। सत्ता, पैसा तथा ताकत, शासन प्रशासन के सिर, अँग्रेजी काल में ही चढ़ गया था, उसे बदलने के लिए स्वतंत्र भारत में पर्याप्त प्रयास नहीं हुए।

इस नौकरशाही की निष्ठा और जवाबदेही जनता के प्रति होनी चाहिए, क्योंकि यह गुलाम देश की राजशाही नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की लोकशाही है, परन्तु ऐसा नहीं हो सका है।

सामंती तौर तरीके एवं लालफीताशाही की घुमावदार अंधियारी खोहें, धन एवं ताकत का असीम अहसास, विशिष्ट बने रहने की लाल-नीली बत्तियाँ, धीरे-धीरे लोकशाही के कार्यकारी तंत्र की आदत में शुमार होती गयी हैं।

इन दिनों सुशासन के नाम पर भ्रष्टाचार को रोकना एक महत्वपूर्ण चुनौती माना जा रहा है। गाड़ियों से विशिष्टता की प्रतीक लाल नीली बत्तियाँ भी हटी हैं। फोन, कंप्यूटर और नेटवर्किंग को अपनाए जाने से व्यवस्था की पारदर्शिता काफी हद तक बढ़ी है। सूचना का अधिकार एवं लोकपाल जैसे विधेयकों ने तथा प्रधानमंत्री के शिकायत पोर्टल ने आम जनता में भी विरोध का हौसला जगाया है। कोर्ट और ग्रीन ट्रिब्यूनल ने भी सक्रियता दिखाई है। भ्रष्टाचार विहीन शासन की मंशा का एक माहौल बन रहा है। यह स्वागत योग्य है। परन्तु शासन प्रशासन में ऊपर से नीचे तक कार्यप्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है, जो वैज्ञानिक विधियों, पेशेगत कार्यक्षमता, पारदर्शी जवाबदेही तथा निरन्तर निगरानी व्यवस्था से लैस हो। हमें विकसित देश बनने के लिए शासन प्रशासन की नई प्रणाली विकसित करनी होगी। अन्यथा हम हादसों एवं जनतंत्र की बदहाली को नहीं रोक सकते।

राणा प्रताप सिंह

Editorial

The Accidents Questioning Governance Systems

The death of a large number of children at the medical college of Gorakhpur, increasing accidents of railways, destructions due to flood, incidences of swine-flue, cancers and AIDS etc. are such incidents which could be prevented by alertness and governance having scientific attitude. After accidents, remedies are considered, some results come out and then all goes to the freezing booth. Everything goes silent till the next accident. The responsibilities of the country's executive mechanism, its provisions, methods, responsibilities and consequences are not discussed adequately.

There is talk of curbing corruption at every level, but corruption does not stop, because its roots are fully staged in the working system of this executive mechanism. Not every person is corrupt and careless in any system. For the work and decisions that take one person or 2-3 people in private institutions, there is a large army of peon, babus and officers in government machinery. In the developed countries, a single assistant assists for the entire management even in government institutions for a similar tasks.

Everybody is attracted towards a government job because of the stability of jobs on the government posts, dreadfulness, other benefits and lack of the burden of fixed responsibility for exclusively someone or very few person in case of failure. There are talks and news on Inspector Raj, Lalfitashahi of Babus and Officers and collecting immense property by certain government officials beyond their genuine income sources. Networking based transparency are talked much as remedies but such remedies are unable to fix the wrong happenings. The system does not change and subsequently the results do not change. The country feels cheated even after seven decades of independence.

The bureaucracy and education system of the British, the system of governance and administration was crafted for the Rajshahi Rajtantri system. That system gradually developed the feudal mindset with a combination of wealth and power. The power, power and power of governance governed the head of governance in the British period, and there was not enough effort in independent India to change it.

The allegiance and accountability of this bureaucracy is to the public, because this slave is not a country's monarchy but a democracy of independent India.

Feudal modes, the winding darkness of redfish, the unimaginable feeling of wealth and power, the Red-Blue lights of being specific became among the habit of the executive system of democracy.

This time it is being considered as an important challenge to prevent corruption in the name of good governance. Red blue lights are also eliminated from the system. The adoption of phone, computer and networking has increased the transparency of the system. Bills such as RTI and Lokpal and the Prime Minister's Complaint Portal have stirred up the opposition of corruption in the general public. Courts and the Green Tribunal have also shown activism. An atmosphere of corruption-free rule is appearing slowly but consistently.

It is welcome. But in governance and administration, there is a need for radical change in the methodology from top to bottom, which should follow the scientific methods, professional performance, transparent accountability and continuous monitoring system. To become a developed country, we have to develop a new system of governance. Otherwise we cannot stop the misery of democracy and disasters

Rana Pratap

Rana Pratap Singh

आपकी राय

पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। पत्रिका बहुपयोगी है।

पुनः धन्यवाद।

प्रभा चतुर्वेदी
डी 2/4, पेपर मिल कालोनी,
लखनऊ

पत्रिका किसानों के लिए उपयोगी है। ग्राम विकास के मुद्दे विचार योग्य हैं। हम इस वर्ष से पत्रिका के 50 अतिरिक्त प्रतियाँ अपने कार्यकर्ताओं और किसान समूहों के लिए लेना चाहेंगे।

रामचेत चौधरी
अध्यक्ष, पी.आर.डी.एफ.
शिवपुर, सहबाजगंज, गोरखपुर

पत्रिका मिल रही है। पिछले अंक में उर्दू आलेख "तरजुमानिगारी एक तबसिरा" के लेखक श्री सैय्यद महमूद अहमद हैं। उनका नाम लेख में तो सही है परन्तु विषय सूची में आलेख की शीषर्क 'कौमी यकजाति और इंकबाल की शायरी' तथा लेखक की जगह गलती से मेरा नाम छप गया है। इसे अगले अंक में भूल सुधार के तहत इंगित कर दिया जाये।

सरफराज अहमद
किदवई नगर, कानपुर

'कहार पत्रिका' मिली। यह लोगों के बीच की अनौपचारिक ज्ञान अर्जन की एक जरूरी कड़ी पूरी कर रही है। मेरे द्वारा भेजा गया आवरण चित्र और बेहतर उभर का आता, अगर पत्रिका के कवर का रंग और हल्का रखा जाता। प्रोडक्शन टीम ऐसी गलतियों का ध्यान रखें।

सतीश कुमार
सेक्टर 1, रोहतक
हरियाणा

पूर्व में प्रकाशित अंक में कविता 'मेहा ने आँख क्या चुराई' प्रोफेसर रामकठिन सिंह की पुस्तक 'पोखर के पाँव है बिवाई' पुस्तक से ली गई है, भूलवश इसमें रचनाकार का नाम डा0 के.बी. सुब्बाराम छप गया है। इसे भूल सुधार के रूप में प्रकाशित करें।

सीताराम सिंह
एल्डिको, उद्यान 2, लखनऊ

Many, many thanks for the Issue of KAHAAR, last received. May I convey my happiness regarding the fact of the inclusion of my name in the List of Names of Members of the Editorial Board / Committee – hopefully to last long enough, that is, all through the subsequent Issues ? Well, I, on my part, even otherwise, hope to contribute something, from time to time, to the Periodical. The latest development with respect to my name has only strengthened my resolve.

Among the other pieces in this Issue of KAHAAR, my special attention was drawn to the write-up in Urdu on the art of translation. It may serve as a good eye-opener to those seriously desirous of indulging in the practice of translation and further perfecting the same. Many, many thanks for this one too.

I must say that I wanted to write you this mail much earlier, but could not manage to do so, though I should have, indeed. Anyway, thankfully, I am able to do so at least now, that is, without putting off the same to sometime later.

Trust you all have been keeping fine in your respective ways, all through. My father has been doing fine with his usual share of swings. No, we haven't been out-of-station after our trip to Varanasi, Lucknow, and Kanpur during March-April, though we had planned so a couple of times with respect to a couple of places. We are not hoping for any such thing to take place anytime soon, but, as you know, one never knows !

We do keep in touch with Rohtak, off and on, and presume nearly the same with you. We guess you haven't been to that place in recent times.

We hope to meet you in Hyderabad once again, soon enough.

Do convey our remembrances to all near and dear.

Willingly,

Kartik Kota
Hyderabad

सभी पाठको से अनुरोध है कि अपनी छोटी से टिप्पणी जरूर भेजें। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए आपकी राय बहुत महत्वपूर्ण है।

स्वास्थ्य

मस्तिष्क ज्वर की महामारी

❒ नरेन्द्र मिश्र

Japanese Encephalitis (JE) and Acute Encephalitis Syndrom (AES) are fatal diseases attacking children and teenagers in eastern Uttar Pradesh, which count a high death toll every year. While JE is caused by Mosquito biting, AES is suspected to be due to contaminated drinking water. Though the government is starting some remedial approach towards supply of safe drinking water in the affected areas, the governance system needs to be revisited extensively to decrease the impact of the epidemic. The JE/AES hits every year in the rainy seasons and affects the lower strata of society most prominently. This is probably the reason while locals call it 'Gareebo Ki Beemari'. This article explores some details of these waterborn fatal diseases.

पिछले दिनों आक्सीजन की कमी से गोरखपुर मेडिकल कालेज में मासूम बच्चों की मौत से मस्तिष्क ज्वर का मुद्दा फिर चर्चा में आया है। मस्तिष्क ज्वर से पूर्वांचल की बड़ी आबादी पिछले चार दशकों से बुरी तरह पीड़ित है। मृत्यु का यह ताण्डव हर वर्ष जुलाई से नवम्बर तक आता है और सैकड़ों जिन्दिगियाँ लील जाता है। पिछले एक दशक में ही इसने कुल 5954 जानें ले ली। इस तरह देखे तो औसतन 600 बच्चों की मृत्यु का आंकड़ा प्रतिवर्ष बैठता है।

जापानी इंसेफेलाईटिस मादा मच्छर ''क्यूलेक्स ट्राइटिनिओरिंकस'' के काटने से होता है। यह मच्छर धान के खेतों में पलते हैं और सुअर को काटने के बाद आदमी को काट कर संक्रमण फैलाते हैं। पूर्वांचल में

इसे दिमागी बुखार भी कहते हैं। इसमें दिमाग के बाहरी आवरण यानी 'इंसेफेलान' में सूजन आ जाती है, जिससे तेज बुखार, झटके, सांस लेने में दिक्कत और बेहोशी के लक्षण आने लगते हैं। इसमें तुरन्त या तीन दिन के भीतर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ सेवायें न मिलने से विकलांगता व मृत्यु की सम्भावना बढ़ जाती है।

जापान से आई इस बीमारी के विषाणु सर्वप्रथम 1925 में पहचाने गये और 1935 में इसका नाम जापानी इंसेफेलाईटिस पड़ा। जापान के अलावा फिलीपिंस, कोरिया, चीन, थाईलैंड़ और श्रीलंका जैसे देशों में भी इस बीमारी ने खूब तबाही मचाई है। भारत में सर्वप्रथम 1955 में तामिलनाडु में इस बीमारी के विषाणु पाये गये। बाद में आन्ध्र और कर्नाटक में भी इसने अपने पैर फैलायें। देश के बाकी हिस्सों और दुनिया के अन्य देशों में इस बीमारी पर काबू पा लिया गया है। परन्तु उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में इसने अपना पैर जमाये रखा और हर वर्ष तय समय पर इसकी दस्तक सुनाई देती रही। पूर्वांचल में 1978 में पहली बार इस बीमारी के लक्षण पाये गये। यह बीमारी चर्चा में तब आई, जब 2005 में मौतों का आंकड़ा 1500 के पार पहुँच गया। अधिकतर मौतें गोरखपुर स्थित बाबा राघव दास मेडिकल कालेज में हुई। इसका एक कारण यह भी रहा कि यह संस्थान उस क्षेत्र का प्रमुख शिक्षा संस्थान है, जहां उसके इलाज की समुचित व्यवस्था है। पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश, नेपाल और उत्तर प्रदेश से सटे बिहार के मरीज यहाँ रेफर किये जाते है। 2005 में हुई मौतों ने गोरखपुर और इस बीमारी के प्रति राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया और राजनीतिक दलों का ध्यान आकृष्ट किया। इस बीमारी को राजनीतिक मुद्दा बना दिया गया और इसके रोकथाम और निजात के तमाम वादे किये गये। 2006 में इसकी रोकथाम के लिये चीन से टीके मंगाये गये और आनन फानन में प्रभावित क्षेत्रों में टीकाकरण कराया गया। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम अव्यवस्था का शिकार हो गया और इसके अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सके।

सन् 2009 में गोरखपुर में पुणे की नेशनल इंस्टिट्यूट आफ वायरोलाजी की ईकाई स्थापित की गई और पुनः टीकाकरण को व्यवस्थित रूप से कराया गया। नेशनल इंस्टिट्यूट आफ वायरोलाजी की ईकाई ने

परीक्षण का कार्य शुरू किया और पाया गया कि संक्रमित होने वाले सभी मरीजों में जापानी इंसेफेलाइटिस के विषाणु नहीं पाये गये। परीक्षणों में जल जनित एण्ट्रोवायरस की मौजूदगी भी पाई गई और चिकित्सक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि 2009 के बाद जापानी इंसेफेलाईटिस के मरीजों में कमी आई हैं। लेकिन ठीक वैसे ही लक्षणों के साथ अन्य मरीजों में जलजनित एण्ट्रोवायरस पाये गयें। ऐसे संक्रमण को ''एक्यूट इंसेफेलाईटिस सिंड्रोम'' (ए0ई0एस0) कहा गया। तब से अब तक के आँकड़े बताते हैं, कि कुल आ रहे मरीजों में अब केवल 12–13 प्रतिशत मरीज जापानी इंसेफेलाईटिस के पाये जा रहे हैं तथा शेष ए0ई0एस0 से पीड़ित पाये जा रहे हैं।

इस नये संदर्भ के साथ अब सरकार का पूरा ध्यान जो पहले सुअर बाड़ों को आबादी से दूर करने और मच्छरों को मारने पर था, अब स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने पर केन्द्रित हो गया। जन जागरूकता की मुहिम चलाई जानी जरूरी हैं और प्रभावित क्षेत्रों में गहरे भूमिजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास शुरू करने होगे। पहले यह संक्रमण 0-15 वर्ष तक के बच्चों तक ही सीमित था। अब इसने अपना विस्तार कर लिया है और अधिक उम्र

निदेशक, सेन्टर फार सोशल एण्ड कन्टेम्परेरी रिसर्च

के लोग भी संक्रमित पाये जाने लगें हैं। पीड़ितों की संख्या हर वर्ष लगभग उतनी ही रहीं। पिछले दस वर्ष के ऑकड़े इस बात को पुष्ट करने के लिये काफी हैं (देखें तालिका)

तालिका– पिछले सात वर्षों में इस क्षेत्र विशेष में मस्तिष्क ज्वर से प्रभावित लोगों की संख्या

•••• ••	•••• • ••	• •• ••
2010	3540	494
2011	3492	579
2012	3484	557
2013	3096	609
2014	3329	627
2015	2894	479
2016	3919	621
2017 (अब तक)	924	127

इन आकड़ों के न घटने की प्रमुख वजहों में इस क्षेत्र विशेष की गरीबी, शिक्षा की कमी एवं गुणवत्तापरक स्वास्थ सेवाओं की पहुँच न होना, जागरूकता का अभाव व विभिन्न सरकारी ऐजेन्सियों व विभागों के बीच समन्वय का अभाव माना जा सकता है। पीड़ितों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं विभिन्न आयामों को केन्द्र में रखकर एक गैर सरकारी संस्था 'एक्शन फार पीस प्रासपेरिटी एण्ड लिबर्टी' ने 2014 में एक विस्तृत अध्ययन किया, जिसके परिणाम जमीनी स्तर पर स्थितियों से रूबरू कराते हैं।

अध्ययन में पाया गया कि पीड़ितों में 0-5 वर्ष तक के 55 प्रतिशत, 6-15 आयु वर्ग के 25 प्रतिशत, 16-35 आयु वर्ग के 15 प्रतिशत एवं 36 वर्ष से ऊपर के 5 प्रतिशत लोग थे। पीड़ितों में अधिकांश गरीब परिवारों के लोग थे, जिनमें से 50 प्रतिशत से अधिक लोगों की मासिक कमाई रूपये 3000 से कम पाई गई और 70 प्रतिशत पीड़ितों के परिवारों में सदस्यों की संख्या 6-10 के बीच थी। पीड़ितों में 60 प्रतिशत मजदूर वर्ग के परिवारों के थे तथा मात्र 10 प्रतिशत परिवारों को म0न0रे0गा0 के तहत काम उपलब्ध हो सका था। इनमें से 30 प्रतिशत परिवार सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम; पी0डी0एस0) के लाभार्थी भी नहीं थे। सबसे महत्वपूर्ण बात जो निकल कर आई कि पीड़ित परिवारों में 75 प्रतिशत परिवारों ने सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं पर अविश्वास करते हुए गाँव के झोला छाप डाक्टरों को तरजीह दी, जिससे संक्रमित होने के 3 दिन के भीतर मात्र 35 प्रतिशत पीड़ित ही सरकारी गुणवत्तापूर्ण इलाज पा सके। 4-7 दिन के भीतर मात्र 40 प्रतिशत पीड़ित ही इलाज के लिये पहुंच सके। विकलांगता और मृत्यु को बढ़ाने वाला सबसे बड़ा कारण यही माना जा सकता है। अध्ययन में पाया गया कि इस बीमारी के बाद 65 प्रतिशत परिवार आर्थिक रूप से और टूट गये। कहने के लिये तो सरकारी सेवायें मुफ्त मुहैया कराई जाती हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर सच्चाई कुछ और ही है। अब इस सरकार ने बीते कुछ सालों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की मुहिम चलाई है और गाँव–गाँव में इंडिया मार्का पम्प लगवाये हैं। उसके बाद भी पीड़ित परिवारों में 60 प्रतिशत परिवार ही स्वच्छ पेय जल तक अपनी पहुँच बना पाये हैं।

कुल मिलाकर सरकारी दावे जैसे भी हों, मस्तिष्क ज्वर (जे0ई0/ए0ई0एस0) से पीड़ितों का न घटना और उनकी जमीनी हकीकत में पिछले एक दशक में कोई खास बदलाव न होना एक नये सिरे से इस आपदा पर विचार करने एवं सभी सरकारी एजेन्सियों के बीच समन्वय स्थापित कर नये कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता पर जोर देती हैं। उम्मीद है कि गरीबों की इस बीमारी को मिटाने के लिये सरकारें संवेदनशीलता के साथ कुछ अर्थपूर्ण पहल करेंगी, तभी इस महामारी को रोका जा सकेगा।

अवधी लोक काव्य

ओक्का बोक्का तीन तलोक्का

❐ अज्ञात

ओक्का बोक्का तीन तलोक्का,
फूट गयल बुढऊ का हुक्का।
फगुआ कजरी कहाँ हेरायल,
अब त गांव क गांव चुडूक्का।।

नया जमाना नयके लोग,
नया नया कुल फईलल रोग।
एक्के बात समझ में आवै,
जइसन करनी वइसन भोग।।

नई नई कुल फइलल पूजा,
नया नया कुल देबी देवता।
एक्कै घर में पाँच ठो चूल्हा,
एक्कै घरे में पाँच ठो नेवता।

नउआ कउआ बार बनउवा,
कवनों घरे न फरसा झरूआ।
लगे पितरपख होय खोजाई,
खोजले मिलें न कुक्कुर कउआ।।

एहर पक्का ओहर पक्का,
जेहर देखा ओहर पक्का।
गांव का माटी महक हेराइल,
अंकल कहा, कहा मत कक्का।।

कहाँ गयल कुल बंजर ऊसर,
लगत बा जइसे गांव ई दूसर।
जब से ई धनकुट्अि आइल,
कउनो घरे न ओखरी मूसल।।

कहाँ बैल के घुघरू घण्टी,
कहाँ बा पुरवट अऊर इनारा।
कहाँ गइल पनघट के गोरी,
सूना सूना पनघट सारा।।

शहर गांव के घीव खियोवे,
दाल शहर से गांव में आवै।
शहरन में महके बिरियानी,
कलुआ खाली धान ओसावै।

गांव गली में अब त खाली,
राजनीति पर होले चर्चा।
अब ऊ होरहा कहाँ भुजाला,
कहाँ पिसाला नीमक मरचा।

कबो कबो सोचीला भाई,
अब ऊ दिन ना लौट के आई।
अब न वइसे कोयल बोलिहैं,
वइसे न महकी अमराई।।

*व्हाट्सएप से साभार

औषधीय वनस्पति

औषधीय फसल केवाँच

❒ सुरेश कुमार शर्मा एवं श्रीकृष्ण तिवारी

Kewach (Mucuna species), *M. utilis, M. nivea* and *M. pruensis* are wild creepers of Leguminaceae family plants. This plant has high medicinal and hence marked-value. Due to its over exploitation in wild habitat the cultivation of Kewach may be a very fruitful agricultural practice. Organically grown Mucuna species have higher medicinal quality than chemically grown plants.

केवाँच (मुकुना स्पेसिज) को हम सभी इसकी फलियों पर उपस्थित छोटे–छोटे रोमों के कारण होने वाली असहनीय खुजली के कारण जानते हैं। केवाँच एक उष्णकटिबंधीय, लेगुमिनेसी कुल का पौधा है। भारतवर्ष में केवाँच की 15 जातियाँ पाई जाती हैं। इसका संस्कृत नाम कौंच, कपिकच्छु या आत्मगुप्ता है। केवाँच की पत्ती अंतरवर्ती, त्रिपर्णी बड़ी एवं अंडाकार होती है। केवाँच के पौधे एक वर्षीय शाक होते है। इसकी लता पतली तथा चक्रारोही होती है। इसके फूल बड़े तथा बैगनी-भूरे रंग के होते हैं। केवाँच की फली वक्राकार, लगभग 12 सेमी लम्बी होती है, जो खुजली करने वाले रोमों से ढ़की रहती है। प्रत्येक पौधे पर लगभग 20-25 फलियाँ लगती हैं तथा 3-5 बीज हर फली में पाये जाते हैं। मुकुना यूटिलिस के बीज, अन्य जातियों की तुलना में बड़े होते हैं। औषधि के रूप में इसे न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर के चिकित्सकीय ग्रंथों में सम्मानीय स्थान प्राप्त है। लेगुमिनेसी कुल का पौधा होने के कारण यह जड़ों के आस–पास नत्रजन स्थिरीकरण (Nitrogen Fixation) भी करता है, जिससे भूमि की उर्वरता बढ़ती है। भारत में अनंतकाल से पारंपरिक चिकित्सकों के अलावा आम लोग भी इस वनस्पति का प्रयोग करते आ रहे हैं। मुख्यतः इसके बीजों का उपयोग औषधि रूप में किया जाता है, पर इसके लगभग सभी पौध भाग औषधीय गुणों से परिपूर्ण हैं। इसके काले बीजों वाली प्रजाति (मुकुना प्रूरिएंस) का उपयोग अधिक होता है। मुकुना प्रजाति में इसके अतिरिक्त सफेद/मटमैले (मुकुना नीविया), काले-सफेद चितकबरे (मुकुना यूटिलिस) और भूरे–सुनहरे रंग के बीज पाये जाते हैं।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में काले बीजों वाली केवाँच की अधिक मांग है। भारतीय स्तर पर दवा बनाने वाली संस्थाएं काली केवाँच का अधिक उपयोग करती हैं। हाल ही में हुए अनुसंधानों से यह पता चला है कि भारतीय केवाँच में एल-डोपा (एल 3,4 डाईहाइड्राक्सी फिनाइल एलानीन) नामक प्राकृतिक रसायन पाया जाता है, जिसका उपयोग लाइलाज समझे जाने वाले पार्किन्सन नामक रोग को ठीक करने व उच्च रक्तचाप के उपचार में किया जाता है। इसके रोएं त्वचा के संपर्क में आने पर गंभीर खुजली करते हैं, जिसके लिए जिम्मेदार रासायनिक यौगिक प्रोटीन म्युकानैन और सेरोटोनिन हैं। केवाँच के बीजों में औषधीय गुणयुक्त विभिन्न प्रकार के कार्बनिक यौगिक जैसे एल-डोपा (3.6-4.2%), थ्रियोनीन (4-5%), वैलीन (5-6%), आइसोल्यूसिन (4.5-5.5%), ल्यूसिन (7-8%), फिनाइल एलानीन (4-5%), लाइसीन (6-6.5), आर्जीनीन (4.5-4.7), गैलिक अम्ल, निकोटीन तथा गाढ़े भूरे रंग का तेल (4.5-7%) मुख्य हैं। उपरोक्त सभी रासायनिक घटकों की लगभग सर्वाधिक मात्रा मुकुना प्रूरिएंस में ही पाई गई है।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ।

केवाँच की बढ़ती हुई मांग ने वनों पर दबाव बढ़ा दिया और केवाँच का अनैतिक और अविवेकपूर्ण दोहन प्रारंभ हो गया। केवाँच में खुजली होने के कारण इसके सभी बीजों को एकत्रित करना मुश्किल कार्य है। बढ़ी हुई मांग को देखते हुए वनौषधि संग्रहणकर्ताओं ने एक सरल पर पर्यावरणीय संतुलन के लिए घातक उपाय निकाला। उन्होंने केवाँच के पके हुए पौधों को जलाना आरंभ कर दिया। पौधों को जलाने के बाद बीजों को एकत्रित किया जाने लगा। इससे बीज तो प्राकृतिक परिस्थितियों से गायब हुए ही, साथ ही पूरा पौधा भी हमेशा के लिए नष्ट हो गया। इस बढ़ी हुई मांग ने कुछ ही वर्षों में वनों में केवाँच की संख्या में भारी कमी कर दी। इसके अत्यधिक दोहन से उपलब्धता में आई कमी के कारण इसकी खेती करना लाभदायक है।

उपयोगः पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में आमतौर पर केवाँच का प्रयोग बलवर्धक के रूप में किया जाता है। इसे सैकड़ों प्रकार के प्रचलित औषधीय मिश्रणों में बतौर मुख्य घटक प्रयोग किया जाता है। देश के बहुत से हिस्सों में केवाँच की कच्ची फलियों से सब्जी भी तैयार की जाती है। पत्तियाँ तथा कभी-कभी हरी फली पशु चारे के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं। इनमें उच्च मात्रा में प्रोटीन होता है।

आधुनिक अनुसंधानों से यह साफ हो चुका है, कि केवाँच की फलियों और बीजों का सेवन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है। ग्रामीण और वनीय अंचलों में केवाँच का नियमित प्रयोग वर्ष भर आम लोगों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाता है। हाल के दिनों में केवाँच की जड़ों की मांग भी तेजी से बढ़ी है। इस मांग ने भी केवाँच की प्राकृतिक संख्या पर खतरा पैदा किया है। विश्व के अन्य देशों में भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए केवाँच का प्रयोग होता है, पर भारत में इस प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। अन्य फलीदार पौधों की तरह ही केवाँच की जड़ों में भी वातावरणीय नत्रजन का स्थिरीकरण करने वाले लाभदायक सूक्ष्म जीव पाये जाते हैं, जो कि भूमि की उर्वरता बढ़ाते हैं।

केवाँच से होने वाली असहनीय खुजली को हटाने के लिए कई प्रकार के पारंपरिक उपायों का प्रचलन भारत में है। आमतौर पर हाथों में ताजा गोबर लगाकर केवाँच की फलियाँ तोड़ने से खुजली नहीं होती है। खुजली हो जाने पर भी बतौर उपचार गोबर का प्रयोग इसी तरह किया जाता है। आधुनिक संग्रहणकर्ता हाथों में पॉलीथीन बांधकर भी केवाँच के एकत्रण का प्रयास करते हैं। केवाँच की व्यावसायिक खेती कर रहे किसानों के लिए यह पारंपरिक ज्ञान बहुत ही उपयोगी है। जहां एक ओर पूरे पौधे को जला देने का उपाय वनों तथा पर्यावरण के दृष्टिकोण से घातक है, वही किसानों के खेतों पर इसे जलाना कम नुकसान दायक है। यह किसानों को सफलतापूर्वक फली के एकत्रण करने में मदद कर सकता है। सफेद केवाँच की तुलना में काली केवाँच के बीजों की अधिक मांग से परिचित वनस्पति संग्रहणकर्ता सफेद केवाँच के पौधों को आग लगाते हैं जिससे बीज जलकर काले हो जाते हैं । फिर इस जले हुए बीजों की मिलावट काले केवाँच में कर दी जाती है। यद्यपि नंगी आँखों से यह पहचान पाना मुश्किल है, पर आधुनिक प्रयोगशालाओं में इस प्रकार की मिलावट को चंद मिनटों में पकड़ा जा सकता है।

केवाँच के पौधे बेलदार होते हैं। इन्हें उगने के लिए सहारे की आवश्यकता होती है। इसे मुख्य फसल की तरह लगाने की बजाए बाड़ों पर बेल की तरह चढ़ा कर खेती की जाए तो अधिक लाभकारी है। एक बार उन्हें इस तरह चढ़ा देने से यह स्वतः ही फैलती रहती हैं। यदि बाड़ के रूप में लकड़ी या सीमेंट के खम्भों का प्रयोग करते हैं तो तारों के ऊपर केवाँच की बेलों को फैलाया जा सकता है। इससे कई फायदे हैं। केवाँच की सघन वृद्धि बाड़ को एक अभेद्य दीवार की तरह बना देती है, जिसके उस पार कुछ भी नहीं दिखता है। इससे बाहरी पशुओं को अंदर आने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। काली केवाँच लगाने पर यह सुरक्षा और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि इसकी असहनीय खुजली से न केवल पशु बल्कि मनुष्य भी भली-भांति परिचित हैं।

सस्य तकनीकः आमतौर पर औषधीय फसल के रूप में केवाँच की खेती बीजों के लिए की जाती है। 7 से 8 महीने की यह फसल बिना किसी अधिक देख-भाल के तैयार हो जाती है। बीजों में 90-95 प्रतिशत तक अंकुरण क्षमता होती है। बीज काफी बड़े होते हैं, इसलिए वृद्धि की प्रारंभिक अवस्था में बिना पौष्टिक तत्वों के भी पौधा विपरीत परिस्थितियों में तैयार हो जाता है। केवाँच की खेती के लिये उपयुक्त बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यदि इसकी खेती हरे चारे के लिये करनी हो तो 30-40 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिये। बुवाई का उपयुक्त समय मध्य जून है। केवाँच की बुवाई डिबलर द्वारा 90 सेमी कतार से कतार तथा 60 सेमी पौध से पौध की दूरी पर 4 से 5 सेमी गहराई पर करनी चहिये। इससे कम या अधिक दूरी करने पर उपज कम हो जाती है। हरे चारे या हरी खाद के लिए बीजों को झिटकवा विधि से बोया जा सकता है। बुवाई के लगभग एक सप्ताह बाद बीजों का जमाव हो जाता है।

फसल की किसी भी अवस्था में केवाँच के पौधे पानी का जमाव सहन नहीं कर पाते। यही कारण है कि मुख्य फसल के रूप में इसकी खेती कर रहे किसानों से ढालदार जमीन के चयन की बात कही जाती है। यदि ढालदार जमीन न हो तो पानी की निकासी के समुचित प्रबंध होने चाहिए। यद्यपि रासायनिक खाद के माध्यम से केवाँच के अधिक बीज प्राप्त किये जा सकते हैं, पर अधिक गुणवत्ता के बीज की प्राप्ति के लिए जैविक खाद आवश्यक है। फसल की बुआई से पूर्व खेत में गोबर की खाद का प्रयोग किया जाता है। गोबर की खाद के साथ चाहे तो नीम या करंज की फली का प्रयोग भी कर सकते हैं। लेगुमिनेसी कुल का पौधा होने के कारण केवाँच को नत्रजन (नाइट्रोजन) की विशेष आवश्यकता नहीं होती, परंतु फास्फोरस उर्वरक का प्रयोग करने पर उपज बढ़ जाती है। केवाँच की फलियाँ दिसम्बर तक पूर्ण रूप से विकसित हो जाती हैं। एक माह बाद (लगभग जनवरी) फली के ऊपर के रोम कम हो जाते हैं। पूरे फसल काल मे 3 से 4 बार फलियों की तुड़ाई करते हैं। इसमें अंत तक फूल आते रहते हैं। तुड़ाई के बाद फलियों को 3 से 4 दिन तक धूप में सुखाकर उन्हें फोड़ने के बाद एक फली से 3 से 5 बीज प्राप्त होते हैं।

सही तरीके से केवाँच की खेती करने पर 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। प्रयोगों से यह ज्ञात हुआ है कि मुकुना की तीन जातियों में से मुकुना यूटिलिस सबसे अधिक पैदावार देती है। इसकी खेती से लगभग 8000-10,000 रुपये प्रति हेक्टेयर की लागत आती है और बीजों को 25-30 रुपये प्रति किग्रा की दर से बेचने पर 60,000 रुपये प्रति हेक्टेयर का शुद्ध लाभ अर्जित किया जा सकता है। इसके लिए किसानों को इसके खरीदारों से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है।

लाभकारी वनस्पतियाँ

सहजन (ड्रमस्टिक): एक बहुउपयोग वृक्ष

❒ विनय साहू

Drum stick (*Moringa oliphera* L.) is a very useful plant and can be grown without much efforts in kitchen gardens. Its fruit provide vitamin A, B1, B2, B3 B5, B6, B9, C, besides nutritive substance. K, Ca, Zn, Na, Fe, Mg etc. minerals and fibre etc. Its intake in food system can help in fighting many diseases life Blood Pressure, Kidney disorders, Diabetes. etc.

वनस्पतिक नाम = मोरिंगा ओलिफेरा
कुल = मोरिंगेसी
प्रचलित नाम = सहजन
अन्य नाम = मूँगा, इकस्टिक, सिंगरू

सहजन मोरिंगेसी कुल का एक महत्वपूर्ण पेड़ है। इसकी ऊँचाई करीब 12 फुट होती है। इस पौधे की जंगली प्रजातियाँ हिमालय की घाटियों में पायी जाती हैं जबकि सामान्य प्रजातियाँ सड़क किनारे, बगीचों तथा कई अन्य जगह पर पायी जाती हैं। पौधे की पत्तियाँ छोटी गहरे हरे रंग की एवं फूल सफेद बैंगनी रंग के होते हैं, इसका फल जब अपरिपक्व होता है, तो साँप की पूँछ की तरह प्रतीत होता है तथा परिपक्व फल में तिकोनाकार बीज होते हैं। पौधे की पत्तियाँ, फूल, फल तथा नवीन बीज खाने तथा सब्जी बनाने के काम में आते है।

प्रमुख रासायनिक संघटन

सहजन की पत्तियों में लुटिन, (बी) केरोटीन, फाइटिल फैटी एसिड एसटर, पॉलीफिनॉल, क्लोरोफिल ए, बी- सिटोइस्टरोल, ट्राईगिलिसरोल तथा फैटी एसिड, फैटीऐल्कोहल, अमीनो एसिड तथा संतृप्त हाइड्रोकार्बन होते हैं, जो पोषण और रोग प्रतिरोधन में हमारे शरीर को सहयोग करते हैं।

उत्पत्ति स्थान एवं विवरण

सहजन के पौधे की उत्पत्ति का केन्द्र दक्षिणी हिमालय माना जाता है तथा इसका उत्पादन उष्णकटिबंधीय एवं उप उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में भी बहुतायत से किया जाता है। भारत सहजन के पौधे का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। सहजन के पौधे को बीज तथा कटिंग के द्वारा लगाया जाता है। यह पौधा विविध भूमि, जलवायु दशाओं में आसानी से उग जाता है एवं रोगों से अन्य पौधों की अपेक्षा कम प्रभावित होता है।

सहजन के पौधे की पत्तियाँ, अपरिपक्व फली (ड्रमस्टिक), परिपक्व बीज एवं फूल का उपयोग खाने तथा विभिन्न प्रकार की दवाईयों तथा सौंदर्य प्रसाधनों में होता है। सहजन की पत्तियों, फली तथा बीज में वसा प्रोटीन, कार्बोहाड्रेट विटामिन A, B1, B2, B3, B5, B6, B9, C, तथा रेशे प्रचुर मात्रा में

पाये जाते है। इसके अलावा कई खनिज तत्व भी पाये जाते हैं इनमें पोर्टेशियम, कैल्शियम, जिंक, सोडियम, लौह तत्व तथा फास्फोरस मुख्य हैं। सहजन के बीज से बेनऑयल या बेन्जाइल प्राप्त किया जाता है।

सहजन के खाद्य उपयोग

1) **पत्तियाँ** : सहजन की पत्तियॉ विटामिन बी, सी, प्रोविटामिन ए, विटामिन के लौहतत्व तथा मैग्नीज का प्रमुख स्रोत है। इसकी पत्तियों को सूखाकर और पिसकर सूप तथा चटनी बनाने में उपयोग किया जा सकता है।
2) **बीज** : सहजन के बीज में विटामिन सी, विटामिन बी तथा रेशे प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसके बीजों को भुनकर मटर की तरह खाया जाता है। परिपक्व बीज में 38–40% खाने युक्त तेल जिसे बेन तेल के नाम से भी जाना जाता है, पाया जाता है तथा बीज केक को खाद एवं पानी को शुद्ध करने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है।

सहजन के औषधीय उपयोग:-

1) सहजन की पत्तियों का जूस आँख की कई बीमारियों जैसे आँखों की सूजन, दर्द, कान्जेक्टीवआइटिस (आँख आना) को ठीक करने में तथा लौह तत्व की कमी वाले मरीजों में लौह आपूर्ति में किया जाता है।
2) सहजन की पत्ती तथा अदरक का जूस बराबर मात्रा में मिलाकर पीने से दमा की बीमारी में लाभ मिलता है।
3) सहजन की पत्ती, अदरक, हल्दी, नमक तथा काली मिर्च को कुत्ते के कॉटने वाली जगह पर लगाने से बुखार तथा सूजन कम होते हैं।
4) सहजन की जड़ का रस तथा गुड को बराबर मात्रा में पिसकर खाने से सरदर्द में आराम मिलता है।
5) जोड़ों के दर्द में सहजन के बीज का तेल काफी लाभदायक है।
6) सहजन की ताजा जड़ उबालकर पानी के सथ नियमित समय पर पीने से काफी दिन पुराना बुखार भी ठीक हो जाता है।
7) सहजन की जड़ तथा अदरक का रस मरीज को दिन में दो बार देने से उसकी पाचन शक्ति बढ़ जाती है।
8) सहजन की छाल को पानी में पीसकर मरीज को देने से अन्तःसूजन खत्म हो जाती है, इसीलिये सहजन की छाल को भारतीय पेंनिसिलिन के नाम से भी जाना जाता है।
9) सहजन के पौधे का उपयोग अफ्रीका तथा एशिया में अलसर, मलेरिया, घाव, सूजन, हृदय की समस्याओं कैंसर, मोटापा, खून की कमी, यकृत की बीमारियां, टाइफाइड बुखार, मूत्ररोग, मधुमेह तथा त्वचा रोगों में किया जाता है।

प्लाटन्ट टक्सोनोमी एवं हरबेरियम डिवीजन, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ ईमेल : sahuvinay8@gmail.com

कृषि तकनीक

शून्य जुताई विधि से गेहूं और धान की पर्यावरणीय खेती

❒ शिव बदन मिश्रा, अशोक श्रीवास्तव एवं आर.सी. चौधरी

Many new agricultural technologies and innovations are taking place in the farmers' fields, though its pace is very slow due to lack of adequate extension services and public awareness. No tillage agriculture is a kind of conservation agriculture, which has been adopted globally as sustainable agricultural practice. This article describes the details of this technique and some of its success stories in rice-wheat cropping systems of Indo Gangetic Plains.

एक राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास में प्राकृतिक संसाधनों की अहम भूमिका होती हैं। दिन प्रतिदिन बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन संसाधनों का तीव्र गति से अनावश्यक दोहन हो रहा है, जो एक चिन्ताजनक विषय है।

खेती के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों में जल एवं जमीन की महत्वपूर्ण भूमिका है। खेती में प्रति एकड़ अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की ललक में इन प्राकृतिक ससाधनों के संरक्षण पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इस कारण इन संसाधनों की गुणवत्ता एवं मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हमारे देश में लगभग 15 प्रतिशत कृषि क्षेत्र आज भी असिंचित है। सिंचाई जल की बरबादी के कारण इनकी गुणवत्ता एवं उपलब्धता दिन प्रति दिन घट रही है। इससे स्थलीय एवं जलीय जीवों की संख्या घटती जा रही है। जो हमारी प्रकृति के लिए बिल्कुल भी अच्छा संकेत नहीं है। इसी प्रकार कृषि में रसायनों (रासायनिक उर्वरक एवं रासायनिक कीटनाशी) का अंधाधुंध प्रयोग उपरोक्त समस्या को और अधिक गंभीर बनाता जा रहा है।

टिकाऊ कृषि के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अति आवश्यकता हैं, क्योंकि खेती में प्रयोग होने वाले संसाधनों में जल एवं भूमि के साथ–साथ प्रकृति द्वारा प्रदत्त महत्वपूर्ण पोषक तत्व एवं फसलों के लिए अनेकों उपयोगी संसाधन हैं।

संसाधन संरक्षण खेती

संसाधन संरक्षण, खेती में उपयोग होने वाली तकनीकों में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तकनीक है। इसका खेती में प्रयोग करने पर कम लागत में उच्च गुणवत्ता युक्त अधिक उत्पादन प्राप्त होता हैं तथा वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए अन्न एवं जल आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है।

संसाधन संरक्षण की मुख्य तकनीकें

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए खेती में प्रयोग की जाने वाली मुख्य तकनीकें निम्नवत् हैं -

1. धान की सीधी बुवाई
2. खेत का समतलीकरण
3. जैविक खादों एवं जैविक कीटनाशकों का फसल उत्पादन के लिए प्रयोग
4. फव्वारा विधि से सिंचाई
5. एकान्तर कूड़ों में सिंचाई
6. अन्तवर्ती फसल पद्धति
7. टपक विधि द्वारा सिंचाई
8. शून्य जुताई विधि द्वारा बुवाई

शून्य जुताई विधि द्वारा बुवाई

हमारे देश में गेहूं-धान उत्पादन करने वाले प्रमुख राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार एवं मध्य प्रदेश इत्यादि में धान-गेहूं को ही मुख्य रूप से अधिकतर कृषकों द्वारा बोया जाता है। धान की नर्सरी तैयार करने से लेकर कटाई तक पानी की अनावश्यक बरबादी होती है। इसी तरह खेतों में सिंचाई जल का अधिक मात्रा में प्रयोग करने से खरपतवारों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है। खेत में खरपतवारों के अधिक होने से फसलों में कीट एवं रोगों की संख्या बढ़ती है। इसके अलावा फसलों एवं खरपतवारों के बीच भूमि से पोषक तत्वों को लेने की प्रतियोगिता बढ़ जाती है। जिससे फसल कमजोर हो जाती है। अन्ततः कृषक फसलों को स्वस्थ रखने के लिए खेत में अंधाधुध रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशी का प्रयोग करता है। जिससे प्रकृति से प्रदत्त प्राकृतिक संसाधन भूमि एवं जल की मात्रा एवं गुणवत्ता में कमी आने लगती है।

गेहूं एवं धान की खेती शून्य जुताई विधि द्वारा करने से खेतों में बिना जुताई किये एक विशेष प्रकार की मशीन सीड ड्रिल के द्वारा बुवाई की जाती है। इस मशीन में बुवाई के समय खाद एवं बीज दोनों को अलग-अलग मशीन के बाक्स में रखा जाता हैं। बुवाई करने पर खाद बीज के नीचे गिरता है। इससे जमाव के पश्चात फसलों को पोषक तत्व शीघ्र उपलब्ध हो जाते हैं। इसके साथ-साथ इस तकनीक से गेहूं एवं धान की बुवाई करने पर दो कतारों के मध्य खाली स्थान बिना जुताई के रह जाती है। जिससे खेत में खरपतवारों का जमाव कम होता हैं और फसलों के साथ खरपतवारों का पोषक तत्व लेने की प्रतियोगिता में कमी आती हैं। इसमें सिंचाई के लिये पानी एवं समय दोनों की बचत होती है।

इसके अतिरिक्त सीड ड्रिल मशीन के उपयोग से फसलों की बुवाई करने से निम्नलिखित अन्य लाभ भी होते हैं -

डा. चौधरी, पी.आर.डी.एफ., 59 कैनाल रोड, शिवपुर सहबाजगंज गोरखपुर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष हैं। लेखक ने वैश्विक अनुभव एवं तमाम देशों में नौकरी करने के बाद इस संस्था का निर्माण किया है, जो कृषि विज्ञान की नई तकनीकों का कृषि के आर्थिक लाभ एवं पर्यावरण संरक्षण तथा बेहतर पोषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रही है। अन्य लेखक उनके सहयोगी हैं। ईमेलः ram.chaudhary@gmail.com

तालिकाः शून्य जुताई विधि की प्रयोगिक उपलब्धियाँ

चयनित गाँव	तकनीक	किस्म	किसानों की संख्या	कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	कुल लागत/ हेक्टेयर (रूपये में)	कुल उत्पादन (क्विन्टल में)	कुल उपज मूल्य/ हेक्टेयर (रूपये में)	शुद्ध लाभ (रूपये में)
05	शून्य जुताई	HD - 2733	224	40	800000	1280	2176000	1376000
	शून्य जुताई	HD - 2967	90	20	400000	660	1122000	722000
	पारम्परिक जुताई	पारम्परिक किस्म	314	60	1260000	1500	2550000	1290000

1. मजदूरों की आवश्यकता कम पड़ती हैं।
2. ईधन की बचत होती हैं।
3. भूमि में जीवाश्म पदार्थों की मात्रा बढ़ने से उत्पादकता बढ़ती हैं।
4. भूमि क्षरण में कमी आती है।

उपरोक्त लाभों को ध्यान में रखते हुए पी.आर.डी.एफ. संस्था द्वारा 2015-16 में पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर एवं देवरिया जिलों के 5 राजस्व ग्रामों में 314 लघु एवं सीमांत महिला कृषकों के साथ 60 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे शून्य जुताई विधि द्वारा जीरो-टिल-सीड-फर्टी-डिल मशीन के माध्यम से गेहूं की खेती कराई गई थी। इस प्रदर्शन में कृषकों द्वारा गेहूं की उन्नतशील प्रजाति एच.डी.–2733 एवं 2967 का प्रयोग किया गया था। इससे पहले यहाँ के कृषकों द्वारा छिटकवाँ विधि द्वारा गेहूं की खेती की जाती थी।

उपरोक्त तालिका से साफ दिखाई पड़ रहा है कि, जब कृषक छिटकवाँ विधि से गेहूं की खेती करता हैं, तो **प्रति हेक्टेयर लागत** 21000.00 रूपये, उत्पादन 42500.00 रूपये (25 कुन्टल / 1700.00/कुन्टल) एवं शुद्ध लाभ 21500.00 प्राप्त कर रहा हैं जब कि कार्यक्रम से जुड़ने के बाद शून्य जुताई विधि से गेहूं की खेती करने से कृषक को प्रति हेक्टेयर लागत 20000.00 रूपये, उत्पादन 54966.00 रूपये (32.33 कुन्टल/ 1700.00/कुन्टल) एवं शुद्ध लाभ 34966.00 रूपये प्राप्त हो रहा है।

इस तरह कार्यक्रम से किसानों के जुड़ने के बाद उनकी सालाना आय में 13466.00 रूपये की वृद्धि हुई तथा साथ ही साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हुआ।

इस कार्यक्रम के माध्यम से शून्य जुताई विधि से गेहूं की खेती करने वाली गोरखपुर जिले की अमहिया गांव की श्रीमती उमरावती देवी कहती हैं, कि इस तकनीक की खूबी यही हैं कि धान की कटाई के बाद खेतों में काफी नमी रहने के बाद भी गेहूं की बुवाई करने से फसल की अवधि में 20 से 25 दिन ज्यादा पा सकते हैं, जिससे उपज का बढ़ना स्वाभाविक है। इस तकनीक के माध्यम से गेहूं को बोने पर उसके बीज जमीन में 3-5 से.मी. नीचे तक जाते हैं और बीज के ऊपर मिट्टी की हल्की परत पड़ जाती हैं। इससे बीज का जमाव अच्छा होता हैं और कल्ले भी अधिक संख्या में निकलते हैं। इसमें बीजों का अंकुरण गेहूं की परम्परागत खेती विधि से 2–3 दिन पहले हो जाता हैं, खास बात यह है कि बीजों के अंकुरण होने पर पौधों का रंग पीला नहीं पड़ता हैं। गेहूं की परम्परागत खेती के मुकाबले कम लागत एवं कम समय लगने और बेहतरीन एवं ज्यादा पैदावार

होने की वजह से गेहूं की शून्य जुताई तकनीक हमें बहुत अच्छी लगी।

अब तो कार्यक्रम के माध्यम से हमारे पाँचों कार्यक्रम गांवों में जीरो -टिल-सीड-फर्टी-ड्रिल मशीन उपलब्ध हैं, जिसे कार्यक्रम से जुड़े एवं गांव के अन्य महिला कृषक भाड़े पर ले जाते हैं। मशीन का किराया 200 रूपये प्रति एकड़ हैं। मशीन एक दिन में 8 से 10 एकड़ की बुवाई कर देती है। धीरे-धीरे गांव के अधिकतर किसान शून्य जुताई विधि द्वारा गेहूं की खेती करना प्रारंभ कर दिये हैं। जो आय वृद्धि एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अति आवश्यक है।

सारांश - वर्तमान युग में कृषि कार्य करने में मुख्य समस्या कृषि लागत का अधिक लगना एवं उपज का कम प्राप्त (वर्तमान जनसंख्या के अनुपात में) होना है। उपरोक्त समस्याओं से बचने के लिए कृषकों द्वारा लगातार रसायनिक उत्पादों का अधिक से अधिक प्रयोग एवं प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। जब कि शून्य जुताई विधि द्वारा खेती करने में इन समस्याओं से बचा जा सकता हैं साथ ही साथ कृषि लागत को कम करते हुए अधिक उपज प्राप्त किया जा सकता है। ।

विज्ञान कथा

बाँझ धरती

❐ रामकठिन सिंह

नरेन्द्र देव कृषि-विश्वविद्यालय, फैजाबाद को उत्तर प्रदेश शासन द्वारा चार हजार एकड़ भूमि मुहैया करायी गयी थी। मुख्यतः ऊसरीली होने के कारण यहाँ की मिट्टी खेती योग्य नहीं थी। विश्वविद्यालय द्वारा बस थोड़ी-सी भूमि शोधित कर एक काम चलाऊ 'एक्सपेरिमेण्टल फार्म' बनाया गया था। शेष जमीन खाली पड़ी थी और चारों तरफ बसे ग्रामवासी उन पर कब्जा करते जा रहे थे। मैंने जब वहाँ निदेशक ,शोध का कार्य सम्हाला, तो शेष जमीन को शोधित करने तथा उन पर पेड़ लगाने का एक वृहद् कार्यक्रम तैयार किया। यह योजना बड़ी सफल रही थी। इस कार्य का दायित्व मैंने अपने हरियाणा कृषि-विश्वविद्यालय के पूर्व सहयोगी डॉ. इन्द्रसेन सिंह को दिया था, जिन्हें इस काम के लिए भारत सरकार द्वारा 'प्रियदर्शनी वृक्ष-मित्र पुरस्कार' भी मिला। 'बाँझ धरती' नामक यह कहानी हमारे इसी प्रयास से सम्बन्धित है। – लेखक

दोपहर में खाने की मेज पर बैठा तो खाना छूने का मन नहीं कर रहा था। मेरा ध्यान उदास मालियों के चेहरों पर टिका था। आँवले के पेड़ों की सूखी टहनियाँ, उजाड़ नर्सरी, ट्यूबवेल्स के खुले पड़े पम्प, टूटी हुई टालियाँ और टूटी कुर्सियाँ तथा बरगद के पेड़ के आस-पास की गंदगी विश्वविद्यालय प्रशासन की उदासीनता की कहानी बयाँ कर रहे थे। सुबह जब अकमा फार्म पर घूम रहा था, तो मन में यह प्रबल इच्छा हुई थी कि एक बार फिर उस बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर कुल्हड़ की चाय पीयें। पर वहाँ तो सब तरफ बस कबाड़-ही-कबाड़ बिखरा पड़ा था। टूटी कुर्सियाँ एक तरफ फेंकी पड़ी थीं। फिर बैठते तो कहाँ बैठते! मन मारकर वापस आ गये थे हम, उस सोंधी कुल्हड़ की चाय की महक मन में संजोये।

फैजाबाद कृषि-विश्वविद्यालय छोड़े हुए मुझे दस साल से ऊपर हो गये थे। ऐसा नहीं था कि मैं इस बीच कभी विश्वविद्यालय गया नहीं, पर मैं इतना समय कभी नहीं निकाल पाया कि ऊसर और परती भूमि पर मेरे द्वारा कराये गये वहाँ के वृक्षारोपण के काम का ठीक से अवलोकन कर सकूँ। इस बार मैं यह सोचकर गया था कि वृक्षारोपण का काम अवश्य देखूँगा। इसीलिये मैं अपने साथ डॉ. इन्द्रसेन सिंह को भी ले गया, जो सेवा–निवृत्त होने के पूर्व इस काम को देख रहे थे। वास्तव में, वहाँ जो कुछ देखने को मिल रहा है, वह उन्हीं की मेहनत की देन है।

उस दिन पूर्वाह्न में हमलोग अकमा फार्म देखने गये। बेर बेशुमार फली थी। फलों से लदे पेड़ बहुत अच्छे लग रहे थे। 'गोला', 'उमरान' और 'बनारसी कड़ाका' प्रजातियों के पेड़ अपनी पूरी जवानी पर थे। वहाँ के सुपरवाइजर परशुराम ने बताया कि उस साल अमरूद की फसल भी बहुत अच्छी आई थी। वैसे अमरूद का मौसम तो लगभग समाप्त हो चुका था और ठेकेदार ने अमरूद के फल तोड़कर बेच दिये थे, पर न जाने कहाँ से ढूँढ़कर वह थोड़े से अमरूद ले आया। अमरूद खाने में बड़े स्वादिष्ट और मीठे थे। ऊसर भूमि में उगे पेड़ों के फलों की मिठास ज्यादा होती है, यह बात डॉ. इन्द्रसेन सिंह ने मुझे बताई थी।

अमरूद की मुख्यतः दो प्रजातियाँ लगाई गईं थीं, 'इलाहाबादी सफेदा' और 'लखनऊ-49', जिसे 'सरदार' के नाम से भी जाना जाता है। इलाहाबाद सफेदा शुरू में तो अच्छा चला था, लेकिन बहुत जल्द ही उसका 'गिराव' (डिक्लाईन) होने लगा था। पर लखनऊ-49 की पैदावार साल-दर-साल बढ़ती ही गई। इस प्रजाति को लगाये लगभग अठ्ठारह वर्ष बीत गये थे, पर आज भी इसके पेड़ वैसे ही तरो-ताजा दिखते थे। ऊसर भूमि के लिए निःसन्देह यह एक अत्यन्त उपयुक्त प्रजाति साबित हुई थी।

बातों-बातों में, एक दूसरे सुपरवाइजर तिवारी ने बताया कि सड़क के उस पार लगे कैजूराइना के पेड़ काट लिये गये हैं। उन पेड़ों के लिए विश्वविद्यालय को बाइस लाख रुपये मिले थे। उसकी यह बात सुनकर मुझे कई साल पहले तत्कालीन कुलपति डॉ. कीर्ति सिंह की विदाई के अवसर पर लिखा अपना एक गीत याद आया, ''बाँझ पड़ी धरती की कोख भरी, हरे-भरे पेड़ उगे, फूल खिले''। बाँझ पड़ी परती भूमि ने फल देने प्रारम्भ कर दिये थे। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई और मुझे लगा कि मेरे गीत के उपरोक्त बोल कोरी कल्पना नहीं थे। पर यह जानकर अफसोस भी बहुत हुआ कि इन पौधों की देख-रेख के लिए कोई धन उपलब्ध नहीं कराया जा रहा था। सुपरवाइजरों व मालियों के उदास चेहरे इस बात के स्पष्ट गवाह थे।

दोपहर के बाद हमलोग गोविंदपुरी फार्म देखने गये। कभी दूर तक फैला हुआ यह खाली मैदान अब एक घने जंगल में तब्दील हो गया था। मंदिर से आगे थोड़ी ही दूर पर नील गायों का एक झुण्ड घास चर रहा था। तभी माली ने इशारे से हमारा ध्यान बाईं ओर आकर्षित किया। हमने देखा कि वहाँ ढेर सारे हिरन हमारी तरफ गर्दन उठाकर देख रहे थे। ''इतराते मृग-छौने, बलखाती नील गाय'', मुझे अपने गीत की यह पंक्ति याद आई। ''कौन-कौन से जानवर हैं यहाँ'', मैंने धीमी आवाज में माली से पूछा। ''साहब, जंगली सूअर भी हैं, यहाँ और एक बड़ा अजगर भी। काले मुँह वाले बंदर और मोर तो बहुत हैं, साहब!'', माली बड़े उत्साहपूर्वक बता रहा था, यह सब।

प्रशासन की उदासीनता का असर यहाँ भी देखने को मिला हमें। इस फार्म पर हमलोगों ने एक बहुत बड़ी नर्सरी बनाई थी। हजारों पौधे तैयार किये जाते थे, हर साल। विश्वविद्यालय को इन पौधों की बिक्री से अच्छी–खासी आमदनी हो जाया करती थी। अब वह नर्सरी बंद कर दी गई थी। पम्पिंग सेट चलाने के लिए पैसे ही नहीं मिलते थे, न ही श्रमिकों का भुगतान ही समय से हो पाता था। धीरे-धीरे सब श्रमिक हटा दिये गये। नर्सरी का काम बंद हो गया। पानी रोकने तथा भूमि-क्षरण बचाने की दृष्टि से बने पुल व बंधों का खस्ता-हाल था। इस फार्म पर हम लोगों ने एक बहुत सुंदर पिकनिक-स्पाट बनाया हुआ था। उन दिनों लोग अक्सर यहाँ घूमने व पिकनिक मनाने आया करते थे। बच्चे बड़ा 'इन्ज्वॉय' करते थे। अब वहाँ झाड़-झंखाड़ के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया था। पानी का नलका टूटा पड़ा था। फूलों की क्यारियों का कहीं नामो-निशान नहीं था। बड़ा दुःख हुआ यह सब देखकर। मुझे मालियों ने बताया कि

प्रोफेसर राम कठिन सिंह, नेफोर्ड नामक स्वयं सेवी संस्था के निदेशक हैं। वे ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक एवं लेखक हैं, तथा नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फेजाबाद से अवकाश लेने के बाद से किसानों की उपज वृद्धि के लिये उन्नत कृषि तकनीकों के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं। उनका पता है, 1, देवलोक कालोनी, चर्च रोड, विष्णुपुरी, अलीगंज 226 022, ईमेल : rksingh.neford@gmail.com

इस फार्म से भी लाखों रुपये के पेड़ बेचे गये थे।

गोविंदपुरी फार्म के पास ही सड़क के दूसरी ओर एक और फार्म था। उस फार्म के आखिरी छोर पर एक हरिजन बस्ती थी। बस तीन-चार घर का एक छोटा–सा पुरवा। उस बस्ती के बगल से एक नाला बहता था। नाले के दोनों तरफ कभी बहुत कटाव हुआ करता था। खेत के खेत हर साल बरसात में बह जाते थे। इन हरिजनों के घरों के बह जाने का डर भी कम नहीं था। इनके बचाव हेतु हम लोगों ने उस नाले को 'टेम' करने के उद्देश्य से एक बड़ा बंधा तथा ढ़ेर सारे 'स्पिलवेज़' बनवाये थे। अगले साल से ही इसका प्रभाव दिखने लगा था। उस दिन मैं डॉ. इन्द्रसेन सिंह के साथ उसे भी देखने गया। बंधा के पास ढेर सारा पानी जमा था। गाँव के कुछ बच्चे उसमें नहा रहे थे। गाँव के लोग इसका उपयोग सिंचाई के लिए तो करते ही थे, आस-पास के गाँवों के जानवर भी यहाँ पानी पीने आते थे। नाले के ऊपरी छोर का कटाव एकदम बंद हो गया था। वहाँ की जमीन समतल हो गई थी, जिस पर हरी-भरी फसल लहरा रही थी। यह सब देखकर बहुत अच्छा लगा मुझे।

बंधा से लौटते वक्त डॉ. इन्द्रसेन सिंह ने कहा, ''आइए, आपको गरीबदास से मिलवाते हैं।'' ''गरीबदास?'' मैंने मन-ही-मन दुहराया। नाम कुछ परिचित-सा लगा। कुछ क्षण बाद मुझे याद आया– ''उस दिन सुबह ट्यूबवेल लगाने के लिए की गई एक छोटी-सी भूमि-पूजन के बाद एक 'धोती फटी-सी लटी–दुपटी' में कृष्ण के सुदामा-सा एक आदमी जिसके ''पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक'', मेरे पास आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। मुझे लगा, हाईस्कूल में पढ़े महाप्राण निराला के उस गीत का नायक मेरे समक्ष खड़ा है। वह मुझसे नौकरी माँग रहा था। वह फार्म की चौहद्दी के ठीक बाहर एक टूटी-सी झोपड़ी में रहता था, उसे चाहिये था एक साधन जिससे वह अपने बच्चों की भूख मिटा सके, उन्हें पाल–पोस सके। पर, वह ''मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को झोली को फैलाता'' निराला का भिखारी नहीं था, वह एक मेहनतकश इन्सान था। ''ठीक है, तुम इस ट्यूबवेल की देखभाल करो और इसको चलाओ। गुफ़रान साहब तुम्हें इसे स्टार्ट व बंद करना सिखा देंगे।'' गुफ़रान हमारी इस परियोजना में इंजीनियर थे। मेरा इतना कहना उसे रामबाण-सा लगा। मैंने देखा, उसकी आँखें छलछला गईं थीं। वह मेरे पैरों पर गिरकर, भगवान से मेरे लिये दुआ माँगने लगा था।

उस दिन बन्धा देखकर लौटे तो इन्द्रसेन एक झोपड़ी के सामने आकर रुक गये। वहाँ एक औरत कोई अनाज साफ कर रही थी। ''गरीब कहाँ है?'', डॉ. इन्द्रसेन सिंह ने उससे पूछा। ''उधर दूसरी झोपड़ी में बैठे हैं, साहब! आप रुकिए मैं बुलाती हूँ'', उस महिला ने कहा। इन्द्रसेन ने मुझे बताया, ''यह महिला गरीबदास की पत्नी है।'' इसके पहले कि वह गरीबदास को आवाज दे, हम स्वयं आगे झोपड़ी की ओर बढ़ गये। इन्द्रसेन सिंह ने गरीब का नाम लेकर पुकारा। गरीब अपनी पीठ हमारी ओर और मुँह दूसरी तरफ कर एक चारपाई पर बैठा था। वह पीछे मुड़ा और हमें देखकर धीरे-धीरे चारपाई से उठने लगा। ऐसा लगा मानो वह बीमार हो। वह लड़खड़ाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। ''लकवा मार दिया था, साहब! अब तो पहले से काफी ठीक हैं'', उस महिला ने उसके लड़खड़ाते हुए चलने का कारण बताते हुए कहा। पास आकर गरीबदास हमारे पैरों पर गिर पड़ा। हमने उसका हाथ पकड़कर उठाया। वह दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उसकी आँखें भर आई थीं। वह कुछ बोल नहीं पा रहा था। गरीबदास मुझे बदला-बदला सा लग रहा था। उसका तन ढका हुआ था और वह साफ-सुथरे कपड़े पहने हुआ था। बीमार अवश्य था पर 'धोती फटी-सी लटी दुपटी' में कृष्ण का सुदामा नहीं लग रहा था, न हीं महाप्राण निराला का वह भिखारी। वह कभी हमें तो कभी अपनी पत्नी की ओर, तो कभी फलों से लदे बेर के पेड़ को देखता। मानो, वह अपनी पत्नी से हमारे लिए बेर लाने को कह रहा था। ''सेवरी के घर राम आये हैं। इन्हें बेर तो खिलाओ।'' हम उसका इशारा समझ गये थे। ''अकमा फार्म से ढेर सारे बेर खाकर आये हैं'', कह कर उसे धन्यवाद दे और उसके स्वास्थ्य की कामना कर हम आगे बढ गये।

वह ट्यूबवेल जहाँ कभी गरीबदास काम करता था, बंद हो गया था। फार्म की चौहद्दी पर बना ऊँचा बाँध टूट गया था। खाई मिट्टी से भर गई थी। आस पास के सब पेड़ गाँव वालों ने काट लिये थे, जो बचे भी थे, वे सूख से गये थे। वही प्रशासन की उदासीनता। बातों-बातों में इन्द्रसेन ने बताया कि किस तरह से इस फार्म पर काम करते-करते गरीबदास ने अपने परिवार के लिए एक पक्की झोपड़ी बना ली थी। आगे चलकर उसने थोड़ी सी जमीन भी खरीद ली। अपनी झोपड़ी के सामने उसने ढेर सारे पेड़ भी लगा लिये थे। उन पेड़ों से भी उसे थोड़ी-बहुत आमदनी हो जाती थी। गरीब के परिवार का गुजर बसर ठीक से होने लगा था। मुझे यह जानकर बड़ा अच्छा लगा। गरीबदास जैसे हजारों लोगों को इस परियोजना के तहत जीविकोपार्जन का मौका मिला। लोग अपने बच्चों को लिखा पढ़ा सके। घर-द्वार बना लिये। इस इलाके में बहुत सारी जमीन परती पड़ी हुई थी। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित वृक्षारोपण की तकनीकों को अपनाकर ढेर सारे किसानों ने परती पड़ी अपनी जमीनों पर पेड़ लगाये। किसानों की अपनी आमदनी बढ़ने के साथ-साथ इस इलाके के वातावरण पर भी इस वृक्षारोपण का प्रभाव आज स्पष्ट दिखने लगा है।

कुमारगंज में शोध-निदेशक का पद भार ग्रहण करने के तुरंत बाद मैंने 'पूर्वांचल में कृषि विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ'' नाम से एक लम्बा लेख लिखा जो 'दैनिक जागरण', 'जनसत्ता' एवं कुछ अन्य हिन्दी के समाचार पत्रों में छपा था। यह लेख बहुत चर्चित हुआ। इस लेख में मैंने शोध हेतु प्राथमिकताओं की एक सूची बनाई थी, जिन्हें अपने कार्यकाल में कार्य-रूप देने का मैंने पूरा प्रयास किया। परती और ऊसर भूमि पर वृक्षारोपण इनमें से एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता थी। इसका एक कारण था। विश्वविद्यालय को उ.प्र. शासन द्वारा चार हजार एकड़ भूमि उपलब्ध करायी गई थी। लगभग पूरी की पूरी जमीन ऊसर और परती थी। पिछले लगभग एक दशक में विश्वविद्यालय ने बहुत थोड़ी जमीन विकसित कर कुछ काम-चलाऊ फार्म बनाये थे। शेष जमीन खाली पड़ी थी। चारों तरफ से आस पास के गाँवों के किसानों का कब्जा बढ़ता जा रहा था। विश्वविद्यालय ने इस भूमि की देखभाल के लिए एक अमीन लगा रखा था। उसके पास सब लेखा-जोखा अवश्य था। पर कभी किसी ने इस सम्पूर्ण भूमि को कब्जे में लेकर उसके सदुपयोग करने के विषय में सोचा ही नहीं। मैंने इसके विकास की एक योजना बनायी, पर धनाभाव के कारण यह काम प्रारम्भ नहीं हो पा रहा था। तभी मुझे पता चला कि जिला विकास प्राधिकरण के अंतर्गत परती भूमि पर वृक्षारोपण हेतु बहुत सारा धन उपलब्ध है। जिलाधीश महोदय से मिलकर मैंने इस परियोजना के लिए साढ़े सात लाख रुपये 'सैंक्शन' कराये।

पर समस्या यह थी कि विश्वविद्यालय में इस कार्य को सम्हालने के लिए कोई तैयार नहीं था। बागवानी विभाग अथवा शस्यक्रिया विभाग के लोग इस काम को कर सकते थे। पर वे अपने पिछले लगभग एक दशक के अनुभव से डरे हुए थे। उन्हें नहीं लगता थाा कि यह कार्यक्रम सफल हो पायेगा। अंत में, मैंने इस काम के लिए डॉ. इन्द्रसेन सिंह को राजी किया। डॉ. सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में उद्यान विभाग के सारे बाग लगवाये थे। उन्हें थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों का अच्छा ज्ञान

तो था ही, स्वभाव से वे कर्मठ भी बहुत थे। डॉ. सिंह दो शर्तों के साथ यह भार उठाने के लिए तैयार हुए थे। चालक के साथ एक वाहन, उनकी पहली शर्त थी। उनके काम में कोई दखलदाजी न करे, यह उनकी दूसरी शर्त थी। मैंने उनकी दोनों शर्तें मान लीं। प्रारम्भ से ही ये दोनो बातें अन्य लोगों के लिए ईर्ष्या का कारण रहीं। पर मुझे मालूम था कि यह काम इन दोनों शर्तों को पूरा किये बिना सम्भव था ही नहीं। इस काम में भाग दौड़ बहुत थी। फिर भला बिना गाड़ी के यह काम सम्भव कैसे होता?

एक दो साल बाद ही चारों तरफ अकमा फार्म पर दिन-दूनी रात-चौगुनी गति से बड़े होते और हरियाली बिखरते पौधे दिखने लगे। अच्छे स्वस्थ पौधे, कोई 'मार्टलिटी' नहीं। विश्वविद्यालय में आने वाला हर 'विजिटर' अकमा फार्म पर अवश्य जाता और देखकर हैरान रह जाता। परियोजना की सफलता का एक परिणाम तो यह हुआ कि जिला विकास प्राधिकरण के अधिकारी जितना पैसा माँगें, देने में तनिक नहीं हिचकते। फैजाबाद की भाँति सुल्तानपुर और आजमगढ़ के जिलाधीश भी अपने जिलों में यह कार्य करने के लिए विश्वविद्यालय पर दबाव डालने लगे। परिणामस्वरूप, हमें वहाँ भी काम प्रारम्भ करना पड़ा। दूसरी ओर, इस सफलता से नाखुश कुछ ईर्ष्यालु लोग डॉ. सिंह द्वारा ''पैसे खाने'' जैसा दुष्प्रचार करने लगे। यहाँ तक कि आचार्य चतुरसेन की 'वैशाली की नगरवधू' का खेल भी खेला गया। इसी नाम से लिखी एक कहानी में मैंने इस प्रकरण का विस्तार से वर्णन किया है। यह कहानी मेरे कहानी-संग्रह 'आस-पास' में छपी थी। इन शिकायतों को लेकर कई बार जाँच भी बैठाई गयी। पर हर बार जाँचकर्ता इस कार्य को देखकर ''शिकायत की बात गलत है'', जैसी टिप्पणी तो देते ही, साथ ही डॉ. सिंह को इस अच्छे कार्य के लिए पुरस्कृत करने की संस्तुति भी दे जाते।

मेरे विश्वविद्यालय छोड़कर चले जाने के बाद तो डॉ. सिंह की परेशानियाँ और भी बढ़ गईं। उनके बिल-वाउचर रोके जाने लगे। श्रमिकों के पारिश्रमिक मिलने में देरी होने लगी। समय से डीजल का पैसा न मिलने से पम्पिंग सेट चलाना मुश्किल होने लगा। नर्सरियाँ सूखने लगीं। इतना ही नहीं, डॉ. सिंह को पुरस्कृत करने के प्रतिकूल जब उन्हें 'प्रियदर्शनी वृक्ष-मित्र' पुरस्कार के लिए चुना गया, तो उन्हें यह पुरस्कार लेने जाने से भी मना कर दिया गया। जब डॉ. सिंह भी सेवा-निवृत्त हो गये, तब से तो जैसे इस परियोजना का कोई माई-बाप ही नहीं रहा। सुनने में आया था कि कुछ समय पहले जब कुछ पेड़ बेचे गये और विश्वविद्यालय को लाखों रुपये मिले, तब तत्कालीन कुलपति ने वृक्षारोपण के लिये एक योजना तैयार करवाई थी। इस परियोजना के तहत कुछ पेड़ लगे भी। पर अफसोस यह है कि जो पेड़ पहले से लगे थे, जिनमें कुछ फलदार वृक्ष भी शामिल थे, उनकी देख-भाल के लिए कोई प्रबंध नहीं किया गया। जबकि प्रतिवर्ष इन्हीं पेड़ों से विश्वविद्यालय को लाखों की आमदनी होने लगी है। आजकल 'इको–टूरिज़्म' का चलन जोर पकड़ने लगा है। विश्वविद्यालय के पास 'इको-टूरिज़्म' चलाने के सब संसाधन उपलब्ध हैं। बस, जरूरत है तो इसे कार्यान्वित करने की। इससे न केवल विश्वविद्यालय की आय बढ़ेगी, अपितु लोगों को प्रकृति के करीब आने तथा मनोरंजन का मौका भी मिलेगा।

चलो मिल जुल के, इक पेड़ लगाया जाये

❐ शशांक तिवारी

सांसे घट रही हैं,
इनको बढ़ाया जाये ।
चलो मिल जुल कर,
इक पेड़ लगाया जाये ।
धरती सिसक रही है,
आकाश रो रहा है।
इन सबसे बेफिकर
इंसान सो रहा है ।
तुम भी आओ साथ
फिर से फूलों को खिलाया जाये ।
चलो मिल जुल के,
इक पेड़ लगाया जाये ।
दुनिया बिखर रही है
सूरत बदल रही है ।
उत्तर से लेकर दक्खिन
हिमनद पिघल रहें है।

आओ साथ मिलकर
हिमनद को बचाया जाये।
चलो मिल जुल कर,
इक पेड़ लगाया जाये ।
सूखा पड़ रहा है
लातूर बन रहा है।
सर पे हाथ रखकर
किसान रो रहा है।
आओ साथ मिलकर
इनको हँसाया जाये।
चलो मिल जुल के,
इक पेड़ लगाया जाये ।
परिंदे जा रहे हैं छोड़
अपने आशियानों को।
सुंदर-सलीम आओ
फिर आशियाँ बचाने को।

फिर तिनका-तिनका जोड़
आशियाँ बनाया जाये।
चलो मिल जुल के,
इक पेड़ लगाया जाये ।
जल-वायु बदल रही है
ओजोन पिघल रही है।
रूठी प्रकृति हमसे
भूकंप ला रही है।
कंधे से मिलाओ कंधे
धरती को बचाया जाये।
चलो मिल जुल के,
इक पेड़ लगाया जाये ।

श्री शशांक तिवारी, पर्यावरणीय सूक्ष्म जैविकी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ. प्र. में शोध छात्र हैं।
ईमेल : tshashank41@gmail.com

हिन्दी दिवस विशेष

भारत में अंग्रेजी प्रसार की असलियत

❒ ओम प्रभात अग्रवाल

Hindi was accepted in India as a governance language after independence on long deliberations and involvement of the national leaders from various non Hindi speaking states including, the father of the Nation, Mahatma Gandhi. However, it could not achieve its right seat in India due to the ignorance of Elites who dominates in academics and governance of the independent India.

वर्ष 1967 में भारत के सभी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों का एक सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री एवं देश के अति प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी श्री त्रिगुण सेन ने की। सम्मेलन की बिना किसी अपवाद के सर्वमान्य सम्मति रही, कि राजभाषा कहलाने का अधिकार एकमात्र हिंदी को है। सम्मेलन में यह भी निर्णय हुआ, कि देश के उच्चतम शिक्षा संस्थानों में शिक्षण माध्यम केवल मात्र मातृभाषा हो। इसके साथ ही आशा बंधी कि हिंदी और लोक भाषाएं शीघ्र ही अपना न्यायोचित स्थान प्राप्त कर लेगीं। यद्यपि यह आशा केवल मृगतृष्णा सिद्ध हुई और देश में अंग्रेजी का धुंआधार प्रसार हुआ। आज समाज में अंग्रेजी छाई हुई है, और प्रगति के अनेकों शिखर विजय करने के उपरांत भी हिंदी कहीं भी नजर नहीं आती।

हिन्दी को लेकर न केवल सरकारी कार्यालयों में मात्र आपैचारिकता का निर्वाह हो रहा है, बल्कि जनमानस में भी अंग्रेजी की जड़ें मजबूत हो चुकी हैं। बाजार में नब्बे प्रतिशत बोर्ड और सूचना पट अंग्रेजी में दिख रहे हैं। शहरों में तथा अंग्रेजी पढ़े लोगों के घरों में शादी ब्याह और अन्य सामाजिक उत्सवों के लगभग नब्बे पंचानवें प्रतिशत निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में छप रहे हैं। चिट्ठी पत्रियों पर पते लिखने की सामान्य भाषा भी यही है और गली गली में कुकुरमुत्तों की भांति अंग्रेजी माध्यम विद्यालय स्थापित हो चुके हैं, वस्तुतः हिंदी माध्यम विद्यालय तो प्रत्येक नगर में या तो सरकारी हैं, या फिर वे जो बहुत पहले से चले आ रहे हैं। कतिपय राज्य सरकारें भी भाषा माध्यम के संबंध में पैर पीछे खींचती सी लग रही हैं। बिहार की स्थिति तो हिंदी ''इंडिया टुडे'' ने अपने 16 मार्च 2016 के अंक में एक अत्यंत व्यंग्यात्मक लेख में स्पष्ट की है, जिसका शीर्षक ही था ''अब अंग्रेजी बोलल जाई''। अप्रैल 2017 में समाचार प्रकाशित हुआ कि सी.बी.एस.ई. अपने से सम्बद्ध विद्यालयों में 2018-19 के सत्र से 9वीं एवं 11वीं में अंग्रेजी संभाषण में योग्यता परखने के लिये व्यावहारिक परीक्षा करायेगी। कम से कम नगरों में बोलचाल की भाषा में अनजाने ही अंग्रेजी शब्दों की बड़े स्तर पर घुसपैठ हो चुकी है और हिंदी मीडिया की भाषा भी काफी सीमा तक वस्तुतः ''हिंग्लिश'' ही है। कुछ हिंदी समाचार पत्र तो बाकायदा 'इंग्लिश लर्निंग' का नियमित रूप से कॉलम चला रहें हैं। कुल मिलाकर सामान्य परिदृश्य को हिंदी की दृष्टि से निराशाजनक ही कहा जायेगा। अभी हाल ही में केन्द्र की सरकार ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय किये हैं। जैसे, सी.बी.एस.ई. के सभी विद्यालयों में दसवीं कक्षा तक हिंदी का पठन पाठन अनिवार्य होगा तथा सांविधिनिक पदों पर बैठे हिंदी जानने वाले व्यक्ति केवल हिंदी में बोलेंगे।

अंग्रेजी के इस अभूतपूर्व प्रसार के पीछे की असलियत कुछ और ही है। उसे भी जान लेना आवश्यक है। सच यह है कि विद्यार्थियों का अंग्रेजी ज्ञान बराबर घटता जा रहा है। वर्ल्ड इंग्लिश प्रोफिशिएंसी इंडेक्स की नवीनतम रपट के अनुसार इंडेक्स में भारत का स्थान निरन्तर गिरता जा रहा है, जबकि अंग्रेजी जानने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसी वर्ष प्रकाशित एक अन्य रपट - ग्रामीण भारत में शिक्षा स्थिति (11वीं रपट) के अनुसार ऊपरी कक्षाओं में अंग्रेजी फिसल रही है। रपट के अनुसार वर्ष 2009 की अपेक्षा 2016 में अंग्रेजी के सरल वाक्यों को बोल और समझ लेने वाले 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों की संख्या में पन्द्रह प्रतिशत की गिरावट पाई गई (शैक्षिक मंथन, फरवरी 2017)। 27 सितम्बर 2016 के 'अमर उजाला' की एक रपट के अनुसार 2016 में IIT संस्थानों में प्रवेश पाये एक हजार प्रतियोगियों में तीस प्रतिशत भाषागत समस्या (इसमें हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों विकल्पों वाले थे, यद्यपि अंग्रेजी के बहुत अधिक थे) से परेशान थे। उनके लिये अलग से कोचिंग की व्यवस्था करनी पड़ी और फिर भी साठ का प्रवेश निरस्त कर देना पड़ा। अनेक सर्वेक्षणों के अनुसार केंद्रीय विद्यालयों तक में विद्यार्थियों का अंग्रेजी ज्ञान सतही रह जाता है, जिसके कारण उन्हें नौकरियां प्राप्त करने में कठिनाई होती है। मई 2012 के न्यूयार्क टाइम्स के वेब पोर्टल के ब्लॉग India Ink में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के भारतीय हिस्सेदार श्री मोहित चंद्रा ने लिखा कि अधिकांश भारतीय युवक अपने को अंग्रेजी में प्रभावशाली ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते; उनके Resume हास्यास्पद से होते हैं।

दृष्टव्य है कि Annual Status of Education Report (ASER) की नवीनतम रपट के अनुसार मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान एवं गणित विषयों को विद्यालयों में विद्यार्थी अधिक अच्छी तरह समझ पाये, जबकि अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों में इन विषयों में अनेकों सिद्धांतगत भ्रांतियां उत्पन्न हुई। इसी प्रकार National Multilingual Educational Resource Consortium के मुख्य सलाहकार श्री अजीत मोहन्ती भी कुछ समय पूर्व इसी निष्कर्ष पर पहुंचे और उन्होंने कहा कि ''अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को पढ़ाने की मौजूदा लालसा कोरी नासमझी है। कायदे से हमें उन्हें इतनी जल्दी अंग्रेजी सिखाने की होड़ में शामिल नहीं होना चाहिये। उन्हें अच्छी देखभाल, संस्कार और मातृभाषा आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दें तो बेहतर होगा।'' इस संबंध में महान भारतीय

प्रोफेसर ओम प्रभात अग्रवाल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में पूर्व अध्यक्ष–रसायन विभाग, एवं पूर्व अध्यक्ष, रसायन खंड इंडियन साइंस कांग्रेस एवं पूर्व सदस्य केंद्रीय हिन्दी समिति (भारत सरकार) रहे हैं तथा राष्ट्रीय स्तर के रसायनज्ञ हैं। उनका पता है श्री वेंकटेश भवन, 445–बी, देव कॉलोनी, रोहतक–124001 ईमेल : omprabhatagarwal938@gmail.com

वैज्ञानिक, भारत के प्रथम राष्ट्रीय प्रोफेसर, बोस–आइंस्टाइन सिद्धांत के जनक डॉ. सत्येन्द्र नाथ बोस, जिनके नाम पर ही परमाणु के एक मूल कण का नाम 'बोसान' रख दिया गया है, का निम्न कथन भी दृष्टव्य, ''मेरा मानना है कि बच्चों को विदेशी भाषा में विज्ञान को शिक्षा देना अप्राकृतिक और अनैतिक है। इस प्रकार वे तथ्यों का ज्ञान तो प्राप्त कर सकते है, परंतु विज्ञान की आत्मा से अपरिचित ही रहेंगे।'' स्मरणीय है कि डॉ. बोस की समस्त प्रारंभिक शिक्षा बंगला माध्यम से हुई थी और कोलकाता विश्वविद्यालय में वे अपने भौतिकी के छात्रों के लिये मूलतः इसी भाषा का प्रयोग करते थे। हाल ही में टाटा समूह के नये अध्यक्ष बने श्री नटराजन चंद्रशेखरन ने भी स्कूली शिक्षा मातृभाषा तमिल माध्यम से ही ग्रहण की थी।

अंग्रेजी पर इस प्रकार अनावश्यक जोर एक गंभीर सामाजिक समस्या भी उत्पन्न कर रहा है। स्वतंत्र गणतंत्र देश में अनपेक्षित रूप में दो नये प्रकार के वर्ग उभरते जा रहे हैं – अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ रखने वालों का तथा उसके ज्ञान से वंचित अति सामान्य जनता का। स्पष्टतः दूसरे के प्रति प्रथम वर्ग का दृष्टिकोण औपनिवेशिक मानसिकता वाला ही रहता है। अवश्य ही यह स्थिति एक प्रजातांत्रिक देश के लिये स्वास्थ्यप्रद नहीं है।

सच तो यह है, कि हमारा हिंदी ज्ञान भी, अंग्रेजी पर अनावश्यक बल दिये जाने के कारण घटने लगा है। 2017 की उत्तर प्रदेश बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में पांच लाख विद्यार्थी हिंदी में अनुत्तीर्ण हो गये। आज की पीढ़ी बिना अंग्रेजी शब्दों के मिश्रण के हिंदी बोल ही नहीं सकती। कभी-कभी तो वाक्य में केवल क्रियाप्रद ही हिंदी में होते हैं। अक्टूबर 2016 में विश्व की जानी मानी भाषा विशेषज्ञ एला फ्रांसिस सैन्डर्स ने टाइम्स ऑफ इंडिया को दिये गये एक साक्षात्कार के दौरान पूछे गये प्रश्न कि ''क्या आपके विचार में (अंग्रेजी के प्रभाव से) हमारा अपना शब्दकोश सीमित होता जा रहा है और हम अपने (देसी) मुहावरों का प्रयोग करने में असमर्थ होते जा रहे हैं, के उत्तर में कहा "Sadly, I think this is true."।

फिर भी हम अंग्रेजी के आकर्षण से अनावश्यक रूप से बंधे रहना चाहते हैं। आज से तीन–चार वर्ष पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष (ध्यान दें) डॉ. सुमन्यु सत्पथी ने ''द हिंदू'' (देखें 13 अक्टूबर 2012 का अंक) में एक पत्र में लिखा था, कि अंग्रेजी के प्रति हमारा मोह ''पैथेटिक'' (अंधा मोह) है। स्वागत योग्य यद्यपि आश्चर्य की बात है, कि दक्षिण भारत में हिंदी सीखने की ललक भी किंचित बढ़ रही है, जिसका निश्चित संबंध बढ़ते हुये राष्ट्रव्यापी व्यापार से है। वर्ष 2012 में दक्षिण हिंदी प्रचार सभा की 'हिंदी प्रवीण' परीक्षा में बैठने वालों की संख्या साढ़े तीन लाख थी, जबकि 2016 में यह बढ़कर छः लाख तक पहुंच गई। अब शेष भारत को भी अंग्रेजी के अंधमोह के मकड़जाल से मुक्त होना ही होगा तभी यहां मौलिक प्रतिभा का कमल पूर्ण रूप से खिल सकेगा तथा यह देश स्वाभिमान के साथ मस्तक ऊंचा कर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेगा। परंतु यह होगा तभी, जब हिंदी वाले हिंदी का मान करना प्रारंभ कर देंगे।

उस रोज दिवाली होती है।

हिन्दी कविता

❐ माननीय अटल बिहारी वाजपेयी

जब मन में हो मौज बहारों की
चमकाएँ चमक सितारों की,
जब खुशियों के शुभ घेरे हो
तन्हाई में भी मेले हों,
आनंद की आभा होती है।
उस रोज़ 'दिवाली' होती है।

जब प्रेम से मीत बुलाते हों
दुश्मन भी गले लगाते हों,
जबकहीं किसी से वैर न हो
सब अपने हों, कोई गैर न हों,
अपनत्व की आभा होती हैं
उस रोज़ 'दिवाली' होती है।

जब प्रेम के दीपक जलते हों
सपने जब सच में बदलते हों,
मन में हो मधुरता भावों की
जब लहके फसलें चावों की,
उत्साह की आभा होती है
उस रोज़ 'दिवाली' होती है।

जब तन–मन–जीवन सज जाएं
महकाए खुशबू खुशियों की
मुस्काएं चंदनिया सुधियों की,
तृप्ति की आभा होती है
उस रोज़ 'दिवाली' होती है।

पर्यावरण (दीपावली पर विशेष)

दीपावली का पर्व और प्रदूषण

❒ संजय द्विवेदी एवं सीमा मिश्रा

Deepawali is the most awaited festival in India, celebrated in the pleasant month of Kartik, that is during the onset of winters. Fireworks and crackers used during the festival leads to various kinds of pollution in the environment, which may severely effects human health. It has been observed that the level of poisonus gases such as Carbon monoxoide, Carbon di oxide, Nitrogen oxides, Ozone and particulate matters increase the several folds after Deepawali. These gases and fine particles cause respiratory and other diseases. The National Capital and other Northern States are particularly suffering with the post Deepawali smog.

दीपावली का ऐतिहासिक महत्वः दीपावली शरद् ऋतु (उत्तरी गोलार्ध) में दीप प्रज्वलित कर रोशनी का त्योहार के रूप में मनाया जाती है। यह त्योहार अध्यात्मिक रूप से अन्धकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है, और झूठ पराजित होता है। दीपावली से यह चरितार्थ होता है कि **असतो माऽ सद्गमय, तमसो माऽ ज्योतिर्गमय**, अर्थात ईश्वर हमें असत्य से सत्य की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की तरफ ले चले। भारतीय संस्कृति में वर्णन के अनुसार दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्रीरामचन्द्रजी लंका पर विजय प्राप्त करके अपने चौदह वर्ष वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे थे, तब अयोध्यावासियों ने राजा रामचन्द्र जी के स्वागत में देसी घी के दीये जलाये थे। कार्तिक मास अमावस्या की वह रात दीयों की रोशनी से जगमगा उठी थी, तब से लेकर आज तक भारतीय प्रतिवर्ष यह प्रकाश–पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। दीपावली पर्व वर्षा ऋतु की समाप्ति तथा शीत ऋतु के आगमन के समय मनाया जाता है। ऐसा मानना है कि वर्षा ऋतु में उत्पन्न हुए कीड़े, मकोड़ें दीपावली के दीयों में गिर कर तथा जलकर नष्ट हो जाते हैं एवं वातावरण शुद्ध घी एवं तेल के धुंए से शुद्ध हो जाता है अर्थात दीपावली स्वच्छता व प्रकाश के पर्व के रूप में मनायी जाती है। लेकिन वर्तमान समय में दीपावली का स्वरूप बदल गया है। अब घी एवं तेल के दीये बहुत कम जलाये जाते हैं, अधिकांश लोग दीपावली पर मोमबत्तियां जलाते हैं, साथ ही भारी मात्रा में अतिशबाजी छोड़ाते हैं।

दीपावली जनित वायु प्रदूषणः आतिशबाजी एवं पटाखे सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए खास तौर से बच्चों के लिए आकर्षण का श्रोत हैं। दीपावली पर विभिन्न रंगों एवं ध्वनियों के पटाखे न केवल शहरों में बल्की गावों में भी बड़ी मात्रा में जलाये जाते हैं। इन पटाखों से उत्पन्न शोर एवं विभिन्न प्रदूषक गैसें पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं, एवं मानव स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। विभिन्न प्रयोगशालाओं एवं केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार दीपावली में आतिशबाजी जैसेः अनार, चक्करघिन्नी, पटाखें, फूलझड़ी, महताब एवं स्नेक इत्यादि के जलाने से न केवल ध्वनि प्रदूषण होता है, बल्कि वायु में विभिन्न गैसीय प्रदूषकों जैसे कि कार्बनडाई आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, ओजोन, कार्बन मोनोआक्साइड, एसपीएम, आरपीएम की मात्रा कई गुना अधिक हो जाती है। मोमबत्तियों के जलाने से भी विभिन्न प्रकार की हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है। वर्षा नहीं होने तथा मौसम ठंडा होने के कारण उर्त्सजित गैसें तथा कण ऊपर नहीं उड़ पाते जो वातावरण में ही तैरते रहते हैं और एक परत बना लेते हैं। विगत कई वर्षों के आकड़ों के अनुसार दीपावली की आतिशबाजी के बाद हवा में कार्बन के महीन कण जिन्हें पार्टिकुलेटमेटर (पीएम) कहते हैं, की सांद्रता विभिन्न महानगरो एवं शहरों में सत्ररह गुना तक अधिक पायी गयी, जिससे महानगरों व शहरों की वायु गुणवत्ता प्रभावित हुई। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट (2014) के अनुसार देश के विभिन्न महानगरों में दीपावली के उपरान्त वायु प्रदूषण का स्तर दो से सत्ररह गुना अधिक पाया गया जिसका नीचे विश्लेषण किया जा रहा है।

महानगरों में दीपावली के उपरान्त वायु प्रदूषण का स्तरः देश के चारों महानगर पिछले कई वर्षों से वायु प्रदूषण की समस्या से जूझ रहे हैं। दीपावली के उपरान्त मौसम में आये अचानक बदलाव के कारण वायु प्रदूषकों की सांद्रता बहुत अधिक हो जाती है। दीपावली के समय पटाखों से निकले धुएं तथा सूक्ष्म कणों की परत, वाहनों से उर्त्सजित धुएं इत्यादि से सघन हो जाती है जिससे स्थिति और भी विकराल हो जाती है। देश की राजधानी दिल्ली तथा उत्तर भारत के कई शहर पिछले कई वर्षों से दीपावली के पश्चात धुंध की चादर से ढक

तालिका 1: दीपावली के उपरान्त देश के चार महानगरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक एक्यूआई की स्थित

Ekgkuxjk d uke	ih0,e0&10			
	2013	2014	2015	2016
दिल्ली	528–1378	421–790	460–593	488–939
मुम्बई	175	163	279	229
कोलकाता	1336–1660	760– >1000	258– >1000	206– 277
चेन्नई	197–215••	320	*	102– 178

*भारी वर्षा के कारण आकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

पादप पारिस्थितिकीय् एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग, सी.एस.आई.आर.–राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ–226 001
ईमेल : drs_dwivedi@yahoo.co.in; seema_mishra2003@yahoo.co.in

जाते हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आकड़ें बताते हैं कि वर्ष 2013 में कोलकाता सबसे अधिक प्रदूषित महानगर था तथा देश की राजधानी दिल्ली दूसरे नम्बर थी, परन्तु 2016 में दिल्ली न केवल देश का सबसे ज्यादा प्रदूषित महानगर, बल्कि विश्व की सबसे प्रदूषित राजधानी थी। दिल्ली के जानलेवा प्रदूषण ने विगत वर्षो के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए। यहां हवा की गुणवत्ता सबसे, निचले स्तर पर पहुँच गई (ताालिका-1)। इस तरह की स्थिति लंदन में 1952 में हुई थी जब कल-कारखानों के धुएं तथा वातावरण में आकस्मात् बदलाव, तथा ठंड एवं कम हवा का प्रवाह, के कारण धुंध की एक मोटी चादर बन गई जिससे एक ही दिन में 4000 लोगों की मृत्यु हो गयी और लगभग एक लाख लोग बीमार हो गये। इस घटना को 'लंदन स्मॉग' के नाम से जाना जाता है। इसके पश्चात वहां की सरकार एवं लोगों ने वायु की गुणवत्ता तथा स्वास्थ्य के सम्बन्ध का महत्व समझा तथा क्लीन एअर एक्ट 1956 लागू हुआ।

2016 में दिल्ली का आनंद विहार क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रदूषित रहा, यहां प्रदूषण का स्तर 497 मापा गया। आनंद विहार में पीएम-10 का स्तर 1690 तक पहुंच गया, जोकि मानक से तेरह गुना अधिक है। मंदिर मार्ग, आरके पुरम, पंजाबी बाग जैसे इलाकों में भी स्थिति भयावह रही। हवा में धुंध के कारण दृश्यता का न्यूनतम स्तर 250 मीटर तक रहा। आंकड़ों के अनुसार प्रदूषण के लिए बदनाम चीन की राजधानी बीजिंग की हवा भी दिल्ली के मुकाबले दोगुनी बेहतर थी। बीजिंग में पीएम 2.5 का स्तर 253 रहा। दुनिया में सिर्फ दो ही जगह प्रदूषण का स्तर दिल्ली के बराबर रहा। एक अमेरिका में टेक्सास के लिरेडो में और दूसरा मैक्सिको के कोआहुइला में। दिल्ली के कई इलाकों में पीएम 2.5 और पीएम 10 का स्तर मानक से सत्रह गुना से अधिक रहा।

दीपावली के उपरान्त उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों में वायु प्रदूषण का स्तरः उत्तर प्रदेश वासियों ने दीपावली का त्योहार न केवल दीप प्रज्वालित कर मनाया बल्कि इस बार जमकर पटाखे व आतिशबाजी भी चलायी। दीपावली के उपरान्त मौसम में अचानक परिवर्तन, व हवा न चलने के कारण वायुमण्डल में आर्द्रता बहुत बढ़ गयी एवं तापमान में तेजी से गिरावट हुई, जिससे उत्तर प्रदेश के कई बड़े शहर वायु प्रदूषण की गिरफ्त में आ गये। उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों जैसे- लखनऊ, फरीदाबाद, कानपुर व आगरा में पार्टिकुलेमैटर (पीएम-10 व 2.5) की सांद्रता दीपावली के पश्चात् लगभग एक सप्ताह तक मानक से (पीएम-10, 100 माइक्रोग्राम; पीएम 2.5, 60 प्रतिघनमीटर) से चार-पांच गुना अधिक रही (तालिका-2)। प्रदेश की राजधानी लखनऊ 8 नवम्बर, 2016, को देश का सबसे प्रदूषित शहर रहा। पांच नवम्बर को यहां प्रदूषित कणों (पीएम 2.5) की मात्रा 258 माइक्रोग्राम थी, जो अगले तीन दिनों में बढ़कर 491 माइक्रोग्राम हो गयी, जिससे लखनऊ देश के सभी शहरों को पार करते हुए वायु प्रदूषण में पहले स्थान पर पहुंच गया (तालिका-2)। आगरा दूसरे व कानपुर तीसरे स्थान पर रहा। लखनऊ के अलग-अलग क्षेत्रों में भी पिछले वर्षो की तुलना में 2016 में आतिशबाजी जनित प्रदूषण दो से चार गुना तक बढ़ा हुआ रिकार्ड किया गया। क्षेत्रवार आकंलन के अनुसार लखनऊ में पीएम 2.5 की मात्रा इस वर्ष इन्दिरा नगर, चौक, लालबाग तथा तालकाटोरा में 200 से अधिक थी, जबकि रात में चौक, विकास नगर, आईआईटीआर तथा अलीगंज में 700 माइक्रोग्राम से ऊपर थी। एक रिपोर्ट के अनुसार पीएम–2.5 की सांद्रता दीपावली की रात को सबसे ज्यादा चौक (792.6) में रही जबकि दिन में इन्दिरा नगर प्रथम स्थान पर था। शहर के ज्यादातर इलाकों में पीएम-2.5 एवं पीएम 10 की मात्रा मानक से कम से कम दोगुनी थी (तालिका-3 व 4)। विकासनगर में पीएम

तालिका 2: दीपावली के उपरान्त तिथिवार उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरो में पार्टिकुलेटमैटर (पीएम 2.5,) की सांद्रता (माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर)

'kgj	8 uoEcj] 2016 ¼exyokj½	7 uoEcj] 2016 ¼lkeokj½	6 uoEcj] 2016 ¼jfookj½	5 uoEcj] 2016 ¼'kfuokj½
लखनऊ	491	466	444	258
फरीदाबाद	396	343	364	212
कानपुर	428	423	427	232
आगरा	434	467	491	404
••••	•••			

तालिका 3: दीपावली के उपरान्त लखनऊ के प्रमुख मोहल्लों/क्षेत्रों में पार्टिकुलेटमैटर की सांद्रता (पीएम–2.5, माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर)

{k=	nhikoyh ¼11 uoEcj] 2015½		nhikoyh ¼30 vDVcj] 2016½	
	fnu	jkr	fnu	jkr
आईआईटीआर	86.8	236.3	138.0	750.9
अलीगंज	98.6	278.6	70.0	713.4
विकासनगर	98.6	309.0	170.2	769.9
इन्दिरानगर	116.2	282.2	341.7	685.7
गोमतीनगर	137.5	271.3	136.3	608.5
अमीनाबाद	142.9	287.8	169.1	384.5
चौक	290	578.3	330.0	792.6
तालकोटरा	116.2	467	210.7	565.49
लालबाग	185	461.6	285.3	566.50
ekud	60			

तालिका 4: दीपावली के उपरान्त लखनऊ के प्रमुख मोहल्लों/क्षेत्रों में पार्टिकुलेटमैटर की सांद्रता (पीएम–10, माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर)

{k=	nhikoyh ¼11 uoEcj] 2015½		nhikoyh ¼30 vDVcj] 2016½	
	fnu	jkr	fnu	jkr
आईआईटीआर	167.6	359.7	226.8	861.5
अलीगंज	182.9	415.6	338.9	886.9
विकासनगर	210.1	490.9	244.5	986.8
इन्दिरानगर	213.6	448.5	378.0	881.3
गोमतीनगर	230.0	406.5	205.9	788.3
अमीनाबाद	190	570	311.3	674.4
चौक	298	676.7	309.9	967.1
ekud	100			

10 की अधिकतम मात्रा 986 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर पहुँच गयी जो पिछले साल की तुलना में 495 माइक्रोग्राम अधिक थी। यही हाल एसओ 2 व एनओ 2 का रहा। दीवाली की रात सल्फर डाईऑक्साइड 15.1 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से बढ़कर 29.7 माइक्रोग्राम पहुंच गई। केन्द्रीय प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड (सीपीसीबी) की 8 नवम्बर, 2016 को आनलाइन मानीटरिंग के अनुसार, हवा में घूम रहे 2.5 माइक्रोमीटर आकार के कणों (पीएम 2.5) की मात्रा 491 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर दर्ज की गई। यह मानक से आठ गुना से भी ज्यादा थी।

आतिशबाजी का मानव स्वास्थ्य पर प्रभावः दीपावली में आतिशबाजी का सभी आयुवर्ग के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है परन्तु बच्चों, बुजर्गों एवं बीमारों को अधिक परेशानी होती है। पटाखें छुड़ाते समय बच्चे बहुत समय तक घने विशैले धुएं में खड़े रहते हैं तथा रोशनी वाले पटाखों से आंखों को भी नुकसान पहुंचता है। आतिशबाजी के कुछ प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैंः–

1. बच्चे पटाखों से अक्सर जल जाते हैं एवं विषाक्त हवा में सांस लेने से नाक और गले में जलन से पीड़ित होते हैं तथा बच्चों में अस्थमा का आघात बढ़ जाता है।
2. बहुत तेज ध्वनि के पटाखे जलाने से कभी कभी आदमी बहरे भी हो जाते हैं।
3. तेज आवाज वाले पटाखों से उल्टी, सिर दर्द एवं चक्कर आना आम बात है, इससे उच्च रक्तचाप एवं दिल की बीमारी भी बढ़ सकती है।
4. दीपावली के दौरान घबराहट, अस्थमा, खांसी, फेफड़ों मे संक्रमण इत्यादि समस्याएं बहुत अधिक बढ़ जाती हैं। जिससे लोगों को सांस लेने में बहुत परेशानी होती है।
5. पटाखों तथा फुलझड़ियों एवं मेहताब के तेज एवं कृत्रिम प्रकाश के कारण आंखों को क्षति पहुंचती है।

आतिशबाजी के धुएं में पार्टिकुलेट मैटर के अतिरिक्त बहुत सी विशैली गैसें भी उत्सर्जित होती हैं जिनका स्वास्थ्य पर लम्बे समय तक प्रभाव रहता है।

1. **सांस के रोग का खतराः** प्रदूषित वायु से सांस के मरीजों की परेशानी बढ़ सकती है, जिसके कारण सांसों में घुटन होगी। मरीजों की छोटी सी लापरवाही उनकी सांस की बीमारी को बढ़ा सकती है। बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के साथ ही सांस के मरीजों की छोटी सी लापरवाही बीमारी को उभार सकती है, दीवाली के बाद कुछ दिनों तक अस्पतालों में सांस व आंखों के मरीजों की संख्या में अचानक इजाफा होता है। प्रदूषित हवा बच्चों व बुजुर्गों के लिए घातक होती है, क्योंकि इस उम्र में फेफड़े कमजोर होते है, लिहाजा प्रदूषित कणों के फेफड़ों में पहुंचने पर दमा के साथ कई अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। दीपावली के बाद पिछले दस दिनों में वायु प्रदूषण की वजह से अस्थमा का अटैक पड़ने का खतरा 20 से 25 प्रतिशत तक अधिक बढ़ गया है।
2. **आंखों में जलन** : वायु प्रदूषण से वायु मण्डल में धुंध की फैली चादर लोगों को बीमार बना रही है। प्रदूषित आबोहवा से आंखों में जलन लोग महसूस कर रहे हैं। साथ ही मुँह की त्वचा पर भी इसका असर हो रहा है।

आतिशबाजी के धुएं में पाये जाने वाले मुख्य वायु प्रदूषक एवं उनका प्रभावः

Ø0 l0	ok;q çn"kd xSl	çHkko
1.	कार्बन डाई ऑक्साइड••	फेफड़ों से संम्बन्धित समस्याएं
2.	नाइट्रोजन ऑक्साइड	सांस की परे ानी व आंखों में जलन
3.	ओजोन	सांस की बीमारी, गले में खरा ा, त्वचा सम्बंधी रोग
4.	कार्बन मोनो ऑक्साइड	सांस के रोग, मास्तिष्क की िराओं को नुकसान
5.	एसपीएम	सांस के रोग, आंखों में जलन की िकायत
6.	आरएसपीएम	दमा, अस्थमा, त्वचा, दिल की धमनियों को नुकसान

वायु प्रदूषण के प्रभावों से बचने के लिए निम्नलिखित प्रयास करने चाहिए।

1. सांस के मरीज को सुबह और शाम को घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए
2. मास्क लगाकर निकलें
3. हरी सब्जियों का सेवन बढ़ा दें
4. थोड़ी परेशानी होने पर सांस के मरीज डॉक्टर से मिलें
5. खांसी या गले में खराश को बिलकुल भी नजरअंदाज न करें
6. घूप बत्ती, क्वायल, लकड़ी आदि न जलाये
7. कृत्रिम बारिश पर भी विचार किया जाय

वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपायः

दीपावली के समय बढ़ते प्रदूषण के प्रमुख कारण, वातावरण में अचानक परिवर्तन के साथ थ्रेशर से फसलों की कटाई, खेतों में पुआल को जलाने तथा दीपावली की आतिशबाजी हैं। अतः इस परिपेक्ष्य में सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए पर्यावरण विभाग की ओर से प्रदूषण की रोकथाम के लिए जारी अधिसूचना का कड़ाई से पालन करने का आदेश दिया। अधिसूचना के मुताबिक खेतों में फसलों को जलाने पर रोक, तेज आवाज वाले जनरेटरों व मोटरों पर प्रतिबन्ध, डीजल के बड़े

जनरेटरों पर रोक लगा दी। वायु प्रदूशण को कम करने के लिए कृत्रिम बारिश पर भी विचार किया गया। व्यक्तिगत स्तर पर भी लोगों को प्रयास करने चाहिए जैसे कि पत्तियां न जलायें एवं गलियों में कूडा, प्लास्टिक व टायर इत्यादि न जलायें।

1. वायु प्रदूषण से निपटने के लिए लगाएं यह पौधे

हरियाली यूं ही दिल-ओ दिमाग को सुकून नहीं देती बल्कि पेड़-पौधों से आंखों को शीतलता व सांस के लिए फेफड़ों को शुद्ध हवा भी मिलती है। वायु प्रदूषण से प्रभावित क्षेत्रों एवं शहरों के घरों, पार्कों एवं सड़क के किनारे कुछ विशिष्ट प्रकार के प्रदूषण अवशोशक पौधे लगाये जाएं तो हमें प्रदूषित हवाओं से काफी हद तक राहत मिल सकती है। इसके अतिरिक्त खाना पकाना, सफाई के उत्पाद, धूम्रपान, परफ्यूम एवं विभिन्न पेन्टस इत्यादि अतःस्थल प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं घरों में उपरोक्त गतिविधियों से विभिन्न हानिकारक गैसें जैसे कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बन डाईआक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड एवं उड़नशील कार्बनिक पदार्थ उत्पन्न होते हैं। ये हानिकारक गैसें घरों में एकत्रित होती रहती हैं। इन विशैली गैसों के अवशोशण में पौधे बहुत सहायक होते हैं। वायु प्रदूषण एवं पौधों पर आधारित विभिन्न शोधों के अनुसार कुछ प्रदूषण अवशोषक एवं प्रदूषण रोधी पौधे चिहिन्त किये गये हैं।

क- अंतःस्थल वायु प्रदूषण के नियन्त्रण हेतु आम घरेलू पौधे

1. **स्नेक प्लांट** : यह एक ऐसा पौधा है जोकि आसपास की नर्सरी में आसानी से मिल जाता है। इसके लिए ज्यादा मशक्कत नहीं करनीं पड़ती है। इसकी खासियत है कि इस पौधे को रोज पानी देने की जरूरत नहीं होती और यह घर के अंदर उपलब्ध जहरीली गैंसों को सोखने और हवा को स्वच्छ बनाने का काम बखूबी करता है।

स्नेक प्लांट (Sansevieria trifasciata)

2. **ऐग्लोनिमा कोम्यूटेटमः** इसे सिल्वर क्यून व चाइनीज एवरग्रीन के नाम से भी जाना जाता है। इस पौधे की पत्तियों में हानिकारक वायु प्रदूशकों को अत्यधिक मात्रा में अवशोशित करने की क्षमता होती है। सफेद एवं हल्के पीले रंग के चकत्ते इसकी पत्तियों पर पाये जाते हैं। इस पौधे की 20 से भी ज्यादा प्रजातियां पायी जाती हैं, जोकि पत्तियों के रंग एवं आकार में भिन्न होती हैं।

ऐग्लोनिमा कोम्यूटेटम
(Aglonema commutatum)

3. **फीलोडेन्ड्रान डोमेस्टिकमः** इस पौधे की पत्तियां चिकनी एवं हाथी के कान के समान होती हैं। पूर्ण विकसित पत्तियां 56 सेमी0 तक लम्बी एवं 23 सेमी0 तक चौड़ी होती हैं। यह पौधा अंतःस्थल प्रदूषण से फारमलडिहाइड को अवशोषित कर स्वच्छ वायु उत्सर्जित करता है। इन पौधों के लिए आंशिक धूप की आवश्यकता होती है।

फीलोडेन्ड्रान डोमेस्टिकम
(Philodendron domesticum)

4. **पीस लिलीः** पीस लिली की ऊपरी पत्ती चम्मच के आकार की होती है। यह पौधा कार्यालयों एव अंतः गृह सज्जा हेतु लगाया जा सकता है। ये पौधे विभिन्न प्रदूषक गैसें जैसे बेन्जीन, फारमलडिहाइड एवं ट्राइक्लोरोइथाइलीन आदि को अवशोषित करने की क्षमता रखते हैं। एक पौधा 10 वर्ग मीटर की वायु को स्वच्छ करने की क्षमता रखता है। इस पौधे को बहुत अधिक रख-रखाव की आवश्यकता नही होती है। सप्ताह में एक बार सिंचाई करने से पौधा विकसित होता रहता है।

पीस लिली
(Spathiphyllum cochearispathum)

5. **ड्रॉसिना फ्रेगंसः** यह एक बहुत लोकप्रिय घरेलू पौधा है जिसे मक्के के पौधे के रुप में भी जाना जाता है। इस प्रजाति के पौधों में न केवल बेन्जीन एवं फारमलडिहाइड को अवशोषित करने की क्षमता होती है बल्कि ये ज़ायलिन एवं टायलिन गैसों को भी अवशोषित करते हैं। ये पौधे उज्जवल प्रकाश तो पसंद करते हैं, लेकिन सीधे धूप में रखने से झुलस जाते हैं।

ड्रॉसिना फ्रैगंस (Dracena fragans)

6. **बोस्टन फर्न:** बोस्टन फर्म पौधे के लिए अधिक धूप नहीं चाहिए बल्कि थोड़ी सी ही रोशनी में पनप जाता है। इस पौधे की खासियत है कि यह फॉर्मल्डेहाइड और जाइलिन प्रदूषकों को घर के अंदर ही आसानी से नष्ट कर देता है। बेस्टन फार्म पौधा देखने में भी काफी आकर्षक लगता है।

बोस्टन फर्न (Nephrolepis exaltata)

7. **स्पाइडर प्लांट:** घर के अंदर लगने वाले इन पौधों की पत्तियों के किनारे गहरे हरे रंग के होते हैं एवं मध्य भाग सफेद रंग का होने के कारण यह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्शित करता है। ये पौधे कार्बन मोनो ऑक्साइड को अवशोषित करने की क्षमता रखते हैं।

स्पाइडर प्लान्ट (Chlorophytum comosum)

ख- ब्राह: स्थल वायु प्रदूषण के नियन्त्रण हेतु पौधे

1. **गार्डन मम:** गार्डन मम एक सुंदर और सस्ता फूल देने वाला पौधा है, जो की आसानी से उपलब्ध है। इसे घर के आंगन में लगाया जाए तो आसपास की हवा को स्वच्छ करने में मददगार साबित होता है। इससे हवा में मौजूद अमोनिया व बेन्जीन जैसे खतरनाक प्रदूषक नष्ट होते हैं। इसे पीले रंग का अजूबा भी कहते हैं।

गार्डन मम

2. **ड्वार्फ डेट पाम:** ड्वार्फ डेट पाम पौधे को पिगमी डेट पाम या फीनिक्स रोएबेलिनी भी कहते है। इसे उगाना आसान है और बहुत कम देखभाल की जरूरत होती है। ड्वार्फ डेट पाम पौधे के माध्यम से भी वायुमॅडल में मौजूद खतरनाक गैसों से निबटने में मदद मिलती है।

ड्वार्फ डेट पाम (Phoenix roebelenii)

3. **डेबिल्स आइवी:** डेविल्स आइवी पौधा आसानी से पाए जाने वाला मनी प्लांट का प्रकार है जोकि जल्द ही विकसति हो जाता है। यह हवा में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड और बेजीन आदि को सोखने का काम करता है। आकर्षक भी लगता है।

डेबिल्स आइवी (Epipremnum aureum)

सन्दर्भ:

दिपावली फैस्टिवल, एम्बीयन्ट एयर क्यालिटी एण्ड नोआइस लेबिल्स् (2013) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नई दिल्ली।

दिपावली फैस्टिवल, एम्बीयन्ट एयर क्यालिटी एण्ड नोआइस लेबिल्स् (2014) केन्द्रीय प्रदूशण नियंत्रण बोर्ड नई दिल्ली।

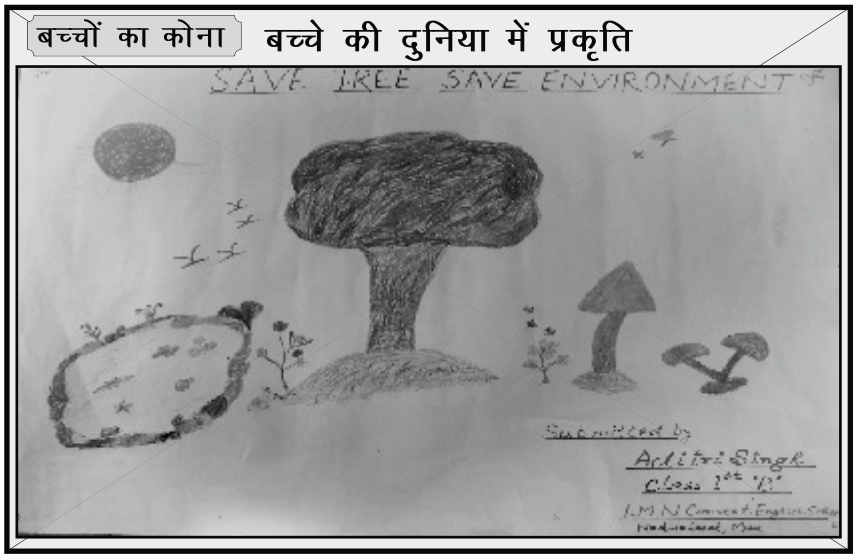

चित्रांकन, आदिति सिंह, कक्षा-1

रिपोर्ट

तम्बाकू जनित रोग एवं निदान

❒ सूर्यकान्त त्रिपाठी

This article explores the adverse effects of tobacco chewing on human health. Use of tobacco in either form causes physiological disorders on human being which includes deadly diseases like cancer of lungs, livers, colon and T.B. etc. Methods to get rid off from tobacco disorders have also been discussed.

WHO द्वारा पूरी दुनिया मे तम्बाकू निषेध के लिए प्रति वर्ष विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई को मनाया जाता है। इस अवसर पर के. जी.एम.यू., लखनऊ के रेस्पाइरेटरी मेडिसिन विभाग मे एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमे मुख्य अतिथि विधायक श्री अविनाश त्रिवेदी व चिकित्सा विश्वविद्यालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रो0 एस0 एन0 शंखवार उपस्थित थे। इस चिकित्सा जागरूक कार्यक्रम मे विभागाध्यक्ष एवं इण्यिन चेस्ट सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा सूर्यकान्त (लेखक) ने उपस्थित रोगियों व परिजनो को सम्बोधित करते हुए बताया कि भारत मे करीब 18 करोड़ लोग तम्बाकू का सेवन करते हैं। तम्बाकू की वजह से 40 तरह के कैंसर व 25 तरह की अन्य बीमारियां होती है। क्रोनिक बौन्काइटिस, व सॉस की अन्य बीमारियां हदृय रोग, मानसिक रोग, नपुंसकता, स्ट्रोक जैसी अन्य गंभीर बीमारियां भी तम्बाकू की वजह से होती है जिससे करीब 10 लाख मौतें प्रतिवर्ष पाई गई है। परोक्ष धूम्रपान या पैसिव स्मोकिंग भी उतनी ही नुकसानदेह है जितनी की प्रत्यक्ष धूम्रपान। बीड़ी/सिगरेट मे 4000 प्रकार के खतरनाक रसायन होते है, जिसमे 50 कैंसर को जन्म देने वाले है।

इस सामारोह मे डा0 राजीव गर्ग, डा0 आनन्द श्रीवास्तव, डा0 दर्शन कुमार बजाज, डा0 अजय कुमार वर्मा, डा0 वेद प्रकाश तथा डा0 विनय गुप्ता भी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अंश वेलफेयर फाउडेशन द्वारा तम्बाकू के विरोध मे आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता मे प्रतिभागी बच्चों को रेस्पाइरेटरी मेडिसिन विभाग द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। इस प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान नयन मित्रा द्वितीय स्थान प्रस्तुति श्रीवास्तव व तृतीय स्थान निधि सिंह ने प्राप्त किया। मसीहा कैंसर फाउन्डेसन की डा0 समीरा रिजवी को भी सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन डा0 ज्योति बाजपेई द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत मे धन्यवाद ज्ञापन डा0 दर्शन कुमार बजाज द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर डा0 सूर्यकान्त ने बताया कि विभाग द्वारा तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला इत्यादि को छुड़ाने हेतु एक 'टोबैको सिजेशन क्लिनिक' का संचालन किया जा रहा है।

बच्चो द्वारा बनाये पोस्टर का अवलोकन करते हुए डा0 सूर्यकान्त एवं अन्य अतिथिगण

तम्बाकू के विरोध मे बच्चो द्वारा बनाये गये पोस्टर प्रतिभागियो का डा0 सूर्यकान्त एवं विधायक अविनाश त्रिवेदी द्वारा सम्मान।

धूम्रपान, नुकसान ही नुकसान कैसे हो धूम्रपान मुक्त भारत

धूम्रपान आज के समय में फैल रही अधिकांश बीमारियों के पीछे एक बड़ी वजह है। इस की लत का प्रसार एक दुलर्भ महामारी का रूप ले चुका है। धूम्रपान से न सिर्फ व्यक्तिगत, शारीरिक एवं बौद्धिक ह्रास हो रहा है अपितु समाज पर भी इसके दूरगामी, व्यक्तिगत, सामाजिक एवम् आर्थिक, दुष्प्रभाव दिखाई देने लगे है। अकबर के शासन में पुर्तमाली पहली बार तम्बाकू लेकर भारत आये थे। जहाँगीर के शासनकाल में इसके उपभोग को नियंत्रित करने के लिए इस पर भारी मात्रा में कर लगाये गये पर सदियां बीत गयी तम्बाकू व्यापार और उपभोग पर लेशमात्र भी अंकुश न लगा।

विकसित देशों में धूम्रपान के विषय में जागरूकता के परिणामस्वरूप धूम्रपान का औसत गिरता जा रहा है। लेकिन विकासशील देशों में अभी भी धूम्रपान के सम्बन्ध में चेतना की कमी है। वर्तमान में विश्व में लगभग हर साल 1 करोड़ लोग तम्बाकू के कारण मौत के घाट उतर जाते है। अगर यही स्थिति रही तो वर्ष 2020 तक लगभग 1.64 करोड़ लोग धूम्रपान की लत के शिकार हो जायेंगे। विश्व में होने वाली मृत्यु में तम्बाकू के उपभोग के कारण 60 लाख व्यक्तियों की प्रति वर्ष मृत्यु हो जाती है। इसमें से 20 लाख विकासशील देशों से सम्बन्धित है। अकेले भारत में 10 लाख लोग तम्बाकू सेवन के चलते विभिन्न कारणों से मौत के घात उतर जाते है। हालात यह है कि गैट्स (GATS 2010) की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में करीब 12 करोड़

प्रोफेसर सूर्यकान्त त्रिपाठी, किंग जॉर्जचिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ के रेस्परेटरी मेडिसिन विभाग में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं। वे तम्बाकू निषेध क्लीनिक, के0जी0एम0यू0 के समन्वयक तथा इंडियन चेस्ट सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इंडियन सोसाइटी अगेंस्ट स्मोकिंग के पूर्व महासचिव, भी है। वे अपने कार्यों एवं भाषणों से तम्बाकू निषेध एवं इसके स्वास्थ्यजनक खतरों के प्रचार प्रसार के लिए विख्यात है।

वयस्क सिगरेट और बीड़ी का सेवन करते है।

2015-2016 के आंकड़ों के अनुसार तम्बाकू उत्पादों से सालाना 31,000 करोड़ रूपये कर के रूप में प्राप्त होते है। दूसरी और आंख खोलने वाला तथ्य यह है कि इससे जुड़ी बीमारियों से ग्रस्त 35-59 साल के बीच के लोगों पर ही एक लाख करोड़ से अधिक की धनराशि इलाज व अन्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष खर्चो के रूप में हो जाती है। लाखों लोग तम्बाकू की खेती और व्यापार से अपनी आजीविका कमाते है। ऐसे में स्वभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि इन विराधाभासों के बीच हल कहाँ है। दरअसल तम्बाकू की समस्या का हल हर स्तर पर इच्छा शक्ति से जुड़ा हुआ है। फिर चाहे यह इच्छाशक्ति तम्बाकू के लती की हो, उससे निजात दिलाने की कोशिश करने वाले उसके घरा वालों की हो अथवा नियम कायदे कानून और हमारी सेहत की निगहबान सरकारो की। बहुत साल पहले हैदराबाद में तम्बाकू किसानों को सम्बोधित करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेई जी ने कहा था कि क्या अच्छा हो की तम्बाकू की जहरीली खेती को फूलों की खेती में तब्दील कर दिया जाये। जाहिर है कि ऐसे कई मौलिक उपाय तम्बाकू से आजीविका कमाने वाले हजारो लाखों लोगों के लिए किए जा सकते है।

धूम्रपान से होने वाले प्रभाव

धूम्रपान के इस्तेमाल से 4000 हानिकारक रासायनिक पदार्थ निकलते है, जिनमें निकोटीन और टार प्रमुख है। शोध द्वारा 50 रासायनिक पदार्थ कैंसरकारी पाये गये है। विश्व भर में होने वाली मृत्यु में 50 प्रतिशत मौतों का कारण धूम्रपान है। तम्बाकू सेवन और धूम्रपान के परिणामस्वरूप रक्त का संचरण प्रभावित हो जाता है, ब्लड प्रेशर की समस्या हो जाती है, सांस फूलने लगती है ओर नित्य क्रियाओं में अवरोध आने लगता है। हमारे देश में महिलाओं की अपेक्षा पुरूष अधिक धूम्रपान करते है। जब कोई धूम्रपान करता है तो बीड़ी या सिगरेट का धुआं उसको पीने वाले के फेफड़े में30 प्रतिशत जाता है व आस–पास के वातावरण में 70 प्रतिशत रह जाता है, जिससे परिवार के लोग और उसके मित्र प्रभावित होते है, जिसको हम परोक्ष धूम्रपान कहते हैं।

सिगरेट की तुलना में बीड़ी पीना ज्यादा नुकसानदायक होता है। बीड़ी में निकोटीन की मात्र कम होने के कारण निकोटीन की लत के शिकार लोगों को इसकी आवश्यकता बार-बार पड़ती है। धूम्रपान से होन वाली प्रमुख बीमारियां है :-

ब्रॉनकाइटिस, एसिडिटी, टीबी, ब्लडपेशर, हार्ट अटैक, फॉलिज, नपुंसकता, माइग्रन, सिरदर्द, बालों का जल्दी सफेद होना आदि।

इससे लगभग 40 तरह के कैंसर भी हो सकते हैं जिसमें प्रमुख है : मुँह का कैंसर, गले का कैंसर, फेफड़े का कैंसर, प्रोस्टेट का कैंसर, पेट का कैंसर ब्रेन ट्यूमर आदि।

यदि महिलायें गर्भावस्थ के दौरान परोक्ष या अपरोक्ष रूप से धूम्रपान करती हैं तो उनके होने वाले नवजात शिशु का वजन कम होना, गर्भाशय मे ही या पैदा होने के बाद मृत्यु हो जाना व पैदाइशी बीमारियाँ होने आदि का खतरा बना रहता है। धूम्रपान से हो रहे विभिन्न प्रकार के कैंसरों में विश्व में मुख का कैंसर सबसे ज्यादा है। (33 प्रतिशत)। तम्बाकू के कारण 45 लाख लोग प्रतिवर्ष हृदय रोग से पीड़ित होते है और 40 लाख लोग प्रतिवर्ष फेफड़े से संबंधित बीमारियों से ग्रसित हो जाते है।

धूम्रपान की लत के कारण

बीड़ी या सिगरेट के धुएं में मौजूद निकोटिन व अन्य विषैले तत्व हमारे मस्तिष्क में लगभग 10 से 19 सेकेंड में पहुंच जाते है। निकोटन सर्वप्रथम मस्तिष्क के मध्य भाग को प्रभावित करता है। जिसके कारण निकोटिन से अभिग्राहक (रिसेप्टर) सक्रिय हो जाते है तथा डोपामीन एवं नारएपीनेफ्रिन (तंत्रिका संचारक) का अधिक स्राव होने लगता है। यही कारण है कि हमें अच्छा महसूस (फील गुड) होता है। इसके कारण हमारे सोचने समझने और कार्यपद्धति में बदलाव होने लगता है। यह सब केवल कुछ समय के लिए होता है क्योंकि निकोटिन का कार्यकाल आधे घंटे से दो घंटे के बीच का होता है। इसके बाद आपको पुनः इसकी जरूरत महसूस होने लगती है। यह स्थिति बाद में तम्बाकू की लत में तब्दील हो जाती है।

लोगो में धूम्रपान करने के बहुत से कारण है जैसे कि उत्तेजना, इसका स्वाद जानने की इच्छा व चिंता से मुक्ति आदि हैं, ऐसा मानना है कि इससे तनाव भी कम होता है। इसका लोगों तक पहुंचाने का सबसे बड़ा कारण है प्रचार तथा कुछ लोग इसे वैभव का प्रतीक मानते है। युवा वर्ग में तो यह इस कदर हावी होता जा रहा है कि युवा वर्ग इसके बिना अपना जीवन बेकार मानते हैं और जब एक बार आप धूम्रपान करने लगते हैं तो आपको इसकी लत लग जाती हैं तब आप महसूस करते हैं कि यह आपके जीवन में बहुत खास और महत्वपूर्ण है। इसकी लत ब्राउन शुगर, अफीम व हिरोइन जैसे नशों से भी ज्यादा होती हैं।

धूम्रपान बन्द करने के फायदे

धूम्रपान बन्द करने के एक वर्ष के भीतर दिल की बीमारियों की सम्भावना 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। फेफडे का कैंसर होने की सम्भवना 10 से 15 वर्षों में 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। शरीर में रक्त का संचार रूप से होने लगता है और शरीर में आक्सीजन की मात्रा अच्छी हो जाती है, ब्रान्काइटिस व श्वसन तंत्रके अन्य रोगों की सम्भवना भी काफी कम हो जाती है। थकान कम होती है और मन प्रसन्न रहता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास हाता है।

धूम्रपान बन्द करने से फायदे ही फायदे है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आपका आत्मवश्विास भी बढ़ेगा। स्वस्थ्ज्ञ नागररिक ही देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखेगें।

धूम्रपान की रोकथाम

धूम्रपान सेवन से हो रहे दुष्प्रभावों को देखते हुए भारत सरकार ने कुछ व्यापक कदम उठाए। इस श्रृंखला में COTPA Act 2003 के अंतर्गत तम्बाकू या उससे बने पदार्थो का प्रचार प्रसार खरीद फरोख्त (बिक्री) एवम् वितरण पर सख्ती से रोक लगाने की बात की गई थी। 31 मई 2004 विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर इस कानून को कार्यान्वित किया गया।

सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान केलिए पूर्ण पाबंदी और स्कूलों, अस्पतालों के आसपास बिक्री पर रोक इसी के क्रम में

उठाये गये कुछ कदम है। भारत सरकार ने हाल में ही इसी क्रम में तम्बाकू उत्पादों के पैक पर 85 फीसी तम्बाकू विरोधी सचित्र चेतावनी रखने का निर्णय लिया है। तम्बाकू मुक्त भारत बनाने के लिए, तम्बाकू की खेती को पूर्ण रूप से बन्द कर वैकल्पिक फसल करनी होगी, इससे जुडे किसानों व व्यवसाइयों का भी पुर्नवास करना होगा। यही एक मात्र विकल्प है। विश्व समुदाय के लोंग भी इस गम्भीर विषय पर एकजुट है। इसके लिए वर्ष 1994 में एक विश्व संगोष्ठी में सुझाव दिया गया कि धूम्रपान वाले उत्पादों पर टैक्स की बढ़ोतरी कर देनी चाहिये, स्वास्थ्य सम्बन्धी दिक्कतों को बताना चाहिए तथा इसके अंदर निकोटीन की मात्रा को कम कर देना चाहिए। अतः इसके लिए तम्बाकू रोधी प्रचार करना आवश्यक है जैसे किः–

1. स्कूलों में बच्चों का प्रोग्राम
2. कार्यालय में कम्युनिटी प्रोग्राम
3. ग्रामीण और पिछड़ों इलाकों में लघु फिल्म दिखा कर
4. सिनेमा हॉलों/किसी महोत्सव और मेलों में लघु पिक्चर का आयोजन करके।
5. नुक्कड़/नाटक/खेलकूद/पोस्टर इत्यादि।

Spritiualism

Anuvrat : A Novel Concept

❒ **Amit Kumar Chauhan**

The concept of anuvrat was given by a Shree Acharya Tulsi. The Anuvrat Movement, was a movement aimed at ushering in, and promoting, the values of morality. It was an alternative mean to achieve a peaceful world. Anuvrat does not interfere in a person's individual religious beliefs. It is not interested in knowing the mode of worship an individual follows or the sacred name he recites. Anuvrat Literally means "small vows".It encourage people to follow some basic principles of moral values. Anuvrat has already created a deep impact on Indian society. It has been warmly welcomed by all sections of people. The main reason for it to be popular is that it is based on non-sectarian principles. Environmental Issues. However, the problems related to the environment are becoming bigger day by day and deaccelerating the pace of achieving peaceful world. It is strange but a bitter truth that human life is encircled by its karma which he performs on the earth and by polluting the environment humans are digging their own grave. There isn't any doubt that we have done economically good in the recent past and almost all countries around the world want to invest in India but this development comes at the cost of environment. As we know this accelerated development has caused negative impacts on the environment and humans, this resulted in high mortality and morbidity rate and increased number of hospital visits. Thus, it is imperative to take actions to stop this and follow a right path, we need to understand that if there is no oxygen and food then we cannot eat money to survive on earth. Although development is also important for humans and we can achieve both development goals and safe-peaceful environment if we focus on sustainable development which can be done by making small promises to ourselves and meeting our daily goals.

How anuvrat can help in achieving sustainable development?

The anuvrat not only focuses on the character building only it covers many aspects one such aspect is given in its 11th code of conducts which implies that "I shall remain vigilant towards the problem of environment" I will not cut down trees and I will not waste-water. Industrialization cause maximum damage to forest and water and to overcome these challenges we need to bring changes in our daily life as we cannot expect a big positive change in seconds. It is obvious that to achieve some bigger goals we need to work continuously and take some small steps in the right direction. These small steps can be accomplished by anuvrats like not to use plastic bags which do not degrade, using dustbin, not wasting water, planting a tree per year and keeping our surrounding clean. It is well known that long journey can be completed by small steps. Therefore, the sooner we learn from this and practice it in our daily routine, the better it would be for the well being of mankind.

Amit Kumar Chauhan is Research Fellow, School for Environment and Earth Sciences, Central University of Punjab, India,
Email: amitchauhanevs@gmail.com; amit.chauhan013@gmail.com

विचारधारा

विकास की गाँधीवादी विचार धारा

❒ सुनील पाण्डेय

Mahatma Gandhi was an unique visionary and rare philosopher of our time. His concepts on sustainable rural development, Ahinsa, co-operatives, spiritualism and cleanness provide way to a new and sustainable India. He is becoming. More and more relevant day by day.

गाँधी जी की विचार धारा किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं कहीं जा सकती है। उन्होंने स्वतन्त्रता दिलाई अहिंसा की विचार धारा अपना कर जिसका दुनिया ने लोहा माना। तत्पश्चात् उन्होंने दलितों के उत्थान हेतु बीड़ा उठाया तथा उनको 'हरिजन' कहा। उन्होंने स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया। वे मशीनीकरण के विरोध में थे। जीवन से सम्बन्धित लगभग सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर गाँधी जी की अपनी एक विचारधारा रही है। कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जिस पर उन्होंने अपने विचार न प्रकट किए हों।

ग्रामीण विकास को लेकर भी उनके कुछ विचार रहे हैं। जो कि विकास हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ग्रामीण विकास के प्रति उनका दृष्टिकोण जन केन्द्रित होने के साथ–साथ व्यापक भी रहा है। इस दृष्टिकोण की नींव सत्य, अहिंसा एवं लोक कल्याण के सिद्धान्त पर आधारित थी। गाँधी जी गीता से प्रभावित होने के साथ–साथ रस्किन एवं टालस्टाय से भी बहुत प्रभावित थे। उन्होंने विकास हेतु नैतिकता एवं आध्यात्मिकता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया एवं जोर दिया।

गाँधी जी का स्पष्ट कहना था कि वास्तविक भारत गॉवों में बसता है न कि शहरों में। अतः ग्रामीण पुनर्निर्माण तभी हो सकता है जब ग्रामीणों का शोषण न किया जाए। वे शहरवासियों द्वारा ग्रामवासियों के शोषण को अपराध की दृष्टि से देखते थे। स्वदेशी वस्तुओं संस्थाओं एवं सेवाओं के उपयोग की प्राथमिकता गाँधीवादी विचारधारा में परिलक्षित होती है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि गाँधीवादी विचार धारा आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की समर्थक प्रतीत होती है। गाँधी जी का मानना था कि समाज का सर्वप्रथम उद्देश्य नैतिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ मानवीय शान्ति एवं सुख होना चाहिए। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु राजनीतिक एवं आर्थिक शक्तियों के विकेन्द्रीकरण किया जाना आवश्यक है। इस आवश्यकता की झलक गाँधीवादी विचार धारा में भी दिखती है जब वे विकेन्द्रीकरण की बात करते हैं।

गाँधी जी ने खादी के उपयोग पर जोर दिया। उनके अनुसार, खादी उत्पादन एवं उपभोग दोनों का साधन है उन्होंने ग्रामीण उद्योगों जैसे कि- हाथ कुटाई, साबुन निर्माण खाद्य तेलों के बीजों की कुटाई चर्मशोवन इत्यादि को बढ़ावा देने की बात की। जाहिर है कि इसके पीछे उनकी मंशा यह थी कि यदि ग्रामीण उद्योग सशक्त होंगे तो देश की अर्थव्यवस्था स्वतः ही सशक्त हो जायेंगे वे मानव श्रम के समर्थक थे। वे मशीनों के प्रयोग के पूरी तरह खिलाफ नहीं थे परन्तु उनका कहना था कि मशीनों का प्रयोग उसी सीमा तक उचित है जब तक कि वे रोजगार एवं जीवन स्तर को प्रभावित न करें। और मशीनें भी स्वदेशी होनी चाहिए।

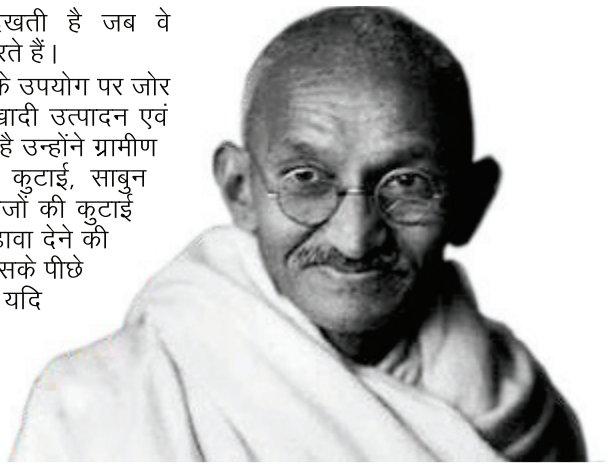

गाँधीवादी विचार धारा गॉव को गणराज्य मानने के पक्ष में थी। गाँधी जी का मानना था कि ग्राम पंचायत के पास सुरक्षा सहित अन्य मामलों का प्रबन्धन रहना चाहिए। पंचायत से यह आशा लगाई गई कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सफल संचालन हेतु आवश्यक कार्य करें। शिक्षा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जैसे कार्य भी ग्राम पंचायत को करना चाहिए। यह स्मरणीय तथ्य है कि गाँधी जी के विचारों को आधार मानकर 73वें संविधान संशोधन द्वारा 1992 में पंचायती राज संस्थाओं को वैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

गॉधी जी सहकारिता को ग्रामीण विकास हेतु आवश्यक उपकरण मानते थे। उनका स्पष्ट मानना था कि कृषि क्षेत्र में सहकारिता बढ़ाकर जोत का आकार और विभाजन को रोका जा सकता है साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी सहकारिता बढ़ाने की बात की जैसे- बुनाई सहकारिता, दुग्ध सहकारिता साख सहकारिता। भारत देश गाँधी जी की इस अपेक्षा पर खरा उतरा है। यहाँ सहकारी संस्थाओं का विश्व में सबसे बड़ा तंत्र है जो कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। ऑपरेशन फ्लड इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

गाँधी जी न्यासिता (ज्तनेजमंीपच) को ऐसे साधन के रूप में देखते थे जिसके द्वारा समाज में व्याप्त पूँजीवादी व्यवस्था को समतावादी व्यवस्था में परिवर्तित किया जा सकता है। उनका मानना था कि भूमि ईश्वर की है।

अतः भूमि एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर समुदाय का स्वामित्व होना चाहिए। वे न्यासिता को अहिंसक पद्धति मानते थे। भू-स्वामियों को स्वेच्छा से सामुदायिक कल्याण हेतु भूमिदान करनी चाहिए, ऐसा उनका मानना था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गाँधी जी चाहते थे कि भारत पूर्व की तरफ आगे बढ़े परन्तु भारत ने पश्चिम की ओर अपना रूख किया।

गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक तर्क देते है कि भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक दशाओं में गाँधी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं परन्तु आलोचकों का कहना है कि निजीकरण, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में गाँधीवादी विचारधारा अपनाना सम्भव नहीं है।

डा0 सुनील पाण्डेय, पश्चिमी इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ईमेल : sunilpandey2616@gmil.com

व्यंग

एक गाँव की कहानी

❒ आर.सी. चौधरी

The villages in India especially in bhojpuri belt are observing many kind of people with different mindsets who thinks as per their exposure cultural level and knowledge base. Author analyse it in very light circashi ways

गर्मी की छुट्टी आते ही गांव नामक निरीह शब्द पर एक साथ कई हमले होतें हैं ...

(पहली प्रजाति हमला)

पहला हमला होता है दिल्ली, नोएडा, लोधियाना से पधारे मोहन, गुड्डू और सुग्गन, भोला, राधेश्याम, बब्बन, मुन्ना टाइप प्रजाति का.

इस प्रजाति के लोग दो साल पहले गांव छोड़ चुके होतें हैं ...

गाँव छोड़ने की वजह ये होती है कि ठीक दो साल पहले किसी ममता, बबिता, कलावती, विमला से इनकी शादी हो गयी होती है।

शादी बाद इनका दुलहिन प्रेम इतना फफाने लगता है कि ये रात को आठ बजे ही किल्ली लगाकर सो जातें हैं, और सुबह दस बजे तब उठतें हैं, जब इनके बाबूजी खेत में गोबर फेंकने के बाद, दतुवन-कुल्ला करके गाय को लेहना देने के पश्चात नहा रहे होतें हैं.

वहीं हैण्डपम्प चलाती गुड़िया से धीरे से पूछते हैं..

'गुड्डुआ उठल कि ना रे अभी ... नौ बज गइल'?

गुड़िया धीरे से मुड़ी हिलाकर 'ना' में जबाब देती है.

इस गोपनीय जानकारी के बाद इनके बाबूजी के मुख से उत्प्रेक्षा, श्लेष, यमक अनुप्रास के रस में लिपटा, लक्षणा, व्यंजना की धधकती आग में पका, जो दिव्य और ओजपूर्ण वाक्य निकलता है, वो एस्थेटिक्स के नवेदितों, पिंगल के पढ़वइयों, गजल के गवइयों के साथ हिंदी के स्वनामधन्य आत्ममुग्ध आलोचकों के लिए शोध का विषय हो सकता है....

क्योंकि उस वाक्य का आरम्भ यहां से होता है ...

'करे ! एगो गाँव में मनोहरा के बेटा जोगिन्द्रा मउगा रहे कि अब तुहीं हो गइले .. . हरे ! साला ... खाली तोरे बियाह भइल रहे कि हमरो भइल रहे रे बेहुद्दा ... ना उठबे मेहर–मऊग कहीं का ... आलसी ससुर ... मेहरी आवते इज्जत के लवना लगा दिहलें इनकर ...'

आही दादा ! इतना सुनने के बाद इस वाक्य का सबसे ज्यादा असर किसी पर होता है तो वो गुड्डुआ की मेहरारु पर होता है ...

वो तुरन्त आटा गूँथना छोड़कर लिलार से सरकते पसीने को पोछते, बिगड़ते लिपिस्टिक को ठीक करते, पेडीक्योर को कोसते अपने सइयाँ जी को जगाने जाती है..

'ए जी ... घर-दुआर बेचकर कब तक सोएंगे. जाइये न, बाबूजी गरिया रहें हैं. सुबहे–सुबह आपकी माई बहिन को याद तो करिये रहें हैं ... हमार बुढ़ महतारी को भी नहीं छोड़ रहें हैं ...'

लेकिन इस मनुहार का गुड्डुआ पर काहें कोई असर होने जाए ...

'बाबूजी को कौन सुनता है जी..?' ...

उसके कान में तो आशिकी, मोहब्बतें, दिलवाले और धड़कन के गानें एक साथ बज रहे हैं ... चूड़ी, पायल, बिंदी, सेज, सजनिया, जैसे शब्द हिलोर मार रहें हैं ... इमरान हाशमी और सनी लियोनी कत्थक कर रहें हैं ... वो धीरे से मेहरारु का बाँह पकड़ के एक आध्यात्मिक सी अंगड़ाई लेता ही है, तब तक मेहरारु खिसिया जाती है ...

'बक्क ... कोई टाइम होता है कि नहीं ? ... चौबीसों घण्टा हरदम बउराए रहतें हैं का जी ?' ...

साधो ... ये प्रक्रिया लगभग दो महीने लगातार चलती है ... और ऐसी चलती है कि एक दिन बाबूजी दिन भर गरियातें हैं ... मां दिन भर बोलना छोड़ देती है ... रात को मेहरारु रूठकर दालान में सो जाती है ...

तब इन्हें यकीन हो जाता है कि अब वो पापा बनने वाले हैं ... और ये गाँव, ये घर, ये माँ, ये बाप, ये चाँद जैसी दुल्हन, जो नइहर में लाइफबॉय से नहाती थी, पियरकी माटी से बाल धोती थी ...

यहां डभ का शैम्पू और पैंटीन का कंडीशनर माँग रही है ... ई सब मोह–माया है ... इसलिए हे तात ! शीध्र ही कुछ कमाने-धमाने का बंदोबस्त करना चाहिए ...

यही सोचकर बेचारे एक दिन बैग में एक बोतल पानी के बगल में अपने हाईस्कूल और इंटर के सर्टिफिकेट को रख लेतें हैं ... साथ ही चार पूड़ी और आम के सूखे अँचार के साथ मेहरारु के एक रूखे चुम्मे को लेकर मुँह बनाए, गर्दन झुकाए. नोएडा, सूरत और लुधियाना नामक जगह पर कमाने पहुँच जातें हैं ...

और फिर इसी जून की छुट्टी में इसलिए गांव आतें हैं, क्योंकि इसी महीने में किसी दिन इनकी सबसे छोटकी और कटाह साली का बियाह फिक्स होता है। और वो फरवरी से ही इनको फोन पर तबाह कर देती है।

'ए जीजा जी ... आप तो बड़ी वो हैं जी ... मने आएंगे नहीं हमरे बियाहवा में? तो देहीं का सब छेद खोलकर सुन लीजिए, आएंगे नहीं तो हमू आपको आज से जीजू नहीं कहेंगे ...'

बेचारे जीजू का मन इस धमकी से घबराता है ... तब तक मार्च आते ही मेहरारु कपार खा जाती है कि ...

'ए रों ... का हम नइहरे वाला झुमका अपने बहिन के बियाह में पहिनेंगे ... उहे पुरनका डिजाइन ...'

'हऊ अयरनवा (असली नाम आर्यन) के माई रेवती के सोनरा से एकदम नया डिजाइन बनवाई है ... '

लीजिए ... तब तक जून आते–आते इनके बाबूजी तबाह कर देतें हैं ...

'ए गुड्डू धान रोपवाना है ... बासमती का बिया लेना है, लेव लगवाना है ... कार्तिक में का ही टेक्टर का पइसा बाकी है ... खाद भी लेना है ... कइसे काम चलेगा ... गुड़िया बड़ी हो गयी अब उसका भी बियाह शादी होगा ... कहीं लइका देखा जाएगा की नहीं'?

बेचारे आम के अँचार जैसा सूख गए गुड्डुआ को गाँव आने के बाद समझ में ही नहीं आता कि वो साली का बियाह करे कि मेहरारु का झुमका बनवाए, धान का लेव

डा. चौधरी, पी.आर.डी.एफ., 59 कैनाल रोड, शिवपुर सहबाजगंज गोरखपुर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष हैं। लेखक ने वैश्विक अनुभव एवं तमाम देशों में नौकरी करने के बाद इस संस्था का निर्माण किया है, जो कृषि विज्ञान की नई तकनीकों का कृषि के आर्थिक लाभ एवं पर्यावरण संरक्षण तथा बेहतर पोषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रही है। ईमेलः ram.chaudhary@gmail.com

लगाए की गइया के लिए पलानी छवाए !..

(दूसरी प्रजाति हमला)

दूसरा हमला होता है ... उन संस्कारी बीटेक और ज्यादातर बीटेक्स वाले इंजीनियरों का, बीसीए, एमसीए, बीबीए, एमबीए करने वाले लौंडों का, जो हाईस्कूल के बाद ही गांव छोड़ चूके होतें हैं ... क्योंकि उनके पापा आर्मी में होते हैं ... मास्टर होतें हैं ... नेता होतें हैं ... ठीकेदार होतें हैं ... और कुछ नहीं होतें हैं तो कम से कम किसान होतें हैं ... उनका लड़का भले ही नोएडा में बारह हजार की ही नौकरी करें लेकिन गाँव में उसका भौकाल सुंदर पिचाई और स्टीव जॉब्स से तनिक भी कम नहीं होता है। ...

ये शहर में भले बासी रोटी और आचार खाकर ड्यूटी करने चले जातें हों ... लेकिन गाँव आने पर रोटी जरा सी ठंडी हुई कि तुरन्त थरिया फेंक देतें हैं ... और माँ को, बहन को, भौजाई को धमका भी देते हैं कि ... 'अईसा खाना तो मेरी कम्पनी के स्वीपर भी नहीं खाते हैं ...'

ये भले ही मेट्रो में धक्के खाते, ऑटो वाले से लड़ते, बस वाले से झगड़ते, ड्यूटी से आते हों, लेकिन गांव के लड़कों से अंग्रेजी मिश्रित हिंदी में ऐसे बतियातें हैं, मानों ठडॅ से आफिस जातें हों और फरारी से वापस आतें हों । भले ही ऑफिस की स्वीटी नामक कलीग इनको ठीक से देखती तक न हो, लेकिन भौकाल ऐसा देतें हैं मानों इलियाना डीक्रूजा के साथ डिनर करतें हों और काजल अग्रवाल के साथ लंच। शाम को आलिया की स्कूटी पर बैठकर रोज कॉफी पीने जातें हों ... और कुछ ही दिन बाद सुनील मित्तल और मुकेश अम्बानी के सगे दामाद बनने वाले हों ...

इनके भौकाल टाइट करने की मुख्य वजह ये भी होती है कि गांव में इनके तिलकहरू नामक खरीदार अपनी बेटी का फोटो लेकर आने लगतें हैं। और दस लाख दहेज के साथ एक फोर व्हीलर देने की बात करने लगतें हैं ... सो दहेज का बाजार टाइट करना जरूरी हो जाता है।

ये छान पगहा सुनातें हैं कि 'भक्क अभी दो साल शादी नहीं करनी है ... भक्क अभी तो बैंक की तैयारी करनी है ... भक्क पापा, सोच रहा था कि प्रमोशन हो जाए तब। बक्क मम्मि, अभी तो सैलरी ही नहीं बढ़ी। क्या चाचा, अभी तो मैं नितिन से चार साल छोटा हूँ तो अभी क्या जल्दी है ..?'

इधर गाँव के चनमन, मुनमुन, सोनू, रिंटू नामक लड़कों के सामने अपने दोस्तों से फोन पर बतियातें भी हैं।

'यार प्रांजल ... ओय तनिष्क, यार दिव्यांश ... गांव में कुछ जम नहीं रहा। साला न बिजली न पानी, न सड़क । ऊब गया यार ... यार टीना के साथ केएफसी वाली कॉफी बड़ी की याद आ रही । उसके साथ वो सीपी (CP) की सांझ, को मिस कर रहा बे ...'

लेकिन वहीं बेचारे इधर फेसबुक पर गाय, बैल, भैंस दालान, छरदेवाल, मुंज ऊख, का फोटो भी शेयर करतें हैं ... और सिंगल होने का रोना रोकर ये जता देतें हैं कि गाँव उनके दिल में कम दिमाग में ज्यादा बसा है ...

(तीसरी प्रजाति हमला)

तीसरी प्रजाति होती है .. उन फुआ उर्फ बुआ लोगों की... शादी के बाद इनको इंदौर वाली बुआ, अहमदाबाद वाली बुआ, जोधपुर वाली बुआ के नाम से जाना जाता है ... गांव आने के बाद इनका मुख्य काम होता है ... गांव घूमना ... और पुरुब टोला से लेकर पश्चिम टोला ... और उत्तर टोला से लेकर दक्षिण टोला तक की वो सारी रहस्मयमयी बातें पता करना जो इनकी अनुपस्थिति में आज तक प्रचारित नहीं हो पाई हैं ...

'ए सखी ... पिंटुआ बो सुंदर तो है, लेकिन नाक उसका चोख नहीं है ... और ए सखी नाटी भी है ... करिमना बो ... लम्बी तो है ... ए सखी ... नाक भी चोख है लेकिन ए सखी फेस कटिंग सुंदर नहीं है' ...

'आही ए सखी, करेक्टर तो उसका बहुत पहले से ही खराब था ... लेकिन अब इतना गिर जाएगी पता नहीं था ... ए सखी दिव्य के पापा को मेरा दुख तनिक भी बर्दाश्त नहीं होता है ... बर्तन तो मांजते ही हैं, कभी–कभार झाड़ू भी लगा देतें हैं...'

'अरे ! ए सखी, केतना मानते हैं जी तुमको दिव्य के पापा ... एक मेरे नाव्यांश के डैडी हैं कि खाना खाकर थरिया भी ठीक से नहीं रखतें हैं...'

इस व्यापक रहस्योद्घाटन के पश्चात गाँव से जाते-जाते इनका अपने भौजाई से एक दो बार झगड़ा भी हो जाता है ... जिसका मतलब ये होता है कि वो आज से नइहर झांकने भी नहीं आएंगी... जिस दिन माई मर गयी उसी दिन उनका नइहर भी मर गया ... जय सियाराम ...

(चौथी प्रजाति)

एक प्रजाति होती है हम जैसे बीएचयू, इलाहाबाद, लखनऊ यूनिवर्सिटी, जेएनयू, डीयू में तथाकथित उच्चतर अध्ययन करने वालों की ... इनका हाल ठीक ऐसा होता है जैसे किसी कार्यक्रम के बाद टेंट, सामियाना और साउंड वालों का होता है ... गांव आने के बाद इनका मुख्य काम होता है ... गैस भरवाना, बिजली का बिल जमा करना ... घर बनवाने के लिए सीमेंट खरीदना। छड़, बालू, गिट्टी का भाव पता करना ... और खेत के लिए खाद खरीदना ... साथ ही गांव के उस अति बुद्धिजीवी चाचा के उस कालजयी प्रश्न 'कब तक पढ़ोगे' ? का उत्तर भी बताना ...

साथ ही उनसे ताना सुनना ... जो पांचवी क्लास में भी तीन बार फेल होने के बावजूद ब्याज पर पैसे बांटकर बलिया या पटना शहर में दो जगह जमीन ले चूके हैं ...

'अरे ! एमो-ओमें में कुछ नही रक्खल बा बाबू ... काहें नहीं बीएड और बीटीसी किए ... पीएचडी करोगे ... भक बुड़बक ... अरे पीएचडी करके तो आज लखन पांडे का बबलूआ कोचिंग पढ़ा रहा है ... का मिलता है उसको? ... दिन भर दिस–दैट करो तो तीन हजार भी नहीं मिलता ... का करोगे पीएचडी करके... का तुमको नौकरी मिलेगी। नौकरी तो उनके लिए आरक्षित बा।

इनसे बात करने के बाद यकीन हो जाता है कि ये संसार असार है ... हम व्यर्थ पढ़ ही नहीं रहे हैं, व्यर्थ जी भी रहें हैं ... हम धरती के बोझ हैं ... इस कारण से इस रिसर्च के ख्यालात को छोड़कर जल्दी से पान, बीड़ी, सिगरेट और कमला पसन्द की दुकान खोल लेनी चाहिए ... इसी में भलाई है ...

साधो भाई, क्या कहें ... बड़े–बड़े किस्से हैं ... बड़ी-बड़ी कहानियां हैं ... लिखने लगूं तो खत्म न हो ... लेकिन गांव आते ही मेरा मन बेचौन सा हो जाता है ...

देखता हूँ कि इधर पुरुवा-पछुआ की जंग लड़ते खेतों पर, मूंग और जनेरा की पकती बालियों पर, ... गाँव के पश्चिम में बचे आखिर आम के पेड़ पर ... जेठ–आसाढ़ में तपते सिवान पर ... सावन के इंतजार में मीठे होते जामुन पर ... महुआ की डाल पे बैठी कोयल पर, न तो किसी गुड्डू का असर है, न ही किसी इंजीनियर का, न मेरे आने से कोई कहीं प्रभाव पड़ा है न अहमदाबाद वाली बुआ के जाने से कोई असर ...

गाँव अभी भी वहीं का वहीं है ... अपनी विडम्बनाओं के साथ जूझता ... वो न ठीक से शहर हो पाया है और न ही ठीक से गाँव ही रह पाया है ..! दिल्ली, नॉएडा और गुडगाँव की सूखी चकाचौंध से दूर ।

हिन्दी कविता

बारिश की तीन कविताएँ

❒ राम कठिन सिंह

जाने क्यों

जाने क्यों बारिश में बारिश, होती आज नहीं,
लेकिन जब होती है बारिश, थमती तनिक नहीं।
बादल फटें कहूँ, कतहूँ पर, बिनु पानी सब सून,
जान-माल की हानि न पाता, कोई कहूँ सुकून।
होती है, क्यों आज 'घाघ' की, कथनी सहीं नहीं,
जाने क्यों बारिश में बारिश, होती आज नहीं।
डूब मरे कितने प्यासे, हिरनों की प्यास लिये,
ऐसे भला अनिश्चित पल में, कैसे जीव जिये।
आज न क्यों मौसम जैसा, मौसम रह गया नहीं,
जाने क्यों बारिश में बारिश, होती आज नहीं।
जाने क्यों नाराज सूर्य का, पारा चढ़ा हुआ,
तापमान पहले से ज्यादा, लगता बढ़ा हुआ।
गर्मी में पहले से ज्यादा तपती आज मही,
जाने क्यों बारिश में बारिश, होती आज नहीं,
हम क्या बैठे रहे देखते यूँ सब कुछ होना,
या फिर पहल करें कुछ ऐसा पड़ न सब खोना।
चलो विचारे बैठ निकाले हल कुछ सहीं सही,
जाने क्यों बारिश में बारिश, होती आज नहीं।

अब बरसात न होती क्यों ?

अब बरसात न होती क्यों ?
जाने क्यों मम्मी बादल
अब रूठे-रूठे लगते हैं,
कभी बाढ़ के साथ कभी
फिर सूखे-सूखे रहते हैं।
उमड़-घमुड़ कर रिमझिम-रिमझिम
अब बरसात न होती क्यों?
फैली घर के भीतर-बाहर
धूल-गुबार न धोती क्यों ?
सुन पड़ता क्यों नहीं चहकना
चिडियों का बैसवारों में
लगतें है अब बौर नहीं क्यों
आम-जमुन की बारी में
कूहू-कुहू के गीत सुनाती
कोयल कहीं न दिखती है,
हुक्का पीती अब अलाव पर
बैठी भीड़ न लगती है।
चूँ-चूँ करती गौरैयों की
पाँत नहीं क्यों तारों पर,
मिट्ठू मामा राम-राम धुन
गाता नहीं इशारों पर?
दुखःद बात है, लेकिन गुड़िया
प्रश्न तुम्हारे सभी सही,
मानव की बढ़ती लिप्सा का
भुगत रही फल आज मही।
है उम्मीद तुम्हारी पीढ़ी
शायद कुछ कर पायेगी,
नष्ट न हों, प्राकृतिक सम्पदा
ऐसे कदम उठायेगी।

मेहा ने आँख क्या चुराई

मेहा ने आँख क्या चुराई
पियास जने हरनयी हुई
बीत गया जेठ और माह भी असाढ़ का
सावनी-फुहार नहीं शोर कहाँ बाढ़ का।
पोखर के पाँव है बिवाई
पियास जने हिरनयी हुई।
रूठे है मेघ जैसे गाँव के बराती
जोरि-जोरि हाथ थके बेबस धराती।
विधना ने रीति क्या बनाई,
पियास जने हिरनयी हुई
घूँट-घूँट प्यास आज बिकती दुकान में
पेट के मरीज मिलें हर किसी मकान में
पानी में आग है लगाई
पियास जने हिरनयी हुई।
मेहा ने आँख क्या चुराई।

खेद प्रकाशन

इस कविता के रचनाकार का नाम भूलवश पिछले अंक में डा. के.बी. सुब्बाराम प्रकाशित हो गया था। यह कविता प्रोफेसर राम कठिन सिंह की मशहूर कविता है, जो उनकी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'पोखर के पाँव' से ली गई है।

प्रोफेसर राम कठिन सिंह, नेफोर्ड नामक स्वयं सेवी संस्था के निदेशक हैं। वे ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक एवं लेखक हैं, तथा नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फेजाबाद से अवकाश लेने के बाद से किसानों की उपज वृद्धि के लिये उन्नत कृषि तकनीकों के प्रचार–प्रसार में सक्रिय है। उनका पता है, 1, देवलोक कालोनी, चर्च रोड, विष्णुपुरी, अलीगंज 226 022, ईमेल : rksingh.neford@gmail.com

Research

Fish Behaviour : A Vital Indicator of Stress in Aquatic Habitat

❒ Abha Mishra and Abhisweta Singh

Fish production is affected by environmental stress. The authors have studied in indicators of stress in fresh water fishes.

Term "stress" reflects as any change or modification in animal's natural or homeostatic state. It may result due to biotic and/or abiotic challenges. The abiotic threats could be chemical (toxicants, pesticides, low oxygen, pH etc.) and physical (capture, handling, transport etc.). In this speeding urbanization century, environmental contaminants such as pesticides, metals, chemicals pose serious risks to many aquatic organisms. Biotic factors that may cause stress include the presence of predators and biological change of body. Among various parameters to assess the stress level on aquatic organisms, a behavioural study has made an important place. It allows an organism to respond to different stimuli from a changing environmental condition. Amid change in water, the condition may lead to the behavioural change in fish. This behavioural change reflects stress situation. Change in behaviour directly proportional to the level of change in water and so the stress (Mishra et al., 2012; Devi and Mishra, 2013). In a long time, the modified behaviour reflects as adaptations due to change in natural environment. Fish behavioural study concerning polluted environment is important because it helps to connect physiological function with ecological abnormalities and to record their populations under stressful conditions (Scott and Sloman, 2004). The behavioural responses allow organisms to adjust their internal homeostatic mechanism under stress conditions, and its failure can lead to mortality of fish populations.

The extensive use of pesticides may induce restlessness among the fish population. Sometimes, they show rapid movement with active engulfment of air supported by a quick opercular movement to enhance water flow through gills (Parithabhanu, 2013). The fish may also show surfacing activity to compensate oxygen deficiency under stressful conditions (Sakshna and Parashari, 1982). The behavioural responses of fish not only depends on the concentration but also on the duration of exposure to toxic chemicals present in the environment. At high concentrations, the swimming movements become erratic and jerky with loss of balance. It further supported by the convulsion of gills and excessive secretions of mucous all over the body which inhibits gaseous exchange by reducing the surface area (Agular, 2004). During the longer duration of exposure, in highly polluted water the fish might show inactiveness and depigmentation. The depigmentation might be due to abnormalities in hormonal levels secreted by the pituitary gland under stressful conditions (Backström et al., 2015). Prolonged exposure to the polluted environment may affect feeding behavior such as food searching, reaction to prey, catching of prey and finding suitability of any food. It happens because the regular interaction between polluted environment and receptor elements of sensory organs disturbs their normal function of olfaction, taste and lateral line (Kasumyan, 2001). Besides pesticides, there are endocrine disrupting chemicals whose long term exposure affects brain development and reproductive behavior in aquatic organisms including fish (Mishra and Devi, 2014; Mishra and Verma, 2017). Mishra and Poddar (2014) noted the loss of equilibrium, irregular and erratic swimming movement, hitting the tank walls, excitability just before death depicting inhibition of acetylcholinesterase activity due to Dichlorvos exposure to fresh water fish, *Channa punctatus*. The fish also

Table1: Behavioral changes due to stress in fishes (*Heteropneustes fossilis)* after exposure of metal, cadmium sulfate (50mg/L) (Note: -, mild: +, moderate: ++, strong: +++).

S.No.	Behaviours	Behaviour responses in duration(Hours)				
		0 hr	24 hr	48 hr	72 hr	96 hr
1	Swimming	-	++++	+++	++	+
2	Surfacing	-	++++	+++	++	+
3	Restlessness	-	++	+++	+++	++++
4	Schooling	-	+	++	+++	++++
5	Loss of body balance	-	+	++	+++	++++

Department of Applied Animal Sciences, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University (Central University), Lucknow-226025
Email : drabhamisha@gmail.com

Table 2: Impact of methomyl on the beahviour parameter of a teleost fish, *Channa punctatus.* (None: -, mild: +, moderate: ++, strong: +++, T.C.: toxicant concentration).

Table (a): 24 hr study

T.C. ppm	Hyperactivity	Equilibrium status	Swimming rate	Convulsions	Somersaulting activity	Fin movement
0.0	-	+++	++	-	+++	+++
0.1	-	++	++	-	+++	+++
0.5	-	++	++	-	+++	++
1.0	+	++	++	-	++	++
2.0	+	++	++	-	++	++
3.0	+	++	+++	+	++	++
4.0	+	++	+++	+	++	++
5.0	+	+	+++	+	++	++
6.0	++	+	+++	+	++	++
8.0	All dead	All dead	All dead	All dead	All dead	All dead

exhibited copious mucus to neutralise the toxic effects of insecticide (Mishra and Poddar, 2014). During exposure of endosulfan to Asian swamp eel, abnormalities in behavioural responses reported such as erratic swimming, restlessness, loss of equilibrium, tremor and lethargy (Siang et al., 2007).

Similarly, other pollutant as heavy metal (cadmium combinations) causes various morphological and behavioural responses in fresh water catfish *Heteropneustes fossilis* (Table 1) (Mishra et al. 2012)

The activities like surfacing and gulping of air were found to increase with the duration of exposure of toxicant. It is an important mechanism to escape the oxygen deficiency and to meet increased energy demand to withstand toxicity.

Methomyl, a widely used contact as well as systemic insecticide belonging to a class of 'carbamates', work by inhibiting cholinesterase which is the vital enzyme for the proper functioning of nervous system. In our laboratory experiments we recorded the behavioural activities of teleost fish, *Channa punctatus* with increasing concentration and duration of exposure to methomyl. There was a loss of equilibrium status, somersaulting activity and fin movement with increasing duration and exposure of methomyl. The fish became less hyperactive showing convulsions with the increase in swimming rate when they were expose to the gradual increase in the concentration and duration of exposure of toxicant (Table 2).

Webber and Haines (2003) reported that mercury exposure to fish could alter fish predator avoidance behaviour which in turn increases their vulnerability to predation. Similarly, the olfactory response in Rainbow trout to be depressed upon exposure to mercury and copper (Hara et al., 2011). The chromium toxicity affects locomotor behaviour in *Gambusia affinis* in addition to oxidative stress

Table (b): 96 hr study

T.C. ppm	Hyperactivity	Equilibrium status	Swimming rate	Convulsions	Somersaulting activity	Fin movement
0.0	-	+++	++	-	+++	+++
0.1	++	+	+	++	+++	+++
0.5	++	+	+	++	+++	+++
1.0	++	+	++	++	+	++
2.0	++	+	++	++	+	++
3.0	+++	+	+++	++	+	++
4.0	+++	+	+++	+++	-	-
5.0	+++	-	++	+++	-	-
6.0	+++	-	++	+++	-	-

and morphological changes (Begum et al., 2006). During evaluating the LC_{50} of potassium dichromate in *Channa punctatus,* the fish became lethargic displaying erratic swimming response. Besides, such toxicants reproductive and feeding behaviour are also affected by certain toxicants. Among behavioural responses, the frequency of activity is a more sensitive measure to assess the contaminants (Little and Finger, 1990).

Apart from pesticides and chemicals, there is evidence that domestic waste water affects fish behaviour to a certain extent (Melvin et al., 2015). Fish swim faster and show rapid opercular movement with increased surfacing and gulping of air followed by coughing, in water containing the higher percentage of domestic waste. Coughing is an important response to evaluate the quality of water (Carlson and Drummond, 1978).

Thus, behavioural response serves as important indicators of contamination in the aquatic environment and helps us to assess the status of the aquatic organisms. In these aquatic organism fish is having significant place (Sharma and Shukla, 1990).

REFERENCES

Agular, L. H. (2004) Metabolical effects of Folidal 600 on the neotropical fresh water matrinxa, Bryconcephalus. Environmental research, 95: 224-230.

Backström T., Heynen M., Brännäs E., Nilsson J., Winberg S., Magnhagen C. (2015) Social stress effects on pigmentation and monoamines in Arctic charr. Behavior Brain Research, (15) 291, 103-7.

Begum, G., Rao, J.V and Srikanth, K (2006) Oxidative stress and changes in locomotor behavior and gill morphology of *Gambusia affinis* exposed to chromium.Toxicological and environmental chemistry, 88(2).

Carlson, R.W., Drummond, R.A (1978) Fish cough response-A method for evaluating quality of treated complex effluents.Water research, 12(1).

Devi, Y., Mishra, A. (2013) Study of behavioural and morphological anomalies of fry fish of fresh water teleost, *Channa punctatus* under chlorpyrifos intoxication. International Journal of Pharma and Biosciences, 4(1): 865 - 874.

Hara, T.J., Law, Y.M.C., Macdonald, S. (2011) Effects of Mercury and Copper on the olfactory response in Rainbow Trout, *Salmo gairdneri.* Journal of the Fisheries Research Board of Canada, 33(7): 1568-1573.

Kasumyan, A.O. (2001). Effects of chemical pollutants on foraging behavior and sensitivity of fish to food stimuli. Journal of Ichthyology, 41(1): 76-87.

Little, E.E, Finger, S.E. (1990) Swimming behavior as an indicator of sublethal toxicity in fish. Environmental toxicology and chemistry, 9(1): 13-19.

Melvin, D.S., Buck, R.D., Fabbro, D.L. (2016) Diurnal activity patterns as a sensitive behavioural outcome in fish: effect of short-term exposure to treated sewage and a sub-lethal PPCP mixture. Journal of Applied Toxicology 9 (36), 1173–1182.

Mishra A., Devi, Y. (2014) Histopathological alterations in the brain (optic tectum) of the fresh water teleost *Channa punctatus* in response to acute and subchronic exposure to the pesticide Chlorpyrifos. Acta Histochemica, 116:176-181.

Mishra, A., Verma, S. (2017) *In vitro* effects of chlorpyrifos on gonadotropin-induced oocyte maturation and steroidal interplay of freshwater catfish, *Heteropneustes fossilis.* International Journal of Pharmacology and BioSciences, 8(3): (B) 912-920.

Mishra, A., Poddar, A.N. (2014) Acute toxicity and behavioral response of the food fish Channa punctatus (Bloch) to an insecticide Dichlorvos. Journal of industrial pollution control, 30(2): 219-222.

Mishra, A., Kaushal, B.T., K. Singh. (2012) A toxicity study of heavy metal toxicant cadmium sulphate on behavioral and morphological changes of the fresh water fish *Channa punctatus* (Bloch). International Journal of Pharmaceutical Invention, 2(8), 8-19.

Parithabhanu, A. (2013) Pesticide toxicity and behavioural responses in the fish, *Oreochromis* mossambicus. International journal of fisheries and aquaculture sciences, 3(2): 161-164.

Sakshna, O.P., Parashari, A. (1982) Toxicity of cadmium to *Channa punctatus.* Bulletin of pure and applied sciences, vol 1:42-44.

Scott, R.G., Sloman, A.K. (2004) The effects of environmental pollutants on complex fish behavior integrating behavioural and physiological indicators of toxicity. Aquatic toxicology, 68(4): 369-392.

Sharma, V.D., Shukla, S. (1990) Behavioural dysfunction of freshwater prawn, *Macrobrachium lamarrei* (Crustacea: Decapoda) following exposure to synthetic detergent, linearalkyl benzene sulphonate. Biological Memoirs, 16(2): 58-61.

Siang, H.V., Lee, Yee, M., Chuah, Seng, T. (2007) Acute toxicity of organochlorine insecticide endosulfan and its effect on behavior and some hematological parameters of Asian swamp eel (*Monopterus albus*, Zuiew). Pesticide Biochemistry and physiology, 89(1): 46-53.

Webber, H.M., Haines, T.A. (2003) Mercury effects on predator avoidance behavior of a forage fish, golden shiner (*Notemigonus crysoleucas*). Environmental Toxicology and chemistry, 22(7): 1556-1557.

Analysis

The Purpose of Education is to Turn Mirrors into Windows

❒ Anurakti Shukla

The complete line quoted by Sydney J. Harris, a journalist, goes somewhat like this:

"Most people are mirrors, reflecting the moods and emotions of the times; few are windows, bringing light to bear on the dark corners where troubles fester. The whole purpose of education is to turn mirrors into windows."

The above spoken lines are open to myriad interpretations, apart from what the speaker intends to say. In order to comprehend the significance of the statement, one has to delve into the metaphorical implications through which the idea of true education can be obtained. Education serves multiple purposes. It helps in acquiring knowledge from various sources, it prepares a person to grow competitive, and it equips one with logic and reason to question the established norms, and can make people successful in their career. But above everything else, somehow, the true purpose of education lies in its ability to transform the microscopic views into panoramic visions, thereby inculcating progressive insight in educated minds.

The underlying thought that runs through the given statement is how education can serve a more efficacious purpose by broadening the scope and view of the intellect leading to the realization and acknowledgement of the unlimited possibilities available outside the peripheries of the realm we belong to.

"Mirror" is something that reflects the exact image of anything that appears before it, and in this context, it is symbolic of representing the world and its ways as they are. Of course, the view here is quite narrow and often stops the viewer to see things that exist beyond its boundaries. Moreover, the moods and manners of the world appear as independent entities, not in relation to the things around them and so one remains oblivious to the presence and significance of other better entities.

To exemplify, often literature is considered as a reflection of the society, where it acts as a mirror through which one can see the actual image of the society with all its diversities. However, on a different note, literature, even though it might portray the things the way they are, also offers several possibilities to look into the other aspects of the world and decipher whatever exists even outside the familiar and banal experiences of human life.

The metaphorical "window" functions almost the same as literature. A window gives an open and wider view of the scenes that are present outside the four corners of a room. Along with that, it does not restrict itself to the sights that lie just in front of our eyes but stretches out the view including everything else that co-exist with them.

Education should be such that one comes out of the cocoon of ordinariness into the realm of the extraordinary. This can be construed in different ways. Education should be able to increase the potentiality within a human being to explore and recognize the abundance of knowledge and use it for progress – progress of the self and of the society as well. Swami Vivekananda observed that "education is the manifestation of the perfection already in man". A man, through proper education, is always capable of showing broader approach to everything that gradually strengthens his perfection towards whatever he does or feels.

Education doesn't just comprise reading books, memorizing details, and writing papers to secure high ranks. A wider perspective towards education evinces that it should lead to the overall development of the human mind and heart. A really educated person would definitely break through the narrow "mirror" images of life by developing a broader sense of thought. A man's thought process should not be restricted by the limited knowledge around him. In order to gain experience, wisdom and happiness, one should be far-sighted.

In one of his stories ("The Golden Fortress"), Satyajit Ray had made an elderly utter the words which go something like: "I have kept open the windows of my heart so that light and air can always come in, keeping it fresh and alive". Taking this as an example it can be said that true education is that which can keep open the windows of the mind, helping it to attain a broader view, thus making it fresh and vibrant.

It is extremely essential for us to have a wide mental set-up because the society is what we make of it. Skewed and narrow views of life that remain captured within the mirror surface are like dead thoughts that make the world remain stagnant in every way. On the contrary, if we see through a wider window, our insight stretches increasing the possibility of thinking with a free mind, unaffected by social constrains.

A nation like India, even after decades of its independence, is fettered by evils like caste system, religious conflicts, and women oppression.

Research Scholar, Institute of Environment and Sustainable Development, Banaras Hindu University, Varanasi – 221005, India
Email: anurakti02@gmail.com

Under such circumstances, education can help in enlightening people's minds and lead them to think with a wider point of view in order to fight against such inhuman practices. Traditions and customs are inherent in a nation; they are the nation's identity and so should not be misused by narrow thinking. Rather, with a broad and free mind we should make them our strengths helping the nation grow without any obstruction.

To conclude, the whole purpose of education is indeed to turn mirrors into windows not only for the benefit of society, but also for the intellectual and spiritual development in every human being.

"We are what we think. All that we are arises with our thoughts. With our thoughts we make the world".

Thus with this saying of Gautama Buddha one can summarize the purpose of education as a source of enlightenment which illuminates an individual, his surroundings and entire universe.

Comment

Chemical Analysis of a Teacher

❒ **Rose Pratima Minj**

Occurrence: It is mostly found in combined state in a class of students with an attendance register, some chalk, a duster and a pen with ink.

Nature: Highly reactive, highly inflammable which catches fire very soon when exposed to laughter or mischief or act of indiscipline. It explodes when home work is not done.

Preparation: It is prepared in colleges and Universities under the trademark of B.Sc., M.Sc., B.Ed. M.Ed etc.

Properties:

1. It is completely insoluble with students but mixes with all proportions of book.
2. Both its boiling and freezing points are low.
3. It has volatile nature and a habit of moving about in the class.
4. It wishes for the good of everyone with whom it comes into contact.

Tests: It turns red and yellow with anger when it comes in contact with errors. It turns the copies res. It has a balanced approach.

Uses: It helps to build a nation and to remove illiteracy. It helps to improve the standard of student by imparting education.

Poem

There is Sunshine in a Smile

Life is a mixture of
sunshine and rain,
Laughter and pleasure,
Teardrops and pain.
All days cant be bright,
but its certainly ture,
There was never a clound the sun
didn't shine through-
So just keep on smiling
Whatever betides you,
Secure in the knowledge
God is always besides you,

And you'll find when you smile
Your day will be brighter,
And all of your burdens will
Seem so much lighter-
For each time you smile
You will find it true
somebody, somewhere, will smile
back at you,
And nothing on earth
can make life more worthwhile
Than the sunshine and warmth
of a Beautiful Smile.

Dr. Rose Pratima Minj is a researcher and teacher and lives in Lucknow, email : rosepninj@gmail.com

धरोहर

श्री मद्भगवत महापुराण एवं मनुस्मृती के कुछ कथानक और अनुकरणीय उपदेश (विज्ञान एवं इतिहास से परे)

❒ राम स्नेही द्विवेदी

In Bhagwat Puran many wonders and theme of life are mentioned. "Mharshi Sukdeo ji" was born after 12 years of his mother pregnancy. Those who have patience in this materialistic age are wiser and will lead peaceful life. For success, a scholar should have adviser equivalent to his status. Man will die sooner than woman. Ladies should be respected so as to attain prosperity and peace.

विज्ञान या विश्व के इतिहास में कही ऐसा उल्लेख या चित्रण नही मिलता कि माँ के गर्भ में 12 वर्ष तक बच्चा रहा हो और गर्भ से बाहर निकलते ही चलने लगे तथा कुछ समय के बाद सन्यास के लिए घर को छोड़कर जंगल में जाने लगे। ऐसे महा पुरूष थे, 'श्री शुकदेव जी' जिनके पिता 'श्री व्यास जी' थे। 'श्री सूत जी' श्रीमदभागवत महापुराण की कथा सुनाते हुये बताते है कि श्री शुकदेव जी का अभी जनेऊ संस्कार भी नही हुआ था तथा वैवाहिक या सुतरां लौकिक-वैदिक कर्मो के अनुष्ठान का अवसर भी नही आया था, तभी अकेले घर छोड़ कर संन्यास के लिए जंगल चल दिये। इस विरह से दुखी होकर श्री व्यास जी चिल्ला-चिल्लाकर पुकारने लगे कि बेटा - बेटा, लौट आओ। श्री शुक देव जी के पवित्र मन की एकाग्रता तथा तन्मयता संयास के प्रति देखकर वृक्षो ने व्यास जी से कहा कि श्री शुकदेव जी सबके मन मे बसते है। हम सब उनका स्वागत करते है एवं नमस्कार करते है। ।।2 ।। (द्वितीय अ, प्रथमस्कंध, श्री मभा पु)

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।

पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्तं सर्वभुतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ।।2।। (द्वितीय अ, प्रथमस्कंध, श्री मभा पु.)

श्री शुकदेव जी गर्भ मे इतने बडे अवधि तक रहे इसकारण अनेक स्त्रियाँ गर्भ धारण करने से कतराने लगी। श्री मद्भागवत के महात्म्य के चौथे अध्याय में लिखा है कि पुत्र हीन "आत्म देव" नामक ब्राह्मण की रमणीक पत्नी "धुंधुली" को पुत्र प्राप्ति के लिए संन्यासी के दिये हुए फल खाने की जब बात आयी तो धुंधुली सोचने लगी कि मेरी सुन्दरता घट जायेगी और गर्भावस्था में अगर गाँव में डाकुओं ने आक्रमण कर दिया तो मैं कैसे भागूंगी। अगर "श्री शुकदेव जी" की तरह बच्चा गर्भ (पेट) में ही रह गया तो मैं क्या करूगीं और कैसे उसे बाहर निकालूगी। ।। 46 ।। (चतुर्थ अ, माहात्म्य, श्रीमभा पु.)

दैवाद् घाटी व्रजेद्रामे पलायेद्रर्भिणी कथम् ।

शुकवन्निवसेद्गर्भस्तं कुक्षः कथमुत्सृजेत ।। 46 ।। (चतुर्थ अ, माहात्म्य, श्रीमभा पु.)

इन सब कारणो से वह फल नही खाई और जब पति ने पुछा तो कहा "हाँ फल खा" लिया ।।50।। (चतुर्थ अ ,माहात्म्य, श्रीमभा पु.)

एवं कुतर्कयोगेन तत्फलं नैव भक्षितम्।

पत्या पृष्टं फलं भुक्तं भुक्तं चेति तयेरितम् ।।50।। (चतुर्थ अ ,माहात्म्य, श्रीमभा पु)

धुंधुली अपनी बहन से बताई कि इन सब चिंताओ से मै दुबली हो जा रही हूँ। तुम बताओ मै क्या करू। बहन ने कहा मेरे पेट मे बच्चा पल रहा है। प्रसव होने पर वह बच्चा मै तुम्हे दे दूँगी। ।।52।। (चतुर्थ अ , माहात्म्य, श्रीमभा पु)

दुर्बला तेन दुःखेन ह्यनुजे करवाणि किम्।

साब्रवीन्मम गर्भोऽस्ति तं दास्यामि प्रासूतितः ।।52।। (चतुर्थ अ, माहात्म्य, श्रीमभापु)

तब तक तुम गर्भवती के रूप में घर में गुप्त रूप से सुख से रह। तूँ मेरे पति को कुछ धन दे दोगी तो वे तुम्हे अपना बालक दे देगे। ।।53।। (चतुर्थ अ, महात्म्य, श्रीमभा पु.)

तावत्कालं सगर्भेव गुप्ता तिष्ठ गृहे सुखम्।

वित्तं त्वं मत्पतेर्यच्छ स ते दास्यति बालकम् ।।53।। (चतुर्थ अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

तुम इस समय इस फल का प्रभाव जाँचने के लिए अपने गााय को खिला दो। स्त्री स्वभव के कारण से उसने फल को गाय को खिला दिया। ।।55।। (चतुर्थ अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

फलमर्पय धेन्वै त्वं परीक्षार्थं तु साम्प्रतम् ।

तत्तादाचरितं सर्वं तथैव स्त्रीस्वभावतः ।।55।। (चतुर्थ अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

इसके पश्चात समयानुसार धुंधुली की बहन को बच्चा पैदा हुआ और बच्चे के पिता ने धुंधुली को चुपचाप बालक दे दिये। ।।56।। (चतुर्थ अ,महात्म्य, श्रीमभापु.)

अथ कालेन सा नारी प्रसूता बालकं तदा ।

आनीय जनको बालं रहस्ये धुन्धुलीं ददौ ।।56।। (चतुर्थ अ, महात्म्य, श्रीमभापु.)

भूतपुर्व निदेशक, मूंगफली अनुसंधान संस्थान, ;प्ब।त्द्ध जुनागढ. (गुजरात): वर्तमान निवास–150 जे, साउथ सिटी, राय बरेली रोड लखनऊ –226025

आत्म देव को पुत्र होने की सूचना मिलि। बहुत प्रसन्नता सभी लोगो को हुई। **।।57।।** (चतुर्थ अ, महात्म्य, श्रीमभापु.)

तया च कथितं भर्त्रे प्रसूतः सुखमर्भकः ।

लोकस्य सुखमुत्पन्नमात्मदेवप्रेजोद यात् ।।57।। (चतुर्थ अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

पुत्र कि रक्षा के लिए धुंधुली के बहन को घर बुलाया तथा धुंधुली ने पुत्र का नाम धुंधकारी रखा। **।।61।।** (चौथा अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

पतिना तत्कृतं सर्वं पुत्ररक्षणहेतवे।

पुत्रस्य धुन्धुकारीति नाम मात्रा प्रतिष्ठितम् ।।61।। (चौथा अ , महात्म्य, श्रीमभापु.)

तीन तहीने बीतने के पश्चात गौ को एक मनुष्याकार बच्चा हुआ वह अत्यन्त सुंदर और सुवर्णकांति वाला था।

त्रिमासे निर्गते चाथ सा धेनुः सुषुवेऽर्भकम् ।

सर्वाऽसुन्दरं दिव्यं निर्मले कनकप्रभम् ।।62।। (चौथा अ, महात्म्य, श्रीमभापु.)

दैव योगवश इस गुप्त रहस्य का पता किसी को नही लगा। आत्मदेव ने उस बालक का नाम, गौ के कान के समान कान होने के नाते "गौकर्ण" रखा।

न ज्ञातं तद्रहस्यं तु केनापि विधियोगतः।

गोकर्णं तं सुतं दृष्ट्वा गोकर्ण नाम चाकरोत्।। 65।। (चौथा अ , महात्म्य, श्रीमभापु)

कुछ दिनो बाद दोनो जवान हुए। गौकर्ण तो बडा पंडित एवं ज्ञानी हुआ किन्तु धुन्धुकारी बड़ा दुष्ट निकला।

कियत्कालेन तौ जातौ तरूणौ तनयावुभौ ।

गोकर्ण : पण्डितो ज्ञानी धुन्धुकारी महाखलः ।। 66।। (चौथा अ, महात्म्य, श्रीमभापु)

श्री शुकदेव जी का प्रंसग और उदाहरण इसलिए आता है कि वे महामुनि श्री व्यास जी के पुत्र थे। और उनसे भी बडे अद्भुत विद्वान थे। "महाज्ञानी महात्मा एंव महाराजा परिक्षित" को श्रीमदभागवत पुराण सुनाने की क्षमता केवल श्री शुकदेव जी मे ही पाई गइ थी। क्योकि वे गर्भ में विशिष्ट भक्ति, विशिष्ट ज्ञान एवं निर्मल हृदय प्राप्त किये थे। यह बात सभी देवता और ऋषिगण जानते थे।

उपदेश

1) इह सन्तो विषिदन्ति प्रहृष्यन्ति ह्यसाधवः।

धते धैर्य तु यो धीमान् स धीरः पण्डितोऽथवा ।।58।। (प्रथम, अ , माहात्म्य, श्रीमभापु.)

इस समय कलयुग में लोग शठता और दुष्कर्म में लगकर अंधासुर बन रहे हैं। संसार में जहाँ देखो, वही सत्पुरूष दुखी हो रहा है और दुष्ट सुखी हो रहे है। इस समय जिस बुद्धिमान पुरूष मे धैर्य बना रहे वही बड.ा ज्ञानी या पंडित है। **।।58।।** (प्रथम अ, माहात्म्य, श्रीमभापु)

2) कलौ तु केवला भक्ति ब्रह्मसायुज्यकारिणी ।

इति निश्चित्या चिद्रूपः सद्रूपां त्वां ससर्ज ह ।।4।। (द्वितीय, अ , माहात्म्य, श्रीमभापु.)

सत्युग, त्रेता और द्वापर तीनो मे ज्ञान और वैराग्य मुक्ति के साधन थे। किन्तु कलियुग मे केवल भक्ति ही वह्मसायुज्य (मोक्ष) की प्राप्ति करने वाली है। **।।4।।** (द्वितीय, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु)

3)हरिर्हि साध्यते भक्तया प्रामाणं तत्र गोपिकाः।

नृणां जनमसहस्त्रेण भक्तौ प्रीतिर्हि जायते ।।18।। (द्वितीय, अ , माहात्म्य, श्रीमभापु.)

भगवान तप्, वेदाध्ययन, ज्ञान और कर्म आदि किसी भी साधन से वश मे नही किये जा सकते। वे केवल भक्ति से वशीभुत होते है। इसके श्री गोपीजन प्रमाण है। **।।18।।** (पाँचवा, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु.)

4) संदिग्धो हि हतो मन्त्रो व्यग्रचितो हतो जपः।

अवैष्णवो हतो देशो हंत।।73।। (पाँचवा, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु)

जो ज्ञान दृढ. नही होता वह व्यर्थ हो जाता है। इसी प्रकार ध्यान न देने से श्रवण का, संदेह से मंत्र का और चित्त को इधर उधर भटकते रहने से जप का कोई फल नही होता। **।।73।।** (द्दठवाँ, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु.)

5) पण्डितः संशयच्छेत्ता लोकबोधनतत्परः।

वक्त्रा क्षौरं प्रकर्तवयं दिनादर्वाग्त्रताप्तये ।।22।। (द्दठवाँ, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु.)

अच्छी सफलता के लिये वक्ता के पास उसकी सहायता के लिए वैसा ही विद्वान और स्थापित करना चाहिए ताकी वह सब प्रकार कें संशयों की निबृत्ति करने में समर्थ हो। **।।22।।** (द्दठवाँ, अ, माहात्म्य, श्रीमभापु)

6) ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः''

(मनुस्मृती : अध्याय –3 , श्लोक – 56)

यानी, जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ सुख, शान्ति, प्रेम तथा जीवन का स्थायित्व बना रहता है। यह संदेश सबके लिए है कि पुरूष नारी एक दूसरे का, पुरूष को पुरूष का तथा नारी को नारी का सम्मान करें।

आधुनिक विज्ञान तथा हमारे वेद व पुराण बताते है कि एक ऐसा कुसमय आयेगा जब पुरूष (xy) समाप्त हो जायेगा और केवल नारी (XX) ही बचेगी। तब नारियाँ (xx) आपस मे मिलकर पुरूष पैदा करेगीं और फिर सृष्टि चलेगी।

उपरोक्त तथ्यो के आधार पर यह कहना रोचक तथा तर्कसंगत होगा कि पुरूष के संरक्षण के साथ-साथ नारी का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का यह नारा कि ''बेटी बचाओ तथा बेटी पढाओ'' एक बुनियादी सोच हैं तथा यह बहुत सार्थक, दूरदृष्टि वाला तथा समृद्धिशाली है।

(अः अध्याय, श्रीमभा पु. श्रीमद्भागवतपुराण)

भोजपुरी उपन्यास अंश

ग्राम देवता – औतार बाबा के पंचायत

❐ रामदेव शुक्ल

आजु फेरू गांव में पंचाइति जुटि गईल बाऽ। औतार बाबा सबसे उंचका आसन पर बइठल बाड़ें। ऊ आसन हऽमूंजी की रसरी से बीनल डिलंगही खटिया जवने में बांस के पाटी–सिरई लागल बा। औतार बाबा के बइठले से खटिया के रसरी नीचे झूलिगइल बाऽ। बाबा पंचगजी मरदानी के आधा पहिरले बानीं आ अथवा से आपन पीठि आदूनू गोड़ एक्के में बान्हि के आगे-पीछे झूमत बानीं। उहाके पंचाइति में एही लेखा झूमी लें। एही तरे झूमि-झूमिके औतार बाबा ना मालूम केतना जने के नियाव कऽ दिहलीं, केतना जने के पार कऽ दिहली, एकर कवनो गिनती नाहीं बाटें। गांव के कवनो झगरा अइसन नइखे जवन औतर बाबा के बिना निपटि जाऽ।

उनके घर के लोग औतार बाबा के 'छोडुवा' कहेलें। छोडुवा सांड ऊ होलें जेनके कौनो पगहा मं बान्हल नाहीं जाला। बैल नाथ पगना से बन्हालं। सांड छुट्टा चरेलें। केहू कुच्छू कहो, एह कुल्हि बातन के कवनो परभाव औतार बाबा के उप्पर नाहीं परेला। उनके केहू का बिगाड़ी? जहवे पहुंचि जइहें, चारि कवर भात मिलिए जाई। केहूज जमाने के खलिहाने चाहे कोल्हुआडे सूति जइहें। नाती-नतकुर लो आ के जगाई- 'जाऽ जाऽ हमरा खाए के अकाल बाऽ? खा-पी के टन्न बानीं। दू घरी में पंचाइति जुटे वाली बाऽ अब हम घरे जाइबि? बचवा लोग लवटि जइहे। गोजर चौधुरी गदौरी पर खैनी चूना मेरावत मलत अइहें आऽ अवते गोला दगिहें - 'काऽ हो पंडित बाबा। अबहिन पंच लोग नाहीं आईल ? घरी आध घरी में पंच लोग जुटि जइहें। औतार बाब पीठि-गोड़ खोलिके पसरल रहिहें आ। ऊठिके बईठि जइहें आऽ ओही तरे पीठि गोड मरदानी में बान्हि के झूमे लगिहें। सुर्ती पच्च देना एक ओर थूकि के गोजर चौधुरी के ओर मुंह उठाके पुछिहें - 'हूऽऽ तऽ कहऽ हो गोजर भाई ई जुटान काहे वास्ते भईल बाऽ' - बाति के ईहे डोरा पकड़ि के फरियादी आपन दूनो हाथ जोरि के चालू हो जाई - 'सरकार, हुजूर माई-बापी ऊ खदरूआ के जनाना के औगुन देखल जाव, एह उमिरि में चोरी करऽतीया। ऊंखि तुरले बा।'

बिरजू पण्डित बिच्चे में टोकल आपन परम धरम मानेले। औरत के मामला होखे आ ऊ जवान होखे तऽ ई होई नाही साकला कि बिरजू चूप रहि जा। जोर से गरजि के डपटिहें-तूम खेत में पकड़ा उसको? खदरू बो अपने छोटकी आंखि के तनि अउर छोट कऽके कहिहें - 'एऽ बाबा! रउआ चुप्पे रहीं। पंच-परधान-परजा सभी ठठा के हंसि परी। पंचाइति ठहाके में ओरा जाई।

पंचपरधान में सबसे जियादे बाभन लोग बाऽ। अउर केहू बाभन देउताअइसन नइखें जेकर राहि खदरू बो की गल्ली से होके नऽ गुजरित होखे। एह नाते रोज कवनो न कवनो बाति में धरइले के बदिओ ई जनाना पंचइतीसे बित्ता भरि उप्पर।

बाकि आजु के जुटाइन अइसन ओइसन नाही बाऽ। आजु गांव रहे चाहे रसातल में चलि जाऊ, ई अन्हेर नाहीं चलीऽ।बाबापटटी तेलीपट्टी चमटोल एह तीनू के बिच्चे फइसला आजु हो रहीऽ। गोजर चौधुरी के गजर गरजल- 'तऽ ई जुटान काहे भईल बा पंचो!' पंच लोग अपनी-अपनी ठावें सोझ होके बईठि गइल लोग। चौकी पर बाभन लोग, मझिली जाति के पंच लोग उर बभनन के पोंटा सुहकत लइका लोग। ओह लोगन के केहू डाटि के भगाइयो नाहीसकेला। बाभन बच्चा से के बाझे? एइसन केहू माई के लाल आजु ले नइखे जनमल जे परोजनि से करन्न के, अउर पंचइती सेबाभनबच्चा लोग के अलगा दे। एह लोगन के केहू बोलावे नाहीं जाला, बाकी आ गइले पर केहू हटइबो नाही करेला। किसनू नाऊ के ाकनी आंखित झपकलि- 'हंऽ भाई! बोलल जाउ'।

नीचे धरती पर गोलाई में बइठल अधनंगू अधेर उमिर के लोग सुगबुग भइल। केहू के चेहरा डर के मारे पियरा गइल। केहू सनाका खा गइल! केहू हकबका गइल।बाक केहू के मूंहेसेबेकार नाही फूटल। तबले गरजलें सतुआ काका– 'कस रे सरवा! बोलत काहें नइखे! मुंहवा में बई धऽ लिहले बा काऽ? करियाबदरी अहसन डर लोगन के उप्पर फाटि परल। अधरसा उमिर के एगो करिया मनई धीरे-धीरे औतार बाबा की खटिया के ओर सरके लागल। सबके आंखि ओही के ओर लागि गइली। ऊ कुछु कहे चाहे, बाकी मूंहेसे बेकारे नाहीं फूटे। बाति गटइए में अटकि के रहि जा। किसनू हुरपेटि के बोलले- 'बोलु न भाई! का चुपाइल बाड़ऽऽ?'

किसनू की ओर देखि ओकरी जीउ में जीउ आइल। हाथ जोरि के खाड़ हो गइल आ धरती माता की ओर आंखि गाड़ि के एक्के सांस में कहि डरलसि- 'सरकार! हमारा खता ई हऽऽ की हम धरम नाहीं छोड़ल चाहत बानकी। एक्के बेर सबके माथा घूमि गइल। कई जने एक्के साथ पूछि परलें - 'बोलऽ... बोलऽ, के तोहार धरम छोड़ावत बाऽ?'

पंचइती में सब लोग आखि फारि-फारि ओकरी ओर देखे लागल आ कुछू न कुछू पूछे लागल। सब लोग चुपा गइल तऽ ऊ कहे लागल - सरकार ! मंगल भाईकी हियां भतवानि रहे। हम उनके घरे खाए नाहीं गइली। ई हमार खुसी। कहो हमरी किहां मति खइहें। बाकी उनुके बड़का बेटवा हमके गरियवलसिह ऽ उपकहलसि हऽ कि तोहार गोड-हाथ तूरि के, मुआ के फंकि देबि।'

'तू काहे खाहीं खइबऽ हमरी घरे ?; गरजल बड़का। जब हमार-तोहार खइल-पीयल चलेला, तऽ अब काहें नाहीं खइबऽ ? कौनो हम इनसन-ओइसन हई?;

सतुआ काका, बिरजू बाबा, औतार बाबा सब एकसाथवें गरजले- 'बोल रे! काहें नाहीं खइबे मंगल के घरे ?' नीचे बइठल लोग के मुंह हकबका के खुलि गइल। सबकी मन में एक्के बाति- काहें? काहें? बड़ा जोर से ठठा के हंसल गिरगिटवा। बसके निगाह ओकरिए ओर उठि गइल। गिरगिटवा दूनो हाथे से आपन पेट पकड़ि के

प्रोफेसर रामदेव शुक्ल हिन्दी के ख्याति प्राप्त साहित्यकार एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय के सर्वप्रतिष्ठित पूर्व आचार्य है। यह उपन्यास अंश उनके ग्राम देवता उपन्यास से लिया गया है जो हिन्दी और भोजपुरी दोनों भाषाओं में लिखा गया और चर्चित रहा है। उनका पता शीतल सुयश, राप्ती चौक पो. आरोग्य मंदिर, गोरखपुर, उ.प्र. है।

हंसत-हंसत दोहरा हो जात रहे। बिरजू बाबा तडपिके के डंटले -'ई कारे गिरगिटवा, तें का बिच्चे में भांड़े इसन नाचे लगल चुप रहु।' औतार बाबा धेयान से गिरगिटवा की ओर लकलें। कहलें -; का हो गिरगिट्टू जरूर कुछू जानत बाड़ऽऽ का बाति हऽ? बोलऽ सबके बतावऽ।'

गिरगिटवा उअर जो से हसि परल। कुछू देरबादि हंसी रोकि के कहलसि–'ए बाबा! जानत तऽ रउरहूं बानी।' जेतना ोग उहां रहे, सबके निगाह अब औतार बाबा की ओर घूमि गइल।

ओतर बाबा केहू के कहले से कुछू नाही बोलेले। उनहींके कहले से सभे बोलेला बाकी आजु उनके चेहरवा पर एगो रंग आवत बा, त एागे रंग जाते बा। आगे–पीछे झूमलका बढ़ि गइल। बा। पाछे से रहि-रहि के कई जने टोकारी मारि देत बाड़ें- 'का बाबा? बोली ?'

पाछे से एगो सोगहग अवाजि गरजति बा- 'बाबा का बोली? रतियो जब सब गांव सूतल रहे, तब कासी बाबा के गोनतरिये बइठल रहलें। सब मामिला तय हो गइल। सब माल गड़प। अब बाबा कुछो नाही बोलिहे।' सब केहू घूमिके ओहरिए ताके लागल जवनी ओर से ई बाति सुनाइलि। सभेचीन्हि लिहल की ई बिरजू महराज के भतीजा मोहन बाबू हउवें। मोहन बाबू अपनी समुझ की हिसाब से गांव के सबसे चतुर सुजान हउवें। बेचारा के अक्किलि इस्कुलि में तनिए - सा परूवा जाले तऽ ऊ का करें। पांच बरिस हो गईल दरजा छव में सरका कूटत बाड़े। ऊ त अबहिन पंचवे में रहिते बाकी बियहवा खातिर गिरधारी मतुंशी के पासकराई फीसि डबल कऽके पंचवा लांघि गइले। बियाह हो गइल। गांव के मेहरारू कुलि बतियावेली सो कि मोहन बोकि उमिरिमोहन से पांच-सात बिरस जियादेबा। मोहनके एगो बेटियो बा। ओकरी चेहरा-मोहरा में गांव वाला कबो बिरजू बाबा केनाक-नकसाचीन्हेले, कबो केहू दुसरे के। बिरजू बाबा गांव जवार केसोख-ओझा, वैद-हकीम, पंच भंडारी, पंडित-उपपरोहित सब कुछ हउवें। जब जइसन का जइसन जजमान धराइल, ओइसन दानदछिना ले के बिरजू बाबा सबके सब काम ठीक करा देते। ऐसे उनकी मुंह पर उनकी खिलाफ बोले के करेजा केहू के छाती में नइखे। बाकी मोहन बो के साथ उनके नाव लेत में सबके आंखिया चमके लागेला। मोहन बाबू के ढेर टैम कचहरी की मुंसीलोग के बीच कटेला। हाजिरी उनके इस्कूले में राज लागि जाला।एक बेरजादो मास्टर के छूरा देखा के मोहन हमेसा खातिर फिट्ट कऽ दिहले। तबसे इनके केहूमास्टर गैरहाजिर नाही लगावेला।

ए बाति के सुनि के सब लोग चुप्पे रहि गइल। के मोहन सेअझुरा केउनके गारी-पानी सूने ? बिरजू बाबा डांटि के बोललें- 'ए मोहन! तूइहां कहां आ के फाटि परलऽऽ? जा जाके कोट-कचहरी देखऽऽ।'

डपट के जवाब अउरतेज डपट मं दिहलें- ' मोहन!तू चूप रहऽ।' बिरजू बाबा के चेहरा लालभभूक हो गइल। बाकीका करें?-

मोहन फेरू चालू भइलें- 'औतर बाबासे पूछऽ काल्हि राती के कासीसे केतना लिहलें ? का बात तय कइलें? बोलत काहे नइखन? काहं चुपा गइलें? घुसखोर कहीं कें' एतना कहत–कहत मोहन बाबू इतना जोर से रिसयागइले की मुंह से फेंचकुर फेकत, गोड पटकत चलि गइले। पंचइती में बइठल लोगन के परान में परान लवटि अइल।

मोहन बाबू चलि गइले बाकी एक बात भईल की सबकी आखिन में, बसकी लिलारे पर औतारबाबा के घूसखोरी के बतकही उजागर होखे लागल। सतुआ काका डपटि के बोले -'कहु न रे कसिया, अब बोलु।'

कासी दूनू हाथ जोरि के कहले-'सरकार! हमार नियाव पंच सभे के हाथ में बा।' अबकी औतरबाबा गरजले- 'आरे ससुरा, बतिया का हऽ ऊ त बताउ।'

कसिया कुछु बोले वोसे पहिलहीं मोहन बाबू फिरू न जाने कहवां से आ गइलें। दूने हाथ करिहायें पर धऽ के खाड भइले आ सुरू हो गइलें-'ऊ का बोलेगा ? मैं बताता हूं। चोकट किहां एक दिन सूअर के गोस बनल रहे। समझते है कि नाहीं समझते हैं? उनकीइहां बड़कू आउर बिकरम दूनू जने दारू की साथे ओही के चिखना काटल लोग।ईबातिकासी के इलका मुडवा देखि लिहलसि। घरेआ के अपनी बासे से कहलसिके ए दादा तूहं चलि के देखि लऽऽ।कासीगइलें आ ढूका लागि के ऊहो अपनी आंखी से देखि लिहलें। अब...

मोहन बाबू के भाखन अधिबिच हीं में रहे तबले बडका कूदिपरल। कहलसि-'एऽ मोहन बाबू। आ तूं जब सनिचरी के घरवा के पकड़ाइल रहलऽआ ऊ कुलि तोहके बान्हि के पंचइतियामें ले आवत रहलें, तबहमहीं तोहके छोड़वली। गिरगिट गवाह बाड़ें।'

गिरगिटवा एह बेर ऊंच बाति गहिर-गम्हीर अवाज में बोलल- 'एहमें क्या खराबी है ? मंतिरजी जीजब आए रहे तब बोले रहे की आगे सेएह तरहके मेल-जोल बढ़े के चाहीं कि कुल्ही जाति में गोर-गोर लइका जनमें कुलि। मोहन बाबू ठीक किय। मंतरी जी ईहो बोले रहे कीबड़ी जाति के जवन चेवान छोट जाति के लइकी से बियाह करीओके सरकारी नौकरियामिली आ नगदनराएनों मिली। मोहन बाबू ठीक किया। एही से तो हम कुच्छ नहीं बोला।।'

रिगिट कुछ और कहे जाते रहें कि बिरजू बाबा हाथ में अपने पांव के एक खड़ाऊ उटा के दउरि परलें-'करेऽ? सज्जी जाति के सल सुधारे के एकठो मोहने रहि गइल बाड़े?'

गिरगिटवा बगटुट भगलसि नाहीं तऽ ओकर खोपड़िया तऽ खरउवें से छिला जाइत। मोहन खड़ा होके सबके ललकारे लगलें। बड़का अपनी बाप की उमिर के कासी के पटक के छाती पर चढ़ि गइल। कई हाथ मारि दिहलसि, तब सब लोग मिलि के ओके हटावल।

अब औतार बाब, बिरजूबाबा, सतुआ काका, गोजर,, किसनू सब लोग मिलि'जुलि के मोहन बाबूके विरोध रोके के अरदास करे लागल। बहुत चिचिअइले के बादि मोहन बाबू चुपइलें। जवन लोग बड़का के पकड़ले रहे, ऊ लोग ओके बइठा दीहल। अब सबके धेयान बड़कू की ओर लगि गइल। कई जने एकसाथहीं वोसे पूछे लगलें- 'का रे बड़का। ते बैसकुल के होके चोकटा की घर में सूअर के मांस खइलें ? थू-थू।' कुछ लोग बिना पुछले-जनते थू-थू करे लागल।

कई जने बाबा लोग धोतीखुटियावे लगलें। ओल लोगन के हाथ-गोड़ फरके लागल केहू के मारे के, बाकि के-के मरिहें ? तेली मण्डली मं मुडवा की नीच करनी से खवडेउ़ परि गइल। बाबा लोग के देखले से लागत रहे कि सबसे ढेर बाबा लोग बौखल बा। धीरे-धीरे सब केहू बूझे लागल की बतिया उलटि के बाबा लोगन पर आ गइल बा। जब ई बाति मोहन बाबू कीसमुझ में आइल तब ऊ पैंतरा बदलि के खड़ हो गइलें आ लेलकारिके कहलें'ई सब झूठ बाति हऽ। हमहूं कहतबानी कीईसच्च नाहींहऽ। असलबातिई हऽ कि ई सार मुडवा हम बाभन बिरादी को बदनाम करना चाहता है। हम लोग कासी के यहां और बिकरमके इहां खते

हैं। अरके एक्केबात हैं ओ घर से सीध लेकर हम लोग अपने हाथ से बनाते हैं। इहमें कवन, देख-पाप हैं ? ई मुंड़वा कहता है कि कासी के घर नहीं खाएंगे। इसका भेजा पलट गयाहै। इसको बिरादसी से बाहर कर दिया जाए।

कासीके कपारे पर अउर भारी बिपतिफाटि परलि। मुड़वा के के लवंडपन से एतना बवाल हो जाई, ई बाति तऽ ऊ सोचलही नाहीं रहे। बड़का की मारि-गारीसे बचे खतिर पंचाइति जुटवीं, अब अपनिये कपारे परि गइल। घबड़ा के कासी माथा पकड़ि के बइटि गइलें।

सतुआ काका केजोस बढ़िया गइल। उठि के हाथ फेंकि-फेंकि के चिघरे लगलें - 'सवाल एकर नइखे की मुंड़वा-कसिया तेलीपट्टी के बदनाम कइलसि अब तऽ बड़हन बाति ई बा कि हम सब बाभनन को ई सब अकलंक लगावत बाडे सो! हम सब बैस बिरादी में खाते है कि नहीं खाते है? अब ई स्सार कहत बा कि बैस बिरादी के लोग सूअर खात बाऽ। अरथ-बिचार करो पंचों! मतलब की हम बाभन बिरादरी के लोग सूअर खाए वाली बैस बिरादरी के घर खाए वाला हई। अब बाभन बिरादी की बदनामी भईकी नाहीं भई।'

सतुआ काका के बइठते कसिा के कुलि बाबा लोग मारू-मारू चिल्लाए लागल।

सब बाबा लोग जोस में भरि-भरि अपनी ढंग से अपनी बल-पौरूख के बखान करे लागल। सब लोग कासी के आ उनके बेटा मुड़वा के गरियावे लागल। कासी के कुछ न सूझलतऽ ऊ उठि के अपनिए बेटा मुंडवा के खुदे पीटे लगलें एक ओर उनके दूनूं हाथ्ज्ञ चलत रहे, दुसरी ओर उनकी मुंह से गारी के भूर खुलि गइल रहे। 'इहे सार कुल्हि आगी लगवलसि। ऊ चाहे सूअर खइलें, चाहे गुह खइतें, ई काहें, बिच्चे में परे गइल?' गारी आ मारि से मुड़वा से पहिलेकसिये थकि गइलें, तब दूनू हाथ जोरि के पंचन से कहलें- 'दोहाई सरकार! सब गलती हमरे बा। ई हमार कपूत के कवन गरज रहेदुसरे के खान-पान जनले के। हमके पंचों माफी कऽ देई।'

बाबा लोग एक साथ कसिया पर टूटि परल। 'साला अब माफी मांगत बा। बाभनमंडली के इज्जति माटीमेंमिला दिहलसि। अब माफी मांग बा। अब माफी तब्बे मिली जब एह गलती के दण्ड भरो।' 'डांड़ भरऽ, डांड़ भरऽ' चारू ओर से नारा जइसन लागेलागल। एक जने बाभन कहलें -'सौ रूपियानगद। बाभन बिरादी के पक्की अउर अपनी बिरादी के एक पक्की एक कच्ची। तब हुक्का चीलम।' 'ठीक-ठीक' सबकी मूंहे से एक्के साथ निकलि परल।

कासी गिड़गिड़ाए लगलें - 'दोहाई सरकार! रच्छा करी पंचों। हम बरबाद हो जाइबि। हमार लोग - लइका बिला जइहें। हमार गांव छूटि जाई। हमार लइका नदान बा। ऊ कुच्छु नाहीं देखलसि। हम लोग बाबा सबके कुछ नाहीं कहत बानीं। ई डांड़ लागि जाई तऽ हम भुक्खन मरि जाईबि। दोहाई पंचों। हमार कोल्हू बन्न बा। डांड़ हम कहां से भरबि?' कासी की आंखिल लोरि बहे लागल।

'डांड़ ई देई।' सब लोग ई अवाज सुनि केपलटिके देखे लागल। मोहन बाबू हाथे में एगो बैल के पगहा धइले आ के खाड़ हो गइलें। पंच लोगन कीओर ताकि के कहलें- 'कसियाका बैल खोल कर ले आया हूं। डांड़ यही बैल भरेगा। रूपैया नहीं देने पर यही बैल लीलाम पर चढ़ाया जायेगा। बोलो कौन लोता है ? एक दोऽ तीन।'

पंच लोग के चेहरा उजियार हो गइल। बिरजू महराज दहड़लें 'कौनो हंसी ठट्ठा हऽ का? मोहन कौनो गंवार हउवें? कचहरी में रहेलें। पुलिस-पाटी से दोस्ती बइठकी हैं ऊ जानता है न? दण्ड कैसे वसूली किया जाता है?

कासी के साथ मुंडवों की आंखिन से लोरि बहे लागल। ओरी घरके कुल्हीमेहरारू छाती पीटति-फेकरति बैलवाके लग आ के क्षाड़ हो गइली। अउरी लोग जे जहां रहें, उहां सेकुछू न कुछू कहत-बोलत बैलवे की लगवां फटि परल। केहूके कौनो बाति समुझ में नाहीं आवत रहें। बड़का जोस में आके आपन जांघ ठोंके लागलक हे लागल-'सरऊ चलल रहलं हऽ हमकें बदनाम करेंऽऽ। हमरी साथ बाभनमण्डलियों के अकलंग लगावत रहल हऽऽ। अब भोगु अपनी करनी के फल।

गिरगिटवा फेरू ठठा के हंसे लागल। हंसी थमली तऽ महलसि- 'अउर जुटावऽ पंचाइति। अब बैलो से बेदलख हो जइहें सरऊ। अरे भकुआ गांव में रहि के बभनमंडलीसे बैर करिहें तऽ इहेफल होई न? ई बभनमंडली जियतो खाई, मुअतो खाई। ओकर केहू का बिगाड़ी?' कहि के गिरगिटवा भागल जोर से।

गिरगिट गजब के जीव हउवें। उमिर चालीस से कम्मे बा। जटाजुट अइसन बढ़ाइल बा की बोलें नाहीं तऽबड़का महतमा बुझइहें। दखि टोली में गिरगिटवा बो सबसे सुन्नर मेहरारू रहे अपनी जबाना में। गिरकिट फक्कड़ फकीर! कबो घरे रहें, कबो नाहीं रहें बगली वाला गांव के चन्न बाबादूनो बेरा जाना जोरे गिरगिट क पलानी के फेरादेबे लगलें। धीरे-धीरे गांव जवार सब जाने लागल की चन्नन बाबा के मामिला का हऽऽ। गिरगिट एक दिन उनुके अपनी घर में देंखि लिहलें। तनिको रिसि नाहीं कइले। सोझ मन से कहलें -'एऽ बाबा! एगो बाति पूछी।'

चन्नन कहलें' 'पूछऽऽ'

गिरगिट कहलें -'रउवां दान लेई लें न?'

चन्नन कहलें- 'बभने के करतब काऽ हऽ, कवन चीजु दान में देबऽ हमके?' गिरगिट पलानी में ढूकि के अपनी मेहररूआ के बांहि धऽ के ले अइलें आ कहलें -'ए बाबा! हमरी लगे ईहे एको नीमन चीजु बा जवन रउरीकामें आई। एही के दान ले जाइ।' च्नन बाबा ओह जूनी तऽ कुछू नाहीं कहलें। गिरगिटके मउगियो कुछू नाहीं बोललि। ओही रातिके ऊ दूनू जने आपन–आपन घर-गांवछोड़ि के कहीं अलोप हो गइल। तबसे केहू नाहं जानल की कहां बाऽ लोग। गिरगिट पहिलहूं अजाद रहलें अब अउरबेनाथ – पगहा के हो गइलें।

कुछु दिन बादि गिरगिटवो गांव छोड़ि के कहीं चलि गइल। कई बरिस के बाद जटाजूट बढ़ा के साधू बनि के लवटलतऽ गांव के लोग गिरगिट साधू के रूप में चीन्हे लगलें। गांव कीडीहे पर एगो पिप्पर के बुढ़वा पेड़ रहे। ओही तर गिरगिट के कुटी छवा गइल। गांव में कूहू न केहू पाव भर अनाज देई देला। गिरगिट आपन घर बभने के दे के सबकी घर केसवांग हो गइले।– उनकेपेसानारद जीइसन हो गइल। ऐहर के बाति ओहर, ओहर केबातिएहर। केहू किंहा कवनो बाति होखो, जनम-मरन, जनेउ-बियाह, किरिया-करम, झगरा-झंझट सब जगह गिरगिट हाजिर रहेलें।

क्रमशः....

अगले अंक में जारी

भोजपुरी कविता

धान

❐ बुद्दू काका

बहुते पानी पीएला धान,
धान के पिआस आ धन के पिआस,
एकै तरे होला।

धान सोखेला हवा से कार्बन डाई
आक्साइड जइसन गरम गैस,
जवन निकलेला सबका साँस लेहला से,
आ जड़ से खाला खाद, पीएला पानी,
धान के मुँह, जड़े के ओर होला।

धान धूप के ताकत बान्हि ले ला अपना
पत्ता में, गठरी के तरे,
आ साँस के गर्मी से बना देला।
ग्लूकोज जइसन खाना
वहीं से धीरे-धीरे बनेला
बाली, दाना, चावल, आ भात।

धान पानी के तोड़ के निकाल देला
प्राण वायु आक्सीजन।

धान कूटि के निकलेला चावल
चावल से बनेला भात।
भात खाके सयान होले दुनिया भर
करोड़ो-करोड़ लइका।

भात खइला से धान के पिआस
उतरि जाला आदमी के गटई में।

धान के खेत से निकलेला,
जापानी बुखार के मच्छर
आ गाँव के लइकन में समा जाला
दिमागी बुखार।

जापान में धान होला
लेकिन ई मच्छर यूपी० बिहार के
तराई में काहे होला हो?
हम नईखी जानत
तू जाने लै का?

धान में पड़ेला यूरिया, डी०ए०पी०
आना जाने कवन कवन कीड़ा
आ-घास मारे वाली दवाई,
जवना में भरल रहेला जहर।
पर कीड़ा तबो खा जाले धान के बाली
कई इलाका में धान के खेत के पानी में,
रहेला आर्सेनिक जइसन जहर।

धान मदमस्त भोले बाबा के तरे, पी जाला
सगरे जहर
आ जइसे भोले नाथ जहर अपना गटई में
अटका देहले
धान अटका देला सगरे जहर अपना पत्ता
आ दाना में।

भात के साथे लोग खाला
ई छुपल-छापल जहर
पुअरा के साथे मवेशियों जहर खाले
आ उतार देले अपना दूध गोबर आ
पेशाब में
कीड़ा मारे वाला दवाई के जहर।
धुसि जाला हमनी के देह में

पानी कीचड़ में घुसि के जे रोपेला धान
भीजेला वारिश में खाद छीटला से।
उस सबहोला, ए जहर के शिकार

लोग कहेला धान में बड़ा घाटा बा।
कबो डूबि जाला,
कबो सूखि जाला,
कबो मारा जाला,
कबो माछी लागि जाला।
धान बोए वाला हरदम परिशानै रहेला।

धान आ किसान के गणित हमरा ना
बुझाला।
कोटा के चावल,
प्रधान आ कोटेदारो के गणित ना बुझाला
हमरा।
तहरा बुझाला का हो?

तबौ धान त बोअही के परी
ना त खइबै का?
आ पछतइबै कइसे?
खेत बा ता खाली त रखब नाऽऽ
लोग हँसी, अउरी कुछ न भइल
त खेतियों नइखे होत ऽऽ।
कुछ ना कुछ त करहीं के पड़ी भाई।
धान बोअऽ
आ जहर पीअ ऽऽ।

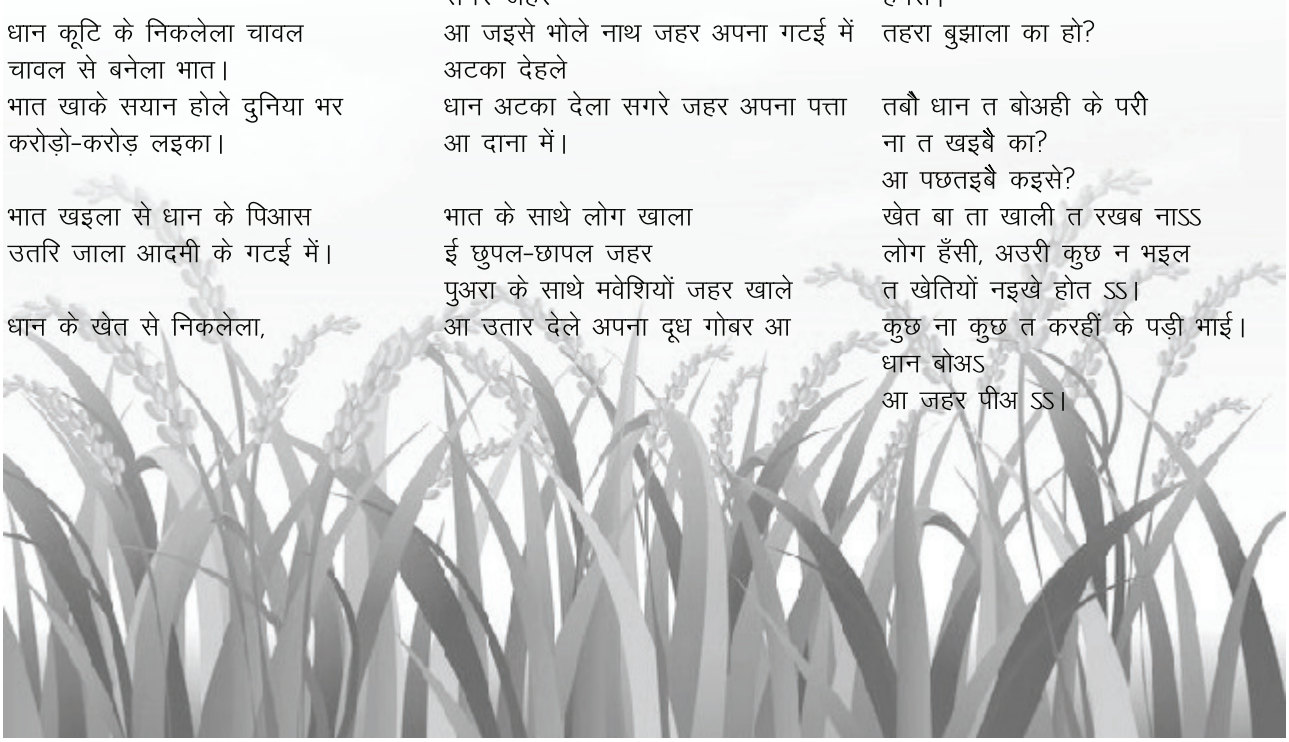

गाँव पृथ्वीपुर, पो0 विशुनपुरा, जिला कुशीनगर (उ.प्र.) 274304 ईमेल : dr.ranapratap59@gmail.com

लोक साहित्य

क्रांतिकारी आंदोलन में भोजपुरी लोक–गीत

❐ प्रशांत कुमार बौद्ध

भारत में नवजागरण का श्रेय आमतौर पर बंगाल को दिया जाता है लेकिन जार्ज ग्रियर्सन इसमें भोजपुरी समुदाय को भी शामिल करते हैं । दरअसल बौद्धिक क्षेत्र में जो काम बंगाल नें किया वही काम शक्ति के क्षेत्र में भोजपुरियों नें किया । शक्ति से ग्रियर्सन महोदय लाठी से जोड़ते हैं जो अभी तक भोजपुरियों का मुख्य हथियार हुआ करता था। लाठी की प्रशंसा में गिरधर कविराय की कुण्डलियाँ इस क्षेत्र के लोगों की जुबान पर रहा करती थी ।

'सब हथियार न छोड़ि हाथ में रखिहऽ लाठी ।'

भारतीय परिप्रेक्ष्य में 1857 ई. के संग्राम के बाद कई ऐसी घटनाएँ घटीं जिससे यहाँ का जनमानस राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख हुआ । अपनी मिट्टी के साथ यहाँ के लोक का जुड़ाव अनूठा है । वह अपनी जमीन को अपनी माँ के समान मानता है अगर कोई विपत्ति ना आए तो आमतौर पर यह लोक अपनी जमीन किसी भी कीमत पर दूसरों को देना नहीं चाहता। इसी जुड़ाव को अभिव्यक्त करता एक भोजपुरी गीत निम्नलिखित है :-

"भुइयाँ महारानी सदा बरदानी, हरियर तोरा अँचरवा हो रामा

तोहरी ही कोखिया माँ ठाढ़े बिरिछि बन

तोहरी ही गोदिया माँ खेत खरिहान हो रामा

नदिया का पानी लहर-लहर भइया लेत लहरिया हो रामा

माटी अकबेरवा माँ लेहु मोरी मैइया, पाँच पंच मिलि लेत बलइया

लह-लह लहक्यों कबहुँ न हरक्यौ, अनधन पूरन किह्यो कल्यानी भुइयाँ महारानी।"

भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहाँ के लोगों की आजीविका अधिकांशतः खेती-बारी से जुड़ी हुई है । चूँकि खेत से अन्न प्राप्त होता है जिससे जीवन चलता है अतः यहाँ लोगों का जुड़ाव जमीन से बहुत ज्यादा है। भूमि से जुड़े जन नें अपने लोकगीतों में अपनी जमीन को शिद्दत से याद किया है । इन गीतों में जीवन है तथा वे जीवन के गीत हैं। इन गीतों में जीवन संघर्ष है इसके द्वारा जनता ने जीवन पर विजय प्राप्त किया है। इसकी अभिव्यक्ति बड़े सुंदर ढंग से इस गीत में हुई है दृ

"धरती के राजा हैं खेतिहर हो

माटी के गोड़-गाड़ सिंचौं पसीना तैं, फसलें उगावै इ हरियर हो

भुइयाँ है माता इ भुइयाँ पिता है, भुइयाँ उगावै सोना रूपा मोतिया

भुइयाँ है जीवन परान जगत के"

बिहार के किसानों की स्थिति और भयावह थी । पटना के कलेक्टर ने लिखा- 'जो किसान सात बीघा जमीन जोतते हैं वे केवल एक वखत भर पेट खा सकते हैं ।' पटना के कमिश्नर मि.ट्रायेनबी ने बिहारी किसानों की अवस्था का इस प्रकार वर्णन किया है दृ पाँच बीघा जमीनजोतने वाले किसानों की संख्या यहाँ कम नहीं है । इतनी जमीन में साल 125 रुपये का अनाज उत्पन्न होता है । सरकारी कर चुका देने पर किसानों के पास 102 रुपये बचता है । इतने रुपयों पर साधारणतः और छः आदमियों के साथ किसान को एक वर्ष बिताना पड़ता है। ऐसे अभागों की संख्या इस जिले में करीब 2 लाख है । लाखों आदमियों को केवल 2 बीघे जमीन पर जीवनयापन करना पड़ता है इस सामान्य आय से उन्हें कितने कष्ट होते हैं इसका सहज अनुमान किया जा सकता है । इसके सिवाय भी सैकड़ों आदमियों में से 15 आदमियों के लिए बिलकुल भी जमीन नहीं है, वे केवल मजदूरी कर पेट भरते हैं। मजदूर भी साल में 8 महीनें से अधिक काम नहीं करते। मुजफ्फरपुर, सारन, चंपारन दरभंगा के बहुतेरे मजदूरों को आधा पेट खाकर दिन बिताने पड़ते हैं ।

किसानों का उनकी जमीन का छिन जाना, किसानों के लिए पीड़ादायक था । ये जमींदार वस्तुतः अंग्रेजों के ही गुलाम थे जो अधिकाधिक मालगुजारी वसूलना ही अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे। किसानों की बदहाली उनके लिए कोई मुद्दा था ही नहीं । चूँकि अंग्रेजों की ही बदौलत इन जमींदारों को मालगुजारी वसूलने का अधिकार मिला हुआ था इसलिए ये अंग्रेजों के प्रति ही खुद को जवाबदेह समझते थे । जनता के प्रति इनकी कोई जवाबदेही नहीं थी ।

आजादी की भावना बुद्धिजीवियों के दिलो-दिमाग में पूरी आकांक्षा से व्याप्त होने लगी थी। हिंदुस्तान को अपने देश के रूप में महसूस कर इसे जन्नत से भी प्यारा कहा गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं क्रांतिकारी आंदोलन के भोजपुरिया मजदूरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी ।

प्रशांत कुमार बौद्ध, शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय, अजमेर, ईमेल.: 2015phdhindi06@curaj-ac-in

National Solidarity and Poetry of IQBAL

قومی یکجہتی اور اقبال کی شاعری

❒ Zia Tasneem and Mohammad Arshad

قومی یکجہتی کا مفہوم اس کے نام میں ہی پنہاں ہے۔ یہ دو لفظ خود میں وسیع معنی رکھتے ہیں لفظ ''قومی'' کو انگریزی میں National کہتے ہیں جس سے مراد ایک ہی ملک کے باشندے مختلف رسم و رواج، مذہب، وضع قطع اور مختلف لسانی ہونے کے باوجود باہمی اتحاد سے کام کرتے ہیں۔ لفظ ''یکجہتی'' کو انگریزی میں Solidarity کہتے ہیں جس کے معنی باہمی اتحاد ہے۔ ذرا اور وضاحت کی جائے تو یکجہتی سے مراد وہ ذمہ داریاں جنہیں مشترکہ طور پر پورا کیا جاتا ہے۔

قومی یکجہتی انسان کے اندر پنہاں ایک جذبہ ہے جس کو حرف عام میں انسانیت کہتے ہیں۔ جذبۂ انسانیت ہی ہمیں وطن پرست، وطن دوست، انسان دوستی، آپسی اتحاد اور دوسرے مذاہب اور ان کے ماننے والوں کو عزت کی نظر سے دیکھنا سکھاتا ہے۔ قوم پرستی اور وطن پرستی کا جذبہ اسی شخص کے اندر ہوتا ہے جو بیدار مغز، واذہنیت، اُخوت پرست، اصلاحی مزاج ہوتا ہے۔ جن کا ما حصل صراط مستقیم ہوتا ہے۔ ہندوستان میں بہت سی ایسی شخصیت گذریں ہیں جن میں سوامی ویوکانند، مہاتما گاندھی، ٹیگور اور اقبال کا نام قابل ذکر ہے۔ اقبال کا شمار برِصغیر کے بیسویں صدی کے شاعر و مفکر ٹیگور کے ساتھ ہوتا ہے۔ اقبال حساس دل، واذہن، اور بلند فکر کے مالک تھے۔ اُنھیں قوم کی فکر ہر لمحہ بیقرار رکھتی تھی ایک جگہ لکھتے ہیں ؎

مبتلائے درد کوئی عضو ہو روتی ہے آنکھ
کس قدر ہمدرد سارے جسم کی ہوتی ہے آنکھ

ہندوستان کو وہ ایک جسم اور خود کو اس کی آنکھ تصور کرتے تھے۔ قوم سے ان کی مراد ہندوستانی تھے خواہ وہ کسی بھی مذہب کے ہوں حالانکہ ان پر فاسزم، مذہب پرست اور فرقہ پرستی کے الزامات لگائے گئے لیکن ان کی شاعری کا مطالعہ کرنے سے صاف ظاہر ہو جاتا ہے کہ ان پر لگا الزام بے بنیاد ہے۔ آل احمد سرور لکھتے ہیں ؎

> ''جس طرح قوم پرستی کے متعلق اقبال کے خیالات کو صرف فرقہ وارانہ سیاست کے رنگ میں دیکھا جاتا ہے اور قوم پرستی کی جارحیت اور اس کی بعض انسانی اور آفاقی قدروں کی نفی کو کوئی اہمیت نہیں دی جاتی اسی طرح جمہوریت کے متعلق اقبال کے خیالات کو صحیح طور پر نہیں سمجھا گیا۔ [1]

سرور صاحب آگے یوں رقمطراز ہیں ؎

> ''اقبال کا یہ احسان ضرور ہے کہ انہوں نے ہمیں قوم پرستی اور جمہوریت کے متعلق مقبول خیالات پر نظر ثانی کرنے کی طرف مائل کیا۔'' [2]

واضح ہو کہ اقبال نے اپنی خداداد صلاحیت کی بدولت اردو شاعری کو فکری بلندی اور عملی رفعت عطا کی وہ وطن کے سچے عاشق و پرستار اور ہمدرد تھے۔ فرقہ پرستی کی لعنت سے عطر قوم پرستی اور ملک پرستی کے قائل تھے۔ ان کے کلام کا بیشتر حصہ اسی فکر کا ضامن ہے۔ بانگِ درا میں جا بجا ان کی اخوت پرستی اور ملک دوستی دکھائی دیتی ہے۔ دوسرے مذاہب کے پیشواؤں کا نام جس احترام سے لیتے ہیں وہ خود میں غیر معمولی (rare) ہے۔ مثلاً ''رام جی'' کے لئے لکھتے ہیں ؎

اس دیس میں ہوئے ہیں ہزاروں ملک سرشت
مشہور جن کے دم سے ہے دنیا میں نام ہند
ہے رام کے وجود پہ ہندوستاں کو ناز
اہل نظر سمجھتے ہیں اس کو امام ہند

Zia Tasneem, Research Scholor, Dr. Mohammad Arshad, Supervisor, Asstt. Prof. of Urdu Deptt. H.M.P.G. College, CSJM University, Kanpur email : ziatasneem1990@gmail.com

سِکھ مذہب کے پیشوا ''گرونانک'' کو مردِ کامل کی تشبیہ دیتے ہوئے لکھتے ہیں ؎

پھر اٹھی آخر صدا توحید کی پنجاب سے
ہند کو اک مردِ کامل نے جگایا خواب سے

قومی اور وطنی جذبہ سے معمور بانگِ درا کی نظم ''ہندوستانی بچوں کا قومی گیت'' خاص طور سے قابلِ ذکر ہے ؎

چشتیؒ نے جس زمیں پہ پیغامِ حق سنایا نانک نے جس چمن میں وحدت کا گیت گایا
وحدت کی لے سنی تھی دنیا نے جس مکاں سے میرِ عرب کو آئی ٹھنڈی ہوا جہاں سے
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

اس نظم میں شاعرِ مشرق اور حسان الہند علامہ اقبال نے چشتیؒ، نانک اور سری کرشن کو ایک ہی مالا میں پُرو کر اپنی قومی یکجہتی کا ثبوت دیا ہے۔ میرِ عرب سے مراد ''حضرت محمدؐ کی وہ حدیث ہے جس میں آپ نے ایک بار ارشاد فرمایا تھا مجھے ہند سے توحید کی بو آتی ہے۔'' [۳]

بانگِ درا میں شامل ''وطنیت'' عنوان کی نظم میں کہتے ہیں ؎

مسلم نے بھی تعمیر کیا اپنا حرم اور
تہذیب کے آذر نے ترشوائے صنم اور

ان تازہ خداؤں میں بڑا سب سے وطن ہے
جو پیرہن اس کا ہے مذہب کا کفن ہے

ان اشعار سے صاف ظاہر ہے کہ شاعر ایسے مذہب پر طنز کر رہا ہے جو حقیقی نہیں بلکہ انسانوں کا اپنا بنایا ہوا ہے۔ اصل مذہب میں ترمیم کر کے مذہب کی خوفناک تصویر دکھا کر قوم کو گمراہ کرنے والے لوگوں کو ''تازہ خدا'' کہہ کر طنز کیا ہے وہ ایسے مذہب کو مسمار کرنے کے خواہاں ہیں اور وطن کو خدا کہہ کر وطن پرستی کا درس دیا ہے۔ وہ اندھی قوم پرستی سے خفا تھے۔ قومی شعور اور حُبِّ وطن کا جذبہ انھیں اپنے حلقہ میں لئے رہتا تھا۔

بانگِ درا میں شامل معرکۃ الآرا نظم بھی ہے۔ جس کا عنوان ''نیا شوالہ'' ہے جو بے شک ان کی بہترین اردو نظموں میں شمار کی جاسکتی ہے۔ اس میں قومی یکجہتی انسان دوستی اور باہمی اتحاد کا جو پُر جوش ترانہ ہے اس نے منفرد شناخت بنالی ہے۔ وہ ہندوستانیوں کو قومی برادر اور ہندوستان کو گہوارۂ اقوام تسلیم کرتے ہیں۔ نظم ''نیا شوالہ'' یعنی ایک نئی عبادت گاہ بنانے کا مشورہ دیتے ہیں۔ وہ ایسا صنم کدہ بنانے کے خواہاں ہیں جہاں صرف اتحاد، محبت، خلوص، وفا اور انسانیت کا درس دیا جائے جہاں سے ایسے مترنم گیت گائے جائیں جو شہد سے زیادہ میٹھے اور پھول سے زیادہ خوشبودار ہوں جس کے نغموں سے لوگ محظوظ ہوں اور قلبی سکون محسوس کریں۔ وہ اتحاد سے لبریز ہو کر کہتے ہیں ؎

آ! غیریت کے پردے اک بار پھر اٹھا دیں
بچھڑوں کو پھر ملا دیں نقشِ دوئی مٹا دیں

وطن سے محبت کا نمونہ دیکھئے ؎

پتھر کی مورتوں میں سمجھا ہے تو خدا ہے
خاکِ وطن کا مجھ کو ہر ذرّہ دیوتا ہے

شکتی بھی شانتی بھی بھگتوں کے گیت میں ہے
دھرتی کے باسیوں کی مکتی پریت میں ہے

اقبال پر متعدد الزام لگائے گئے لیکن وہ گھبرائے نہیں بلکہ کہہ اٹھے۔

اپنے بھی خفا مجھ سے بیگانے بھی ناخوش
میں زہرِ ہلاہل کو کبھی کہہ نہ سکا قند

اقبال نے وہی کہا جو انھیں حق لگا اور جس میں قوم کی بھلائی دیکھی۔ انھیں اتحاد اور انسانیت میں ہی قوم کی ترقی نظر آتی ہے۔ انتقال سے چند ماہ قبل ایک جنوری 1938ء کو آل انڈیا ریڈیو سے ایک نشریہ میں speech دیتے ہوئے کہا تھا ؎

''صرف ایک اتحاد ہی قابل اعتبار ہے اور یہ اتحاد انسانی برادری کا اتحاد ہے، یہ اتحاد نسل، قومیت، رنگ یا زبان سے بلند تر ہے جب تک یہ نام نہاد جمہوریت، یہ لعنتی قوم پرستی اور یہ نیچ سامراجیت ختم نہ ہوگی، جب تک لوگ اپنے عمل سے یہ ثابت نہ کر دیں گے کہ ان کے نزدیک ساری دنیا خدا کا خاندان ہے۔ جب تک رنگ، نسل اور جغرافیائی قوم پرستی بالکل ختم نہ ہوگی وہ ایک آسودہ اور خوشحال زندگی نہ گذار سکیں گے اور آزادی، مساوات اور اخوت کے خوبصورت آئیڈیل کبھی وجود میں نہ آسکیں گے۔ ؎

اگر ہم اقبال کی اس تقریر کی معنویت دورِ حاضر کے تناظر میں دیکھیں تو ایک ایک لفظ بامعنی نظر آتا ہے۔ لہٰذا ضرورت ہے کہ اقبال کی تخلیقات کو سمجھنے کی اور ان کے پیغام کو عام کرنے کی جس سے نفرت کے بادل چھٹ سکیں اور یگانگت و یکجہتی کی فضا ہموار ہو سکے۔

اقبال کی نظمیں ان کی حریت پسندی کا ضامن ہیں جن سے وطن پرستی کی شمع روشن دکھائی دیتی ہے۔ ان کی عظمت کا اعتراف کرتے ہوئے مہاتما گاندھی نے ''ترانۂ ہندی'' کے بارے میں لکھا تھا ؎

''کون سا ایسا ہندوستانی دل ہے جو اقبال کا ہندوستاں ہمارا۔۔۔ سن کر دھڑکنے نہیں لگتا ہے اور اگر کوئی ایسا دل ہے تو میں اسے اس کی بدنصیبی سمجھوں گا۔'' ؎

گاندھی ہی نہیں بلکہ ہر حساس ہندوستانی دل ترانۂ ہندی سن کر دھڑکنے لگتا ہے۔ ''سبھاش چندر بوس'' نے بھی اقبال کا ترانۂ ہندی سن کر انھیں ''سربلند شخصیت'' کہا تھا۔

اقبال کی شاعری میں موجود معنویت اس کی نغمگی اور ان کی فکری بلندی نے انھیں 80 برس گذر جانے کے بعد بھی زندہ رکھا ہے ان کے کلام کی معنویت بیسویں صدی میں مقبول عام تھی۔ مجھے لگتا ہے کہ دورِ حاضر میں اس کی از حد ضرورت ہے۔ آج ہم ہندوستانی فرقہ پرستی کی غلاظت میں ڈوبے ہوئے ہیں انسانی قدریں اتنی پامال ہوگئیں ہیں کہ انسان پر حیوانات کو ترجیح دی جارہی ہے انسان دوستی تو محض کاغذوں میں سمٹتی نظر آرہی ہے دور حاضر میں اقبال کو پڑھنے اور پڑھانے اور سمجھنے کی ضرورت ہے۔ انھیں قوم کی بھلائی اتحاد میں نظر آتی ہے انسانیت کو وہ مذہب کہتے ہیں۔

حوالے:۔

۱۔ بحوالہ ''دانشور اقبال'' از آل احمد سرور صفحہ 124۔
۲۔ بحوالہ ''دانشور اقبال'' از آل احمد سرور صفحہ 125۔
۳۔ بحوالہ بانگِ درا مع شرح'' از یوسف سلیم چشتی۔
۴۔ بحوالہ ''دانشور اقبال'' از آل احمد سرور صفحہ 125۔
۵۔ بحوالہ ''محبِّ وطن اقبال'' از سید مظفر حسین برنی صفحہ 25۔

ضیا تسنیم۔ ریسرچ اسکالر
ڈاکٹر محمد ارشد۔ اسسٹنٹ پروفیسر
حلیم مسلم پی۔ جی۔ کالج (سی۔ ایس۔ جے۔ ایم۔ یونیورسٹی) کانپور۔

☆

खेद प्रकाशन

पिछले अंक, कहार 4(1-2), 2017 में प्रकाशित लेख "तरजुमा निगारी एक तबसिरा" में उर्दू आलेख के लिए विषय सूची वाले पृष्ठ पर आलेख का शीर्षक एवं लेखक का नाम भूलवश कौमी एकजेहती और इकबाल की शायरी और लेखक का नाम श्री सैयद महमूद की जगह श्री सरफराज अहमद छप गया है। हमें इस मुद्रण की गलती के लिए खेद है। इस लेख के लेखक श्री सैय्यद महमूद अहमद हैं न कि श्री सरफराज अहमद।

ग्रामीण शोध केन्द्रों के लिए किसान गोष्ठियों का सिलसिला जारी है

'समावेशी विकास की ग्रामीण पहल' अभियान के तहत हाल में हमने तीन गोष्ठियाँ की। पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के उदितनारायण स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, पडरौना में 27 मई, 2017 की किसान गोष्ठी में कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक एवं समाजकर्मी विशेषज्ञों ने भागीदारी की जिसमे प्रमुख हैं, गोरखपुर के डॉ. राम चेत चौधरी, डॉ. बी. एन. सिंह, श्री राम प्रसाद मणि त्रिपाठी, प्राचार्य जी डॉ. सिंह, डॉ. सी. बी. सिंह सेंगर, समकोला से, पडरौना से श्री रामभुवन सिंह, दुदही से किसान हरगोविन्द मिश्र, लखनऊ से प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह एवं रंजीत शर्मा आदि। सभी विशेषज्ञ एवं समाजकर्मी अपने खर्च से किसानों से संपर्क करने आये (चित्र-1-2), परन्तु मौसम खराब होने की वजह से तथा किसानों के अन्दर उत्साह की कमी से उनकी भागीदारी अपेक्षित नहीं थी।

दूसरी गोष्ठी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गाँव बसई, पोस्ट - ईस्माइलपुर ब्लाक - खेर तहसील - गभाना, जिला - अलीगढ़ (उ. प्र.) में श्री आदेश सिंह, बी. टेक, के नेतृत्व में हुई। इस गोष्ठी में लखनऊ से आये अभियान के संयोजक प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह के साथ दिल्ली से आये मित्रों तथा गाँव के श्री जसपाल सिंह, श्री सत्यपाल सिंह, श्री रणधीर सिंह, श्री जगदीश शर्मा, आशीष, शेखर, अवधेश आदि युवाओं ने भागीदारी की (चित्र-3)।

तीसरी गोष्ठी पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के ग्राम पृथ्वीपुर में 20 अगस्त 2017 को संपन्न हुई (चित्र 4), जिसमें तीरथ कुशवाहा, परमा कुशवाहा, राम जनक कुशवाहा एवं अन्य करीब 20 किसानों ने भागीदारी की।

इन गोष्ठियों से हमें लग रहा है कि किसानों के भीतर घोर निराशा है, और उन्हें बड़े बदलाव की उम्मीद नहीं है, फिर भी वे हमारे कहने से कुछ नई शुरुआत करने का मन बना रहे हैं। हम उन्हें सहकारी समूह बनाकर कृषि एवं ग्राम विकास की व्यवहारिक शिक्षा और साझे प्रयोगों के लिए तैयार कर रहे हैं। सरकारों को लेकर उनमें मिश्रित प्रतिक्रियाएं हैं, जहाँ सरकारी कार्यक्रमों का लाभ मिल रहा है, वहां और उन बिन्दुओं पर सरकार के प्रति उनका रुख सकारात्मक है, परन्तु मोटे तौर पर वे सरकारों को किसान विरोधी मानते हैं। उनके बीच ज्ञान और संगठन का अभाव है। आपसी मतभेद तथा ईष्या भी बहुत है। गाँव में एवं किसानों के बीच शैक्षणिक, शोध, संस्कृति एवं तकनीकी के स्तर पर काफी काम होना बाकी है।

(चित्र 1)

(चित्र 2)

(चित्र 3)

(चित्र 4)

!! सोसाइटी फार इन्वारमेन्ट एण्ड पब्लिक हेल्थ (सेफ) की एक पहल !!

जन–जन तक कहार

Society for Environment and Public Health (SEPH)

Email: sephindia@gmail.com

"स्वच्छ पर्यावरण–स्वस्थ समाज"

Agenda of the SEPH

1. **Environment conservation, plantation and awareness for public health among rural and marginal people.**
2. **Awareness for adaptation of eco-friendly habits for environment conservation.**
3. **Selective plantation of pollution tolerant plants in urban area to create green belt with pollution mitigation.**
4. **Protection of natural resources i.e. rivers, lakes, mountains, forests.**
5. **Survey/monitoring/mapping and collection, compilation and publication of data related to environment and human health issues.**